कवि भीम विरचित

सदयवत्स वीर प्रबन्ध

अनेक हस्तलिखित प्रतियो की सहाय स स शोधित अनात कविकृत

"सावलिगा पाणिग्रहण चउपई"

और

कवि कीर्तिवधन रचित 'सदयवत्स सावलिगा चउपई'

के परिशिष्ट और

प्रस्तावना एव टिप्पणिया सहित



सम्पादक–

डॉ० मजुलाल मजमुदार

एम ए, पी एच डी एल एल बी

'माधवानल कामक दला प्रब ध' के सम्पादक

एव

'गुजराती साहित्य के स्वरूप-पद्य विभाग

मध्यकालीन और अर्वाचीन' के लेखक

कवि भीम विरचित

सदयवत्स वीर प्रबन्ध

अनेक हस्तलिखित प्रतियों की सहाय से संशोधित अज्ञात कविकृत
"सावलिंगा पाणिग्रहण चउपई"
और
कवि कीर्तिवर्धन रचित 'सदयवत्स सावलिंगा चउपई'
के परिशिष्ट और
प्रस्तावना एवं टिप्पणियाँ सहित



सम्पादक–
डा० मंजुलाल मजमुदार
एम ए., पी-एच डी एल एल बी
'माधवानल कामकंदला प्रबंध' के सम्पादक
एवं
'गुजराती साहित्य के स्वरूप पद्य विभाग
मध्यकालीन और अर्वाचीन के लेखक

कवि भीम विरचित

सदयवत्स वीर प्रबन्ध

अनेक हस्तलिखित प्रतियो की सहाय से स शोधित अनात कविकृत
"सार्वलिगा पाणिग्रहण चउपई'
और
कवि कीर्तिवर्धन रचित 'सदयवत्स सार्वलिगा चउपई'
के परिशिष्ट और
प्रस्तावना एव टिप्पणिया सहित



सम्पादक–
डा० मजुलाल मजमुदार
एम ए., पी-एच डी एल एल बी
'माधवानल कामक दला प्रबन्ध' के सम्पादक
एव
'गुजराती साहित्य के स्वरूप-पद्य विभाग
मध्यकालीन और अर्वाचीन' के लेखक

प्रकाशक—
सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

प्रथम संस्करण १००० प्रतियाँ
मूल्य—४ रु०

मुद्रक—
महावीर मुद्रणालय,
अलीगंज (एटा)

डा० कन्हैयालाल मुन्शी 'Gujarat & its Literature (1935) Page 162 —

"'Sadayavatsa kathā' has charmed Gujarat for about five hundred years Sadayavatsa and Sāvalingā, husband and wife, are banished from their native city and are separated Ultimately they meet after undergoing fearful experiences in all of which the fantastic vies with the miraculous The story is taken probably from some unknown Prākrit source Its first available Gujarati version is copied in Samvat 1488 "

संकलना

अर्पण

कायस्थ कवि गणपतिकृत 'माधवानल कामकदला प्रबंध'
(१६१४), और भीमकृत 'सदयवत्स वीरप्रबध' (१६१५)
के प्रथम निवेदक।

अनेक अप्रकट सस्कृत प्राकृत अपभ्रश और
प्राचीन गुजराती ग्रंथों के आद्य सशोधक।
(पट्टण ग्रथ भण्डारों को सहाय से आधार लेकर)
'गायकवाड प्राच्य ग्रथमाला' के आद्य सपादक

राजरत्न
प० चीमनलाल दलाल की स्मृति मे
सविनय
अर्पण



मजुलाल मजमुदार

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारंभ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१ विशाल राजस्थानी हिन्दी शब्दकोश

इस संबंध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लंबे समय से प्रारंभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं। यह एक अत्यन्त विशाल योजना है, जिसकी संतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारंभ करना संभव हो सकेगा।

२ विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरों का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर संपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबंध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३ आधुनिक राजस्थानी साहित्य रचनाओं का प्रकाशन

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१ कळायण, ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम संस्कर्ता

२ आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।

३ बरस गांठ मौलिक कहानी संग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितायें, कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेषांक है। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओं के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोध पत्रिका है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५ राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य निधि को प्राचीन, महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६ पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७ राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८ राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९ मारवाड़ क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकड़ों लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियां और लगभग ७०० लोक कथाएँ संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११ जगदीश उद्योत, मुहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसंधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य साधना के संबंध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है।

१३ जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४ बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५ इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य सेवियों के निर्वाण दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेकों महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि का भी समय समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६ बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ तिबरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

वद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और प० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हुडलोद, थे।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल म, संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरन्तर सेवा करती रही है। आर्थिक सकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह सभव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखडा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्ताओं ने 'राजस्थान भारती' का सम्पादन एव प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा सन्दर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनो के अभाव मे भी संस्था के कार्यकर्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश म आने पर संस्था के गौरव को निश्चय ही बढा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य भडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश म आया है। प्राचीन भारतीय वाड मय के अलभ्य एव अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एव उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सभव नहीं हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एव सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अन्तर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद म राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है जिससे इस वर्ष निम्नोक्त २४ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१ राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२ राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३ अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४ हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५ पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६ दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७ डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८ पंवार वंश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९ पृथ्वीराज राठौड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१० हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११ पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२ महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३ सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४ जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५ सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६ जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७ विनयचन्द कृतिकुसुमांजलि—	,, ,, ,,
१८ कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९ राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२० वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१ राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२ राजस्थान व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३ राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४ चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ भडुली—	श्री अगरचन्द नाहटा म विनय सागर
२६ जिनहृष ग्रथावली	श्री अगरच द नाहटा
२७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रथा का विवरण	,, ,,
२८ दम्पति विनोद	,, ,,
२६ हीयाली राजस्थान का बुद्धिवधक साहित्य	,, ,,
३० समयसु दर रासत्रय	श्री भवरलाल नाहटा
३१ दुरसा आढा ग्रथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जसलमेर ऐतिहासिक साधन सग्रह (सपा० डा० दशरथ शर्मा), ईसरदास ग्रथावली (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासा (प्रो० गोवद्ध न शर्मा), राजस्थानी जन साहित्य (लि० श्री अगरच द नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथा का सपादन हो चुका है पर तु अथाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वष नही हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि काय की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य म रखते हुए अगले वष इससे भी अधिक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिसमे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूण ग्रथा का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्राट इन-एड की रकम मजूर की ।

राजस्थान के मुख्य म त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एव पुनरुद्धार के लिये पूण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अत हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर स पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवद्ध न किया, जिससे हम इस वृहद् काय को सम्पन्न करन मे समथ हो सके । सस्था उनकी सदव ऋणी रहेगी ।

इतने थोड़े समय में इतने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यंत आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान भंडार बीकानेर, मोतीचन्द खजाञ्ची ग्रन्थालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री प० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थों का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वापि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मां भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान मंत्री
सादूल राजस्थानी इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
सं० २०१७
दिसम्बर ३,१९६०

उपोद्घात

'सदयवत्स वीरप्रबन्ध' का पहला परिचय प्रस्तुत प्रबध के अस्तित्व का पहला उल्लेख करने वाले श्री चीमनलाल दलाल महोदय थे। ई स १९१५ (वि स १९७१) मे गुजरातके प्रख्यात शहर सूरत मे आयोजित की गई (५) पाचवी गुजराती साहित्य परिषद के समक्ष उन्होने "पट्टण के ग्रथ भांडार और उसमे बहुतायत रहा हुआ अपभ्रश एव प्राचीन गुजराती साहित्य" ("पाटणना भडारो अने खास करीने तेमा रहेलु अपभ्रश तथा प्राचीन गुजराती साहित्य') नाम का एक बढिया निबध पढकर सुनाया था। उसम एव अ जिन कवि 'भीम' की रचना (लिपि वि स १४८८) सदयवत्स कहानी का उन्होने ही सवप्रथम निर्देश किया था।

इसके पहले श्री काँटावाला से सपादित 'साहित्य' मासिक पत्रिका के अगस्त ई स १९१४ (वि स १९७०) के अ क्य आम्रपद्र (आमोद) जिला भरुच के कायस्थ कवि गणपति की रचना-कृति "माधवानल कामकदला प्रबध" (रचनाकाल वि स १५७४) कि,जो २५०० दोहा छदका काव्य-ग्रथ था उसके प्रति सबसे पहले श्री दलाल महोदय ने ही पाठको एव विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया था।

श्री चीमनलाल दलाल महोदय ने ही पट्टण के ग्रथागार मे से अपभ्रश एव प्राचीन गुजराती साहित्य के ग्रथो का परिचय एक सूचिके रूपमें पहले एकत्र किया था। क्योकि उनके पहले पट्टण के ग्रथागार के साहित्यक ग्रथाकी सूचि (नोध) या सकलित यादी तैयार करने के लिये डा० ब्युलर, डा० पीटरसन, एव प्रा० मणिलाल न द्विवेदी आदि महानुभावोंने प्रयत्न किया था। उनको यहाँके ग्रथागारके सरक्षको-का सहकार प्राप्त नही हुआ था। किंतु श्री दलाल महोदय, स्वय जिन होने के नाते, उन्होने उन ग्रथागार के सरक्षकों का सहकार एव सदभाव प्राप्त कर लिया था। और अयत परिश्रम करके यहाँ के (पट्टणके ग्रथा-

गार के) साहित्यक धन द्वारा उस साहित्य का साहित्य जगत म परिचय दिया। गुदडी मे लाल की तरह साहित्य प्रकाश म लाया गया। साहित्य जगत म नई रोशनी आई। फलस्वरूप बडोदा रियासत की श्री गायकवाड प्राच्य ग्रथमाला (G O Series) के पहले सपादक पद बडोदा पर उनकी नियुक्ति की गई थी।

सम्पादनका श्रेय यह एक आनन्दजनक एव आश्चर्यकारक घटना घटी है ऐसा कहने म सकोच नहीं होता है। क्योकि श्री दलाल महोदय ने जिस अ-जन काव्यग्रथो की सब प्रथम उद्घोषणा की थी वही दोनो ग्रथो के सपादन करने का सद्भाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। कौन जानता था कि यह काय मुझसे होगा ? किंतु हो गया है। और अब भी हो रहा है। इसम ईश्वर का कुछ सकेत होगा ऐसा मैं समझता हू।

ई स १९४२ (वि स १९९७) म माधवानल कामकदला प्रबध' मूल-मात्र, एव परिशिष्ट और उपोद्घात सहित प्रथम भाग श्री गायकवाड प्राच्य ग्रथमाला म ९३ पुष्प के रूप म प्रकाशित हुआ है। विस्तृत प्रस्तावना, टिप्पणियाँ, तथा शब्दकोशका दूसरा भाग तयार होने जा रहा है।

सपादन का इतिहास प्रस्तुत 'सदयवत्स वीर प्रबध' नामक ग्रथ का सपादन काय करने का निणय ई स १९३९ (वि स० १९९५) म किया गया था। उसके बाद अय हस्तलिखित पोथियाँ एव उपयोगी साहित्य की खोज मे कुछ वष निकल गये। प्रस्तुत प्रबध का प्रकाशन काय अहमदाबाद की गुजरात विद्यासभा की ओर से होने वाला था। उससे मैंने वहा एक प्रेस कापी प्रकाशन के लिये भेज दी। वहा के 'नवजीवन' छापखाने से ई स १९५० (वि स २००६) के आसपास के समय मे देवनागरी लिपि मे प्रकाशित हुई कुछ गलतिया वाली प्रूफ-प्रतियाँ प्राप्त हुई। मैंने इन गलतियो की दुरुस्ती करने की प्राथना की। किंतु वहाँ के कायवाहको को गलतियाँ दुरुस्त करने के लिये सुविधा नही होने के नाते, कुछ कठिनाई देखकर उस काय को आगे

बनाने मे अनिच्छा व्यक्त की। छापखानेवालों ने यह सिरपञ्ची वाला साहित्य विद्यासभा की ओर वापस भेज दिया। और विद्यासभा ने मुझे वापस लौटा दिया। और इस तरह यह प्रकाशनका काय यथायक रुक गया।

श्री नाहटाजीकी प्रेरणा श्री अगरचन्द नाहटाजी महोदयने उनके 'राजस्थान भारती नामके मासिक पत्रिका के अक म सन् १६५८ म प्रकाशित एक विस्तृत लेख म 'उस प्रबन्ध का प्रकाशन होने वाला है,' एसा नोट के रूप म उल्लेख किया था। बाद म (वि स २०१६) ई स १९६० के सितम्बर मास मे श्री नाहटाजी महोदयने, प्रस्तुत प्रबन्धका श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट बीकानेर ग्रथमालाम प्रकट करनेकी, सस्था के सेक्रेटरी (मत्री) के नाते मुझे सूचन किया, प्राथना की। मैंने धन्यवादके साथ उनकी प्राथनाको सहष स्वीकार किया। इस तरह प्रस्तुत प्रबधके प्रकाशन-काय की कहानी या पूव इतिहास अब पूण होता है।

आभार दर्शन इस उपयोगी साहित्य रचनाकृति को प्रकाशमे लाने की सुविधा एव सहायता देन के लिए, तथा तत्सबधी अनेक हस्त लिखित प्रतिया एव अन्य सामग्री भेजकर रचनाकृतिके सपादन, स शोधन एव प्रकाशन आदि कार्यों मे जो सहायता प्रदान की है इसके लिये मैं श्री नाहटाजी महोदय को धन्यवाद के साथ उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हू।

उस सपादन की प्रस्तावना लिखने मे उपरिनिर्दिष्ट श्री नाहटा जी महोदय का 'राजस्थान भारती' म प्रकाशित 'सदयवत्स सावलिगा की प्रेमकथा" नामके अत्यन्त अभ्यासपूण एव विद्वत्तापूर्ण लेख का काफी उपयोग भी किया है। उसके लिये भी मुझे उनका ऋण स्वीकार करते हुये अत्यन्त हष होता है।

प्रस्तुत ग्रथमे मैंने सशोधित की हुई एव अन्य सब गुजराती सामग्री का हिन्दी में अनुवाद करने वाले मेरे स्नेही एव साहित्यक-शिष्य श्री चन्द्रकान्त बापालाल पटेल (साहित्यरत्न प्रयाग) जी को मैं धन्यवाद देता हू।

इस प्रबन्ध के सम्पादन मे मेरे मित्र पंडित श्री लालचन्द्र भगवान दास गांधीजी ने पाठ निर्णय और टिप्पणी म हृदयपूर्वक सहायता की है इसलिए मैं अत्यन्त उपकृत हू।

फोटोग्राफ 'प्रबंध और 'चउपाई' की प्राचीन प्रतियां के आदि एव अन्तभागके फोटोग्राफ (चित्र कापी) भी दिये हैं। जो प्रतियां बडौदा प्राच्यविद्यामंदिर के नियामक श्री डा० भोगीलाल जी साडेसरा के सौजन्य से प्राप्त हुई हैं। जिससे लिपियां के प्रकारान्तरका परिचय भी होगा। और सुविधा रहेगी।

टिप्पणीमें कई अपभ्रंश शब्दोंकी व्युत्पत्ति दी गई है जिससे इनका यथार्थ बोध होने मे सुविधा रहेगी।

प्रबन्ध मे से एक दिलचस्प प्रसङ्ग का चित्र की प्रतिकृति एक सचित्र प्रति मे से दी गई है।

"चतन्यधाम" ३४ प्रतापगंज मंजुलाल मजमुदार
बडौदा २
(गुजरात राज्य)

प्रस्तावना

प्रबन्ध का स्वरूप वीररस प्रधान एवं ओजपूर्ण शलीवाला काव्य 'प्रबंध काव्य' कहा जाता है। गद्य या पद्य दोनों में की हुई साधक रचना का नाम है 'प्रबंध (मणिलाल बकोरभाई व्यास का संपादित "विमल प्रबंध", प्रस्तावना पृ० ६२) ई. स. १००० से १५०० तक रचे गये ऐतिहासिक काव्योंके नाम, खास करके 'प्रबंध' रखे गये हैं। जसकि कुमारपाल प्रबंध, भोजप्रबंध, चतुर्विंशति प्रबंध, प्रबंध चितामणि, प्रबंध श्रेणि, जैसे संस्कृत गद्यपद्यात्मक ग्रंथो में एक या अनेक वीरव्यक्तियो के चरित्रों का बयान किया गया है। इन प्रबंधो में संबंधित व्यक्तियो मे विमल मंत्री जसे युद्धवीर तथा धर्मवीर भी हैं, एवं जगडू जैसे दानवीर, और विक्रम जसे युद्धवीर, और वत्सराज या पृथ्वीराज जसे शृंगारवीर भी उल्लेखनीय हैं। ये प्रबंध खास करके ऐतिहासिक व्यक्तियोंके चरित्र निरूपण के ही काव्य हैं।

वीररस का आलंबन- रसशास्त्रका एक सिद्धांत है कि उत्तम प्रकृति के नायकों का ही वीररसमें बयान करना चाहिये। क्योंकि वीररस उत्तम पुरुषों मे ही होता है। वीररस का स्थायीभाव उत्साह है। उत्साह का राजस गुण किसी भी कार्य मे वीर को प्रवृत्त करता है। क्योंकि उस कार्य मे उसको विजय प्राप्त करना है। वीर का उत्साह यू पांच प्रकार का हो सकता है। जैसे कि युद्ध करने का उत्साह धर्म करने का उत्साह, दान करने का उत्साह, दया करने का उत्साह, तथा प्रेम करने का उत्साह।

महाभारत के पात्रों में अर्जुन युद्धवीर, हैं युधिष्ठिर महाराज धर्मवीर हैं। कर्ण दानवीर हैं। शिविराज दयावीर हैं। भगवान कृष्णचंद्र शृंगारवीर के रूप मे विख्यात हैं ही। यदि कोई कहेंगे कि क्षमावीर, सत्यवीर, लज्जावीर, नीतिवीर, धृतिवीर जसे भेद क्यों न हो सके? वीरके

अनेक भेद और केवल पाँच ही भेद क्यों कहे गये ? इसका समाधान इस प्रकार हो सकता है कि क्षमाता अन्य भाव दया म हो जाता है । तथा सत्य आदि का स निहित धम म ।

अंग्रेजी वीरपूजा की भावना—कार्लाइल के 'वीर और वीरपूजा' (Hero & Hero worship) नामक पुस्तक म जीवन क विविध क्षेत्रो म वीरता दिखाने वाले वीरों का पूजन करना उचित है ऐसा प्रतिपादित किया गया है। इसम वीरता को व्यापक अथ म सूचित किया गया है।

कवि, धमगुरु, वैद, व्यापारी, सैनिक प्रत्येक के क्षत्र म हरेक को वीरता दिखलानेका पूण अवकाश रहता है। और वीरता दिखलानेवाले सच्चे वीर कहलाने के योग्य हैं। उपयु क्त दिखाये गये पाँच प्रकार के भेद म इसका भी अतभाव हो जाता है।

वीररस के अन्य पद्यस्वरूप- वीरोंके चरित्र 'प्रबन्ध रूपमे 'पवाडा' रूप मे श्लोक (सलोका) रूप में, या रासा के रूपमें वीररसके लिये उचित ऐसे छद में रचे जाते हैं। और रचे भी गये हैं। जिसके दृष्टांत ऊपर दिये गये है। सामान्य मनुष्यो के चरित्र कभी काव्य द्वारा बिरदाने के योग्य होते नही हैं या ऐसे साधारण मनुष्यो के चरित्र काव्य में वर्णित किये नही जाते हैं, या योग्य भी नही होते। इसलिये गुजराती एव राजस्थानी पद्य-साहित्य में खास तौर पर चरित्र, प्रबन्ध, पवाडो, रासो तथा छन्द, एव शलोका, ये सब शब्द करीब पर्याय रूप में प्रयुक्त किये गये शब्द न हो ऐसा समझने का मन होता है।*

---

* कान्हडदे प्रबध की कुछ प्रतियो में उसका शीर्षक कान्हड चरित्र, कान्हडदेनी चुपइ, कान्हड देनउ पवाडउ, और श्री कान्हडदे रास ऐसा भी उल्लेख मिलता है देखिये प्रा० कान्तिलाल व्यास, श्री सिंघी ग्रथमाला अंग्रेजी प्रस्तावना, पृ० २० की पादनोट।

वीरगाथा काल वीरगाथा काल के राजाश्रित कवियों एव भाट चारणोने अपने आश्रयदाता राजाओ के शौय पराक्रम एव प्रभाव आदि के वणन अपनी ओजपूण सनक्ष्नार वानी में काव्यो में किये हैं । ये लोग कभी कभी रणक्षेत्र में जाते थे तलवार भी चलाते थे । और अपनी वीर वानी स स न्य में शौयँ का स चार करते थ । खुद भी युद्ध में प्राणार्पण कर देते थे । ऐसी रचनाओं की पीढ़ीगत रक्षा भी की जाती थी एव वृद्धि भी ।

हमें वीरगाथायें दो रूप में मिलतीं हैं । (१) मुक्तक रूप में, और (२) प्रबध में । जिस तरह युरुप में वीरगाथाओ के विषय (Age of Chivalry) युद्ध एव प्रेम थे वैसे भारत के साहित्य में भी हुआ है । किसी राज्य की स्वरूपवती राजकन्या का समाचार सुनकर अपने लश्कर के साथ उस राज्य पर धावा करके उसकी राजकन्या छीन ली जाती या अपहृत की जाती थी । इसमें वीरो का वीरत्व,गौरव, शौय,अभिमान, बल, प्रभाव, आदि माना जाता था । इस तरह प्रबन्ध काव्यो में वीररस के साथ शृ गार रस का भी मिश्रण होता था, हुवा है ।

वीररस के मुक्तक वीररस के प्राचीन मुक्तकों का स ग्रह मुनि श्री हेमचन्द्राचार्य के 'प्राकृत व्याकरण' ग्रथ में दृष्टान्त के रुप में प्राप्त होता है । इसके सिवा भी प्रबध काव्य एव वीरगीतो के स्वरूप में रचना हुई है ।

रासा साहित्य गुजराती के रासा युग के समसामायिक काल को हिंदी साहित्य में "वीरगाथा काल नाम दिया गया है । इस काल में 'खुमान रासो' 'विशालदेव रासो' 'पृथ्वीराज रासो 'हम्मीर रासो' 'जगनिक का आल्हाखंड' आदि रचना हुई है ।

गुजराती म वि स १३०१ के आसपास श्री अबदेव सूरि रचित "समरारासु में पट्टण के समरसिंह नामक एक ओसवाल वणिक बनिया ने स घ (यात्रा) निकाल के शत्रु जय पहाड पर श्री ऋषभदेव के मन्दिर का जीर्णोद्धार किया । और घर लौट आया उसकी प्रावस या तीथ-

माना जाता है। इसमें समर्पित स्वदेश वीर एवं धर्मवीर भी दिखाई देता है।

श्री जयसूरि ने वि स १३०२ में संस्कृत में रचित ग्रंथ 'आदिनाथ जिर्णोद्धार प्रबन्ध' में भी इसका वर्णन है। श्री जयचन्द्रसूरि इस यात्रा में सम्मिलित थे। ऐसा उसमें उल्लेख है।

गुजराती प्रबन्ध साहित्य विद्याकांत आनन्दोभ पद्मनाभने वि स १५१२ में 'कान्हडदे प्रबंध' की रचना की है। यह विद्या गुर्जरीभाषा तथा मुद्रित हो गई है। वि स १५६८ में श्री लावण्यसमय विमल प्रबन्ध की रचना की है वह भी प्रसिद्ध है। कायस्थ कवि गणपति ने 'माधवानल कामकन्दला प्रबन्ध' की रचना वि स १५७४ में आमोद, आमोद जिला भड़ोंच में की है।

शील से,शापित 'माधव' नायिका का शृंगार इसका मुख्य विषय है। इसमें माधव चारित्र्य पुष्ट शृंगारवीर है। कामकन्दला अभिसार गणिका पुत्री है। और वह शृंगारनिष्ठा की प्राप्त बन सकेगा का स्मरण कराती है। इसीलिये उनका मिलन साहसवीर तथा परदु:खभंजक ऐसा राजन विक्रम द्वारा होता है। इस प्रबन्ध में विप्रलम्भ तथा रतिक्रीड़ा या दोनों प्रकार से शृंगार रसप्रद वाणी में वर्णित किया गया है। फिर भी इसमें कविने शीलता, चारित्र्यता,माहात्म्य अधिक भावपूर्वक स्थापित किया है।

वैष्णव कवि श्री गोपालदास न श्री वल्लभाख्यान श्री वल्लभाचार्य (जीवनकाल वि स १५२९ १५८७) तथा श्री विट्ठलनाथजी (जीवनकाल वि स १५७२ से १६४२ में) धर्मवीर ऐसे गोस्वामी श्री विट्ठलनाथजी की प्रशस्ति की, प्रबन्ध रूप में नौ गेय पद्यों में रचना की है।

संस्कृत गद्य कथा श्री रत्नशेखर के शिष्य श्री हर्षवर्धन गणिने वि स १५२७ में "सदयवत्स कथा" संस्कृत गद्य में रची है। यह शायद एक जैनेत्तर कवि भीम ने रचित 'सदयवत्स वीर प्रबंध" की वि स १४८८ में श्री पट्टन में लिखी गयी प्राचीनतम प्रतिकृति प्राप्त हुई है। इस बिनासे इस कृतिकी रचना से संभव में

सकता है कि भीम की रचना अनुमानत वि स १४६६ म हुई होगी, एसा कुछ लोगा न अनुमान किया है। दूसरी प्रनि वि स १५९० मे एव तीसरी प्रनि वि स १६६२ की प्राप्त है। इस परन कहा जा सकता है कि सदयवत्स और सावलिगा की प्रेम कथा का यह सबसे प्राचीन एव उपलब्ध सस्करण है।

श्री चीमनलाल दलाल महोदय न जिस प्रति की जाच की थी उसमे पद्य-सख्या ६७२ थी। दूसरी प्रति म ६८९ पद्य-सख्या है। किंतु सर्व-प्रतिया का मिलान करनके बाद प्रबन्ध की ७३० जितनी कडिया प्राप्त हुई हैं।

मस्कृत कथानक भीम के प्रबन्ध का मुख्यत अनुसरण करता है। किंतु उसम जिनधम की महिमा का गुयन करनेकी तक श्री हर्षवर्धन ने छोड दी नही है। इन प्रस गो का उल्लख कथा-सार देते समय कौस या कोष्ठक में सूचित किया जायेगा। खरतर गच्छ के मनि श्री कीर्ति वधन ने इस कथानक में जिनमत का कुछ भी प्रचार नहीं किया है।

कथानक का मूल कथा सरित् सागर' जो कि लोककथाओंके महासागर स्वरूप गिना जाता है। उसमें भी 'सदयवत्स कथा' का पता चलता नहीं है। फिर भी उज्जयिनी, हरसिद्धिमाता, प्रतिष्ठान नगर, शालिवाहन, बावनवीर, और खापरा चार इत्यादि उल्लखो से और सदयवत्स के अद्भुत वीरता भरे वणना से या गाथाओंसे इस लोक कथा की उत्पत्ति का सम्बन्ध 'विक्रम कथा चक्र' के साथ होना अनुमान किया जा सकता है।

---

* सस्कृत में सदयवत्स, प्राकृत में 'सुदयवच्छ सुद्धवच्छ' एव सुद, गुजरातीमें 'सदयवच्छ और सदवत' इस तरह राजस्थानी-मारवाडी में 'सूर्गो' एव 'सदेवछ शब्द हैं। इससे ज्ञात होता है कि ये सब शब्द कथानक से सम्बन्ध रखने वाल हैं। कथानक के निकटवर्ती शब्द हैं।

सावलिंगा का निर्देश कही कहीं सावलिंगी के रूप में भी प्राप्त है।

प्राचीन उल्लेख पद्मावतमें सदयवत्स कथा के विषय में दो प्राचीन उल्लेख प्राप्त होते हैं। (१) मलिक मुहम्मद जायसीकृत रचना पद्मावत में इस कथानक का उल्लेख प्राप्त किया है। और भी गुप्तजी द्वारा जो संस्करण है उसमें यही पाठ है।

(२) शिरेफ व आयंगीकृत 'पद्मावत' के अंग्रेजी अनुवाद' में पृ० १४४ की पादटिप्पणी में भी 'सदयवत्स' पाठ का उल्लेख किया है।

अपभ्रंशमें उल्लेख एक दूसरा उल्लेख भी प्राचीन समय का प्राप्त होता है, जो अब्दुल रहमानके अपभ्रंश काव्य सन्देश रासक में है। जिसका रचनाकाल वि. सं. १४०० के आसपास है। उसने मुलतानगर का वर्णन किया है। उसमें वहां के विचक्षण नागरिकों की साहित्यिक विनोद की चर्चा के प्रसंग में उल्लेख किया है कि मुलतानगर के सब नागरिक पंडित थे। वे विचक्षणों के साथ नगर में परिभ्रमण करते समय कहीं कहीं प्राकृत के मनोरम्य छन्द के आलाप सुनने में आते थे। तो कहीं भेष परिवर्तन करने वाले लोग (बहुरूपी) रासक करते देखने को मिलते थे, तो कहीं वेद, सदयवत्स कथा नल चरित्र महाभारत एवं रामायण (रामचरित) सुनने में आते थे।*

---

* देखिये, मूल अपभ्रंश रचना की संस्कृत टिप्पणी—
"यदि विचक्षणैः सह पुरान्तः परिभ्रम्यते तदा मनोहरं छंदसा मधुरं प्राकृतं श्रूयते।
कुत्रापि चतुर्वेदिभि वेद प्रकाश्यते।
कुत्रापि बहुरूपिभिर्निबद्धो रासको भाष्यते ॥४३॥
कुत्रापि सुदयवच्छ कथा, कुत्रापि नलचरितम्।
कुत्रापि विविध विनोदे भारत उच्चारितं श्रूयते ॥
अपरञ्च कुत्रापि कुत्रापि आशिष त्यागिभिर्द्विजवरैः
रामायणमभिनूयते ॥४४॥

यहा नलचरित्र, महाभारत एव रामायण के साथ सदयवत्सकथा का उल्लेख प्राप्त होने से ज्ञात होता है कि उस समय यह कथा उन ग्रंथों की तरह ही लोकप्रिय एव प्रसिद्ध होगी ।

प्रान्त प्रान्तमे प्रचार- जायसी के पद्मावत म इस कथा का उल्लेख है इससे ज्ञात होता है कि उस कथानक की प्रसिद्धि उत्तर प्रदेश मे भी इसी रूप में होगी । यह बात स्पष्ट नजर में आ जाती है ।

अब्दुल रहेमान के इस का इस रूप में उल्लेख, वास्तव में पजाबकी और इस कथा के प्रचार का द्योतक है । राजपुतानी (राजस्थान) एव गुजरात म भी इस कथानक का बहुत प्रचार रहा है । यह बात भी उस सपादित सशोधित एव प्रकाशित ग्रथ से ज्ञात होगी ।

विक्रम कथाचक्र से सम्बन्ध जिन कवि के स स्कृत कथानक मे जिनाचार्य कालक के साथ उसका सम्बन्ध जुटाया है । एव कथा में उज्जयिनी हरसिद्धिमाता (देवी), प्रतिष्ठाननगर एव शालिवाहन राजा बावन वीर, और खापरा चोर आदि के उल्लेख किये हैं । और इस प्रकार से विक्रमकथाओ के वार्ताचक्र (कथा चक्र) के साथ उसका सम्बन्ध ध्वनित किया है ।

प्रबन्धके रचयिता कविका परिचय- कवि ने प्रबध मे अपने निर्देश के अतिरिक्त अन्य कोई भी परिचय नहीं दिया है । नामका निर्देश निम्नलिखित काव्य पक्ति में मिल जाता है, जो यहा उद्धृत किया गया है ।

"इम भणइ भीम तस गुण थुणिसु
जो हरिसिद्धि वर-लधु ।"

नाम का निर्देश प्राप्त होता है । किंतु कवि ने अपनी जाति ज्ञाति एव जन्मस्थल या निवासस्थान के बारे में कुछ भी उल्लेख नही किया है । साथ साथ प्रबन्धके रचना कालका भी किंतु उनके प्रबन्धकी प्राचीन

तथ प्रतिकृति भी ..., सं० वि० सं० १८८८ की लिखी हुई ... हुई है।
(वि ... पत्र प्रमाण) ... काफी अनुमान किया जा सकता है कि
... यह विषय को ... में ... अर्वाचीन नहीं है ।

कविता विलास ग्यारह कवित्व आन विलास ग्यारह के कोमें
कुछ भी ... नहीं किया है । किन्तु कविता विलास स्थान गुर्जर भूमि हो
... होता है । क्योंकि अब ... की विलक्षणता केवल
गुर्जर ... ही ... थी । और ... गुर्जर ... भी
न काफी प्रमाण भी मी है ।

प्राचीन काल की गुर्जर भूमि का विस्तार भी गुर्जर प्रतिहार राजाओं
के साम्राज्य विस्तार के साथ साथ हुआ है । जिस राज्य में सौराष्ट्र,
आन । एवं समस्त राजस्थान का भी समावेश होता था और इसकी
व्यापक नाम भाषाय भी समान था ।

कवि की जाति कवि का ब्राह्मण होना सम्भव है । क्योंकि
उसने गणेश, शंकर, एवं दुर्गासिद्धि माता परमेश्वरी का ध्यान किया है ।
साथ साथ कविने भगवान शंकर के आशीर्वाद का गुणगान बयान किया
है । (दे० कड़ी २१७ १८,१९) । प्रतिष्ठान नगर वर्णन प्रसंग में विक्रम,
त्रिविक्रम, विष्णु एवं सूर्य का भी उल्लेख है । सार्वलिंगा के अग्निप्रवेश
की पूर्व तयारी के रूप में जो प्रार्थना दी है इससे भी पता चलता है ।
जैसे कि "करउ शांति त्रिक्रम न तरणी" कड़ी (२९९) ।

कवि रामायण एवं महाभारत से भी विशिष्ट रीति से परिचित थे
ऐसा जान पड़ता है । कुछ छंद एवं काव्य पद्धतियों के द्वारा इसका पता
चलता है । सदयवत्स के गुण एवं कार्यों की प्रशंसावली के अनुसंधान में
नल कदप युधिष्ठिर गांगेय भीष्म पितामह भीमसन, कर्ण एवं दुर्योधन
जैसे उपमान भी वर्णित किये हैं ।(दे० छप्पय कड़ी २८७)कविके जमाने
में जिनधर्म एवं जीवदया अहिंसा का भी काफी प्रचार था । इसके द्योतक
निम्नलिखित काव्य-पंक्तियाँ हैं । इससे पता चलता है । जैसे कि "जिन
शासन गाढउ गहगहइ । जीवदया देसी मन रहइ ॥"(दे कड़ी ४५१,४५२)

प्रबंध की भाषा प्रस्तुत प्रबन्ध की भाषा किसी भी जिनेत्तर गुजराती ग्रंथ की भाषा से प्राचीन जान पडती है। प्राकृत एवं अपभ्रंश के शब्द और प्रयोगों के रूप मे उसमे इतनी सामग्रिया भरी पडी है कि न पूछो बात। यदि प्रारम्भ के मगलाचरण मे कवि ने गणपति का नाम स्मरण न किया होता तो इसकी गणना किसी जिन कवि की कृति के रूप मे गिना जाने का सम्भव था। डा० टेसिटारीने जूनी पश्चिम राजस्थानी का नामाभिधान जिस भाषा स्वरूप को दिया है। और गुजराती विद्वान महाशयोने 'अतीम अपभ्रंश' और 'जूनी गुजराती' ऐसे शब्दो से उसका व्यवहार किया है। उसी समयकी भाषा 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध'मे प्रतीत होती है। वास्तव मे वि स १४८८ की प्रति की उपलब्धि से भाषा के प्राचीन स्वरूप की रक्षा हुई है। और इसमे कुछ परिवर्तन एवं आधुनिकरण नही हुआ है।

सरस या सुन्दर रचना कवि इस प्रबन्धके प्रारम्भ मे 'सरस' 'सुअथ' एवं सुच्छन्द प्रबन्ध के रचयिता सब वार्ड प्रौढ एवं लघु छोटे बडे ऐसे कविजनो को नमस्कार करते हैं। इसमे अनुमान किया जा सकता है कि कवि ने किसी प्राकृत किंवा प्राकृत अपभ्रंश ग्रंथो मे से इस प्रबंध के विषय मे प्रेरणा प्राप्त की होगी जिसका निर्देश हमे निम्नलिखित काव्य पंक्तियो से मिलता है। जैसे कि 'गुरु लहूय जि कवि कवियण सरस सुअरथ सुछन्द बधयरा।" कवि के पुरोगामी काल मे ऐसी प्रबंध रचना होना भी शायद सम्भव हो। फिर भी अद्य-यावतप्राप्त जिनेत्तर रचनाओ मे कवि भीम की रचना सबसे प्राचीन है-ऐसा कहने मे संकोच नही है।

भीम कवि की रचना एवं काल समय सदयवत्स चरित्र कथानक के सम्बन्ध मे उपलब्ध साहित्य से निर्णय किया जाता है कि उन रचनाओ का प्रारम्भ वि की १५ वी शती से होता है। प्राचीन गुजराती भाषा मे रचित भीम कवि की रचना 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' ग्रंथ उपलब्ध रचनाओ मे सबसे प्राचीन है। इसकी प्राचीनतम प्रतिकृति

वि स १४८८ की प्राप्त हुई हैं। इससे अनुमान किया गया है कि यह रचना निदान २० बीस साल पहले की होना सम्भव है। अतएव इनकी रचना वि स १४६६ की हैं। ऐसा निर्देश कई लेखकों ने किया होगा। वास्तव मे कवि का इसके बारे मे कहीं भी स्पष्ट उल्लेख प्राप्त नहीं होता।

प्रबन्ध के छंद कवि ने प्रस्तुत प्रबन्धमे दूहा,दूहासोरठा,पद्धडी, चउपई अडयल, वस्तु, छप्पय, कुंडलिया चामर एवं मौक्तिकदाम इन मात्रामेल छंद एवं एकताली केदारराग, और धउल धनासी, जैसे गेय काव्य छंद प्रयुक्त किये हैं। अतएव ७३० कडियां में यह कृति प्रसादयुक्त एवं वविध्यपूर्ण और सुन्दर बन पाई है।

वस्तुछंद 'पिंगल्सारोद्धार'के नियमानुसार १२५ मात्राओका नवपदी छंद है। पहले तीसरे और पांचवें पदमे १५ मात्राये, दूसरे एवं चौथे पद मे ११ मात्राये और अन्त्यमे चार पदों से दूहा बनता है।

पद्धडी पद्धडिका और पाधडी छंद कडवक के अंत मे अपभ्रंश काव्यों में प्रयुक्त होता है।

आचार्य हेमचंद्र जी ने 'छंदानुशासन' मे भी पद्धडिका चार चगणों से पद्धडिका छंद बनता है ऐसा लक्षण दिया है। चार मात्रा के गणकी चगण संज्ञा है। एवं १६ मात्रा का एक पाद इस तरह के चार पाद पद्धडिका छंद मे रहते हैं। इसमे उसका नाम चतुष्पदी भी है।

प्रबन्ध मे रस कवि ने इसमे नौ ९ रस होने का उल्लेख किया है, किंतु प्रधानतया वीर एवं अद्‌भुत रसका संचार अधिक है। शृंगार रस उसमे गौण रूप में पाया जाता है। 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' नाम की गुजराती कवि की रचना प्रायः वीर रस से ही प्रेरित हैं।

गुजराती रूपान्तर उज्जयिनी के राजा प्रभुवत्स के महालक्ष्मी रानी से सदयवत्स नामक पुत्र हुआ। उसे द्यूत का कुव्यसन लगा हुआ था। प्रतिष्ठानपुर के राजा शालिवाहन के सावलिंगा नामक पुत्री थी। उसके स्वयवर म जाने के लिये आमत्रण मिलने पर राजा प्रभुवत्स ने म त्री के साथ सदयवत्स को प्रतिष्ठानपुर भेजा। मत्री कृपण होने से क मार को खर्च के लिये आवश्यक द्रव्य नहीं देता था। स्वय वर म सदयवत्स ने अपने गुण एव कला से आकर्षित कर सावलिंगा से विवाह कर लिया।

उज्जयिनी म महादेव नामक एक दरिद्र ज्योतिषी रहता था। स्त्री की प्रेरणा से एक दिन वह राजा प्रभुवत्स की सभा म उपस्थित हुआ। राजा ने उसका परिचय पूछा उसने कहा कि मैं ज्योतिष के बल से भूत, भविष्यत और वर्तमान के शुभाशुभ को जानता हू । राजा ने उसके इस अभिमान से क्रुद्ध हो परीक्षार्थ अपने निकटवर्ती जयमगल हाथी का आयुष्य पूछा। ज्योतिषी ने कहा यह कल दोपहरको मर जायगा। राजा ने क्रोधित होकर उसे कैद कर लिया और नौकरो को जयमगल हाथी की विशेष रक्षा करने की आज्ञा दे दी। लोक ज्योतिषी की अवज्ञा करते हुय कहने लगे, देखो इस ज्योतिषी न हाथी का मरण तो जान लिया पर अपने ब दीखाने मे पडने की बात को नहीं जानी।

इधर वैद्यो की देखरेख म जयमगल की विशेष सुरक्षा की व्यवस्था हो चुकी थी। पर भवितव्यतावश दूसरे दिन दोपहर के समय हाथी मदोन्मत्त हो भाग निकला और बाजार में उपद्रव मचाने लगा। इसी समय एक सगर्भा ब्राह्मणी के अघरणी उत्सव का वरघोडा उसके पीहर से ससुराल जा रहा था, वहाँ वह हस्ति आ पहु चा। उत्सव म सम्मिलित लोग भाग खड़े हुये पर ब्राह्मणी गर्भभार के कारण भाग न सकी। अत हाथी ने उसे पकड ली। यह देखकर उसके पति ने चिल्लाते हुय उसकी रक्षा करनेवाले को हार आदि देने की उद्घोषणा की। सदयवत्स की दृष्टि भी उस ओर पडी और उसने हाथी का मारकर ब्राह्मणी की रक्षा की। इसस प्रसन्न हो प्रभुवत्स राजा ने क मार को युवराज-पद देने का

निश्चय किया। स्वयवर म साथ जाने वाले म त्री ने कुमार को युवराज पद मिलता देख विचार किया कि मैंने इस आवश्यक द्रव्य व्यय के लिये नही दिया था सभव है वह उस व र का वदला मुझ से ले। अत इस युवराज पद नही मिले ऐसा सोच राजा को उल्टी म त्रणा दी कि कुमार ने एक साधारण स्त्री की रक्षा करने के लिये "जयमगल" जसे राजमान्य हाथी को मार डाला यह उचित नही किया। राजा को म त्री की वात जँच गई उसने कुमार के काय को अनुचित समझ कर उसे राज्य छोडकर चले जाने की आज्ञा दे दी।

कुमार ने भी अपमान होने से अब वहाँ रहना उचित नही समझा और जाने की तैयारी कर ली। माता ने समझाया पर उसने नही माना सार्वलिगा भी उसके साथ हो गई। चलते चलते वे एक वन मे आ पहुचे वहा सार्वलिगा को जोरा से प्यास लगी। कुमार पानी की खोज म इधर उधर घूमते हुए एक प्रपा पर नजर आई। पानी लेनेके लिय पास पहुचने प्रपालिका वृद्धा ने कहा यह हरसिद्धि माता की प्रपा है। जितना पानी लोगे उतना ही खून देने की शर्त से ही जल ले सकते हो। कुमार ने सार्वलिगा के प्रेमवश यह शर्त स्वीकार कर पानी ले जा कर सार्वलिगा को पिलाया। वृद्धा भी साथ गई और खून मागा। कुमार शिरच्छेद करने को उद्यत हुआ। इससे देवी ने प्रसन्न हो कर मांगने को कहते हुए कहा कि मैंने ही तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये जगल की रचना की है। और मैं उज्जन एव प्रतिष्ठान नगर की कुलदेवी हू । कुमार ने सग्राम एव युद्ध मे जय होने का वरदान माँगा।

देवी ने सारियों के द्यूत म जय होने के लिये दो पासे कपदक द्यूत मे जय होने के लिये कर्पदिकायें, और सग्राम मे जय होने के लिय लोहछुरिका दी। आगे चलते हुए स्त्रिया के समूह के बीच मे एक कुमारिका को ध्यान करते हुए देखकर सार्वलिगा ने उसके पास जाकर वृत्तान्त पूछा। कुमारिका ने कहा यहाँ से ५ कोस पर स्थित धारावती-नगरीके राजा धारवीरकी स्त्री धारिणीकी मैं लीलावती नामक पुत्री हू।

बन्दीजना क मुख मे सदयवत्स का गुण श्रवण कर उसे पाने के लिये इस कामितप्रद तीर्थ म ६ महीने से ध्यान कर रही हू। सदयवत्स के न मिलने पर कल चिता में जल मरू गी। सार्वलिगा ने यह बतात सदयवत्स का कहा। कुमार सबके साथ नगरी म आया और लीलावती से विवाह कर उसकी इच्छा पूर्ण की।

[इसी समय धमधोष नामक जैनाचार्य वहा पधारे और "थोडा बहुत भी धर्म जरूर ही करना चाहिये" ऐसा उपदेश देते हुये मृगांक की कथा कह सुनाई। सदयवत्स ने उसे सुनकर श्रावक धर्म स्वीकार किया।]

लीलावती का पितृगृह में रखकर सार्वलिगा के साथ कुमार आगे चला। रास्ते में एक पर्वत पर शिला से ढकी हुई गुफा देखी, दोनो ने कौतूहलवश भीतर प्रवेश किया तो उसमें ५ चोर बैठे देखे। चोरो ने सदयवत्स को अकेला देख उसे मारकर सार्वलिगा का ग्रहण कर लेने का विचार किया। उन्होंने द्यूत रमने के लिये सदयवत्स का आह्वान किया और जो हारे उसे मस्तक देना पडे यह शर्त रखी गई। देवीके वरदानसे सदयवत्स जीता पर सज्जनतासे उसका शिर छेदन नहीं किया। इससे चोर प्रभावित हुए। और अदृष्टांजन मृतसंजीवनी, रससिद्धि आदि विद्यायें देने को कहा पर कुमारने उन्हें नही लिया। फिर भी एक चोर ने गुप्तरूप से कुमार के उत्तरीय वस्त्र के छोर से पद्मिनिपत्र वेष्टित लक्ष मूल्य का कंचुक बाध दिया। चोरो ने यह भी कहा कि कभी आप संकट में पड जाय तो हम स्मरण करते ही हम आकर आपकी सहाय करेंगे।

कुमार आगे चलते हुए एक निर्जन नगर में पहुचा। राजभवन के समीप आने पर एक स्त्री का रोना सुन कर उसके पास जाके रोने का कारण पूछा। उसने कहा मैं नन्द राजा की लक्ष्मी हू, अनाथ होने से रो रही हू, तुम मेरे स्वामी बन जाओ।

[नगर का निर्जन होने का कारण पूछने पर लक्ष्मी ने कहा कि इसी

वीरपुर नगर म एक तापस आया था। वह ब्रह्मचारी था। लोगो पर प्रभाव जमाने के लिये स्त्री का स्पर्श हो जाने पर बडा गुस्सा दिखलाने का ढोंग करता था। एक बार नगरी की वेश्या ने उसका स्पर्श किया, इससे उसने राजा के पास फरियाद की। वेश्या ने उसे ढोगी बतलाया राजा ने उसकी परीक्षा के लिय उसे महल म लाकर रानी के स सग म अधिक रूप से आने की व्यवस्था कर दी। रानी को देख कर वह कामातुर हो उठा और भोग के लिये प्रार्थना की। रानी जोर से चिल्लाई तब राजा ने आकर तापस को मारडाला। वह तापस मरकर राक्षस हुआ और पूर्व भव के वैर से नगरी की यह स्थिति कर दी।]

लक्ष्मी ने कुमार को धन का ढेर पडा बतलाया। कुमार सार्वलिंगा से कहा कि यह धन अपने फिर कभी विधि विधानपूर्वक ग्रहण करेंगे। अभी तो प्रतिष्ठानपुर चले। चलते चलते वे प्रतिष्ठान के समीप आ पहुंचे और पास के गाँव मे एक ब्रह्मभट्ट के यहां आकर ठहरे। ससुराल होने के कारण नगर प्रवेश के लिये योग्य वस्त्राभूषण लाने एवं रथनादि की व्यवस्था करने के लिये कुमार अकेला नगर मे जाने लगा तब सार्वलिंगा ने कहा कि यदि आप ५ दिन मे वापिस नही लौटे तो मैं चिता प्रवेश कर लूंगी।

कुमार को नगर म प्रवेश करते हुए एक टूटक मिला। कुमार उसे अपशकुन समझ कर वापिस जाने लगा। टूटक को यह बात अखरी और वह पुष्प एवं खाद्यादि मांगलिक वस्तुओ को लेकर पास मे आकर कहने लगा कि मैं सिंहल के राजा का सुरसुंदर नामक पुत्र हूं। कौतुकवश ५०० हाथी एवं करोड मोहर लेकर नगर देखने के लिय यहाँ आया था पर मैं उसको जूए म हार गया। जुवारियो ने मेरे हाथ कान भी काट डाले। दैव रूठता है वही जूआ खेलता है।

टूटक के साथ कुमार ने नगर म प्रवेश किया। रास्ते म सूर्य-प्रासाद म विवाद हो रहा था। विवाद का विषय यह था कि राज्यमान्य कामसेना वेश्या न स्वप्न म देखा कि श्रेष्ठि दत्तक के पुत्र सामदत्तने उसके

घर आकर उससे भोग किया। अत सोमन्त में अपनी द्रव्य मुद्रा रूप म गहित कार्यों की शुल्क लेने के लिये वेश्या ने अक्का भेजी। श्रेष्ठि ने-धन देने से इनकार किया। इसी कारण ३ दिन से विवाद चल रहा था कुमार का देख उसे इसका न्यायाधीश चुना गया। उसने श्रेष्ठि से कहा कि राजमान्य से विरोध करना उचित नहीं। अत तुम इसे धन दे दो। कुमार ने श्रेष्ठि से धन मगा कर उसका आधा भाग लेने के लिये अक्का को कहा पर उसने आधा लेना को स्वीकार नहीं किया। तब कुमार ने एक दर्पण भाग कर उसके सामने धन रख दिया और प्रतिबिम्बित धन लेने के लिये अक्का से कहा। क्योंकि स्वप्न एव प्रतिबिम्बित अवस्था समान ही होती है। इस न्याय से अक्का लज्जित हो बिलखती हुई लौट गई।

कामसेना यह वृत्तात जानकर नृत्य करने के बहाने सूर्य प्रासाद म आई और कुमार को देख कर मोहित हो गई। उसने कुमार को अपने घर चलने का कहा। टूटक ने जाने का विरोध किया कि वेश्या किसी की नहीं होती। पर कुमार निर्भीकता से चला गया और ५ दिन उसके यहा रहा। कुमार नगर म जुआ खेलने गया और बहुत सा धन कमा लाया। उसमे से कुछ धन सार्वलिगा के लिए आभूषणादि खरीद करने के लिये टूटक को दे दिया बाकी वश्या को दे दिया।

५ वें दिन कुमार ने वेश्या से जाने की आज्ञा मागी। वश्या ने रहने का बहुत आग्रह किया पर कुमार को सार्वलिगा से वचनबद्ध होने के कारण जाना जरूरी था अत रवाने हुआ। जाते समय वेश्या-ने कुमार का उत्तरीय वस्त्र खेंचा तो उससे चोर का बाधा हुआ पद्मिनीवष्टित कचुक खुल पडा। वेश्या ने वेष्टन खोलने पर रत्नमय कचुक देख कर कुमार से मागा और उसने वह उदारतापूर्वक दे दिया।

वेश्या उसे पहिन कर राजसभा म जा रही थी, इसी समय एक सेठ ने कचुक को देख, वह अपना चोरी गया था वही है यह निश्चय

कर राजा से इसकी फरियाद की। राजा द्वारा वेश्या को पूछने पर उसने कहा कुमार यहां अवश्य आता है मैं उनका नाम नहीं जानती। तब राजा ने वेश्या को चोरी की सजा का हुक्म दे डाला। कुमार ने जब यह बात सुनी तो वह चोरी के स्थान पर पहुंचा और कोतवाल को जाकर कहा चोर मैं वेश्या को छोड़ दो। पर उसने वहां छोड़कर पर जबरदस्ती उसे छुड़ा लिया राजा ने कुमार को पकड़ने के लिये अपनी सेना भेजी पर कुमार ने उसे भी हरा दिया।

उधर ५ दिन तक कुमार के न आने के कारण सार्वलिंगा ने चिता प्रवेश की तैयारी कर ली। कुमार ने यह सुनते ही अपने वदले सामदेव को वहां छोड़ वापिस आने की प्रतिज्ञा कर वहां पहुंचा। और सार्वलिंगा को जलने बचाया। प्रतिज्ञानुसार कुमार शूलीस्थान पर वापिस आया राजा ने ५२ वीरों को कुमार से युद्ध करने के लिये भेजा। नारद से सूचना पाकर कुमार के पूर्व परिचित ५ चोर वहां सहायतार्थ आ पहुंचे अंत ५२ वीर भी हार गये।

राजा ने बल से काम निकलता न देख नम्रता से कुमार का नाम पूछा और उसके न बतलाने पर वेश्या से पूछा। तो वेश्या ने उसका नामांकित खड्ग लाकर राजा को दिखलाया। राजा को छलने के लिये कुमार ने कहा इस तलवार को तो मैं सदयवत्स से जूए में जीता था। राजा ने उसे वश में करने को गजघटा बुलाई। उसे भी सिंहनाद द्वारा कुमार ने भगा दिया। अंत में राजा के अनुरोध से कुमार ने अपना वास्तविक स्वरूप प्रगट किया। तो राजा को उसे अपना जामाता ही जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई और अपने पुत्र शक्तिसिंह को भेज कर सार्वलिंगा को भी बुला ली।

अवान्तर कथा। कुछ समय तक दोनों वहां आनन्दपूर्वक रहे। इसी समय सदयवत्स की मित्रता १ वनिक, १ क्षत्रिय एवं ब्राह्मण जाति के तीन व्यक्तियों से हो गई। इतने में ही एक विदेशी के मिलने पर कुमार ने पूछा कि कहीं कुछ कौतुक देखा हो तो कहो। उसने कहा तुम्बन नगर में धनपति सेठ के मृत पिता बहुत

समय हुए जला दिये गये थे, पर वे रात के समय जीवित अवस्था में घर पर आ जाते हैं। यह बडा आश्चय है। कुमार कौतूहलवश तीनों मित्रों के साथ वहा गया। तुम्वन म प्रवेश करते हुए एक ब्राह्मणकया को सीकोतरी पीडा दे रही थी,उसें छुडाकर उसका विवाह ब्राह्मण मित्र के साथ कर दिया।

आग चल कर मित्रो सहित कुमार सेठ के घर पहुचा। और अमुक धन लने का तय कर वे उसके पिता का शव जलादेने के लिये स्मशान ले गय। उसें प्रात काल जलाने का निश्चय कर रात को १-१ प्रहर बारी बारी पहरा देने की कर ली गइ।

पहली बारी वणिक की थी। पहरा देत हुए उसें एक स्त्री के रोने की आवाज सुनाई दी। वणिक शव को अपनी पीठ पर बाँध स्त्री के पास गया। और रोने का कारण पूछा। स्त्री ने कहा मेरा पति शूली पर लटका हुआ है मैं उसके लिये थाली म भोजन लाई हू पर शूली के ऊची होने के कारण उस तक पहुच नही सकती। इसी दुखसे रो रही हू। वणिक ने करुणावश उसे पीठ पर चढा कर ऊची कर दी। स्त्री ने ऊची चढ कर शूली पर लटके हुए पुरुष का माँस खाना शुरु कर दिया। जब तक मासख ड वणिकके ऊपर पडा तब उसने उसको नीचे डाल दिया। पडते ही वह स्त्री भागने लगी पर वणिक ने उसका पीछा कर एक हाथ काट डाला और उस हाथ का बालुका म डाल दिया।

दूसरे पहर म एक ब्राह्मण ने एक राक्षस द्वारा एक राजकुमारी को ले जाते हुए देखा। राक्षस का राजकुमारी से भोग की प्राथना करते देख पीछ मे ब्राह्मण ने उसे मार डाला।

तीसरे पहर क्षत्रियकी बारी थी। शव को जलाने के लिये वह अग्नि लेने की खोज म निकला तो उसने भूतो को खीर पकाते देखा। उनके पास ७ पुरुष खिचडी के साथ साग की जगह खाने के लिये बधे हुए थे।

क्षत्रिय पुत्र ने भूतों को डरा कर भगा दिया। और पत्थर मारकर खिचडी की हाडी को फोड डाला। व धे ७ पुरुष राजकुमार थे।

चौथे प्रहर सत्यवत्स उठा तब उसने उस जुआ खेलने को आमन्त्रित किया। सब सोते हुए व्यक्तियों को जगाकर प्रमाणित कर एक राक्षस ने जुआ खेलने की सामग्री उठाकर रख ली। जो हारे उसका मस्तक छेदन कर लिया जाय। इस प्रतिज्ञा पूर्वक खेल खेलकर कुमार ने सब को जीत लिया।

प्रभात में श्रेष्ठि ने पास आकर पूर्व निश्चित धन माँगा। श्रेष्ठि ने वहा बस नाराजी करते हुए। कुमार ने राजा के पास फरियाद की और रात का सारा वृतान्त कह सुनाया। राजा के प्रमाण माँगने पर बालू में गड़ा हुआ हाथ उपस्थित किया और वह हाथ रानी का होने से रानी सौकोटरी साबित हुई। राजकुमारी राजकुमारा को भी उपस्थित किया गया। श्रेष्ठि ने कुमार को अपनी कन्या ब्याह दी।

सत्यवत्स वहां से वापिस लौटते हुए निज म नगर को जिसे दग आया था वहाँ गया। वहाँ राक्षस की आराधना कर वीर कोट नामक नगर बसाया। सत्यवत्स के सीलावती रानी से वनवीर और सार्वलिगा से वीरभानु नामक पुत्र हुए।

[सदयवत्स ने चतुर्थी को संवत्सरी करने वाले जैनाचार्य कालकसूरि के हाथ से अपने बसाये नगर के जैनमन्दिर की प्रतिष्ठा करवाई।]

इसी समय उज्जयिनी, जो कि अपनी मूल राजधानी थी, पर शत्रुओं के ६ महीने से घेरा डालने की बात सुन कर कुमार ने ससैन्य वहा जाकर शत्रुओं को परास्त किया। प्रभुवत्स राजा ने सदयवत्स को उज्जयिनी का राज्य दिया। वीरकोट का नवीन स्थापित राज्य राजकुमार को सौंप दिया गया।

[अन्यदा कालकाचार्य उज्जयिनीमें पधारे और पूछने पर सदयवत्स का पूर्व भव कह सुनाया कि तू विंध्याचल की पल्ली के गोत्रक नगर मे व्याघ्र राजा की धारलदेवी रानी के गुण सुंदर नामक सरलस्वभावी

एव दयावान पुत्र था। श्यामाचार्य के पास जीवदया व अभयदान का उपदेश श्रवण कर उसने सम्यक्त्व सहित श्रावकोचित १२ व्रत ग्रहण किये। गुणसुन्दर मुनियों को अशनादि का दान और प्राणियोंको अभयदान देने में सदा तत्पर रहता था। एक बार उद्यान में क्रीडा करते हुए उसे ४ पुरुष मिले। उन्होंने कहा कि वताल नगर में देवी के बलिदान के लिये हम पकड़े गये थे पर हम वहा से भाग कर यहाँ आ गये हैं। वहाँ के लोग बड़े निर्दयी हैं और मनौती मानकर भाड़े से स्वार्थके लिये भैसे और विशेष कार्य में मनुष्य तक की बलि दे देते हैं। गुण-सुन्दर का हृदय करुणार्द्र हो गया। अत वहाँ जाकर बलि देनेवाले लोगों को भगाकर मनुष्यों को बचाया। और अपनी बलि देने के लिए कंठ पर तलवार का प्रहार करने लगा। देवी ने उसके धैर्य एव साहस से प्रसन्न हो उसका हाथ पकड़ा। तब उसने देवी को प्रतिबोध देकर सदा के लिये, बलिप्रथा बंद करवा दी। मत्यु समय में आराधना करने से तुम। इस जन्म में सदयवत्स हुए। जीव दया व अभयदान के पुण्यसे प्रबल पराक्रम और मुनि दान के फल से सब प्रकार के भोग प्राप्त किये। अपना पूर्व वृत्तान्त सुन सदयवत्स को पूर्व भव स्मरण हो आया।

राजस्थानी रूपांतर-राजस्थान में प्रचलित सदयवत्स कथा में केशव का प्रति सबसे प्राचीन है। अत तुलनात्मक विचार करने के लिये यहाँ उसका सार दे दिया जाता है।

पूर्व दिशा के कोंकण देशस्थ विजयपुर में महाराजा महीपाल राज्य करते थे। उनका पुत्र सदयवच्छ था। राजा के मन्त्री सोम के सावलिंगा नामक पुत्री थी। योग्य वय होने पर महाराजा ने पंडित को बुला विद्याध्ययनार्थ कुमार को उसके सुपुर्द कर दिया। इसी प्रकार मन्त्री सोम ने सावलिंगा को भी पढ़ने के लिए उन्हीं की पाठशाला में भेज दिया। और उस पाठशाला के छात्रों से अलग रखकर पढ़ाने का निर्देश कर दिया।

सावलिंगा की पढ़ाई परदे में होने लगी। राजकुमार के पूछने पर

पंडितजीने उसके परदे में पढ़नेका कारण उसका अन्धी होना बताया। और कुमारी को कुमार का कोढ़ी होना कह दिया जिससे परस्पर कोई सम्पर्क न हो सके। एक दिन किसी कारण से पंडितजी नगरमें गये थे और सबको पढ़ाने का काम कुमार को सौंप गये। पढ़ते हुए परदे में स्थित कुमारी ने कोई पाठ अशुद्ध बोला। तब कुमार ने कहा 'अन्धी! अशुद्ध क्यों बोल रही हो?' प्रत्युत्तरमें कुमारी ने कहा 'कोढ़ी! जैसा पाटी में लिखा है वैसा ही पढ़ रही हूं। कुमार का भ्रम इस उत्तर से दूर हो गया। उसने सोचा गुरुजी के कथनानुसार कुमारी यदि अन्धी है तो पाटी पर लिखा वह पढ़ने की बात कह नहीं सकती और मुझे कोढ़ी कहने का कारण भी क्या? अतः हम दोनों एक दूसरे को देख न सकें इसीलिये गुरुजी ने भ्रम फैला रखा है। भ्रम दूर होते ही कुमार को कुमारी के देखने की उत्कंठा बढ़ी। और एक दूसरे को देख करके प्रेमसूत्र में बंध गये। फिर परस्पर दूहा-गूढ़ादि लिखने व कहते रहने के द्वारा प्रीति दृढ़ होती गई।

गुरुजी के गाम में खेत थे। उसकी रखवाली के लिये बारी २ से शिष्य वहां जाते थे। नियमानुसार सदयवच्छ अपनी बारी पर खेत पहुंचा और सावलिंगा उसे भाता (भोजन) देने खेत गई। वहाँ एकान्त होने से प्रीति विशेष रूप से दृढ़ हो गई। सावलिंगा ने किसीसे भी साथ विवाह होने पर पहली रात उसके साथ रमण का वादा किया।

शिक्षा समाप्त होने पर यौवनावस्था देख, राजा ने सदयवच्छ का विवाह किसी राजकन्या से कर दिया। और सावलिंगा के पिता ने भी कुमारी की अवस्था विवाहयोग्य जानकर, ब्राह्मण को भेजकर पुष्पावती के सेठ धनदत्त से उसका सम्बन्ध निश्चित कर दिया। सदयवच्छ यह जानकर वेश्या के कथनानुसार स्त्रीवेष में कुमारी से उसके घर जाकर मिला। तब उसे देवी मन्दिर में मिलने का कुमारी ने संकेत किया।

निश्चित समय पर पुष्पावती से धनदत्त आया और उसके साथ सावलिंगा का विवाह हो गया। सदयवच्छ के साथ अपनी पुरानी प्रीति

एव वचन निवाहने के लिये देवी मन्दिर म अपनी पूर्व मनौती पूर्ण करने को पनि से आज्ञा लेकर वहा पहुची।

सदयवत्स न उस दिन दूना नशा कर लिया और देवी के मन्दिरमे जाने सो गया। नशे की अधिकता से उसको इतनी प्रगाढ निद्रा आगई कि सावलिंगा ने उसे जगाने के लाख प्रयत्न किये पर सब निष्फल गये। तब निराश होकर वह अपन घर लौटते समय अपन आन के सूचक चिन्ह एव फिर मिलने का सकत सूचक दूहा कुमार के हाथ पर लिख दिया।

निद्राभग होने पर कुमार ने सावलिंगा के न आने का बडा अफसोस किया। दतौन के समय हाथ की ओर देखने पर कुमार ने हाथ पर उसका लिखा हुआ दूहा पढा। और अपनी गलती महसूस कर योगी होकर दोह की सूचनानुसार पाहुपावती नगर पहुचा। रास्ते म हाथ का लेख नष्ट न हो जाय अत बावडी में पशु की भांति मुह से पानी पिया। इस प्रसग म पनिहारियों से बातचीत करते हुए कुमारिन मे पता लगा कर वह धनदत्त सेठ के घर पहुचा और सावलिंगा से चार आंख होने पर दोनो अधीर हो उठे।

उस समय सावलिंगा ने अपने पति को कहकर नया महल या मन्दिर बनानेका काम शुरू कर रखा था। सदयवत्स उसीके निर्माण कायम मजदूरी करने लगा। एक बार योगीका वेष धारण कर भिक्षा लेने सावलिंगा के घर गया, जब उसने अन्य किसीके हाथ से भिक्षा न ली, तब साव-लिंगा देने आई और पुन चार आंखें होने पर स्तम्भित से हो गये।

राजगवाक्षमे बैठी हुई राजकन्या ने यह स्वरूप देख उपालभ सूचक दोहे कह। इन दोहों को सुनकर कुमार नाराज होकर चला गया। राज-कन्या ने सावलिंगा से मिलकर दोनों का प्रेम-सम्बन्ध ज्ञात किया।

इधर सदयवत्स ने सैन्य सग्रह कर पुहुपावती के राजा भोज को राजकन्या देनेका कहलाया। और उसके न मानने पर युद्ध कर उसे हरा दिया। तब भोज ने अपनी कन्या का विवाह उससे कर दिया। कर

माया के नगर कुमार ने अन्य वस्तुएँ न लेकर केवल भेंट को स्वीकार करवाया और उसमें सार्वलिंगा देने का स्वीकार करा लिया।

सार्वलिंगा और सदयवत्स का सुख से ब्याह फिर बड़ा प्रसन्न हुआ। कुछ दिन वहां रहने के पश्चात् सार्वलिंगा अपनी नगरी और राज्यशासन करता हुआ विलास करता रहा। सार्वलिंगा आदि रानियों के साथ विलास सुख भोगते हुए उसके ४ पुत्र हुए। यहीं कथा की समाप्ति होती है।

कथा के विविध रूपान्तर—उपरोक्त कथा में प्रेम और विरह प्रधान है अर्थात् शृंगाररस प्रधान है। सार्वलिंगा ने भी अपनी प्रीति को खूब निभाया। इसके परवर्ती रूपान्तरों में सदयवत्स की नगरी का नाम किसी में मुंगीपुर किसी में आनन्दपुर और किसी में पुष्पावती मिलता है। उसके पिता का नाम शालिवाहन व मतीशाल माता का नाम कहीं पद्ममाला कहीं सौभाग्यसुन्दरी एवं गुरु का नाम सगुन महात्मा लिखा है। सार्वलिंगा के पिता का नाम पद्मसेन कहीं पद्मनाभ और माता का नाम लीलावती लिखा है विद्याध्ययन के लिए गुरु के पास वहीं सार्वलिंगा पहुंच गई और कहीं पीछे ससुराल का स्थान धारानगर ससुर का नाम हीरा, पति का नाम रतनपाल एवं वहां राजा का नाम विजयपाल लिखा है। पुष्पावती में सदयवत्स के पहुंचने पर कई कथाओं में घर में आग लगा कर सार्वलिंगा का बगीचे में उससे आके मिलना, कहीं वहां भी सदयवत्स का नहीं पहुंच सकना लिखा है। वहां के राजा का नाम कहीं भिन्न ही लिखा है और उसकी कन्या से विवाह का कारण कन्या का सार्वलिंगा से अनुराग हो जाना बतलाया है। कहीं स्वयंवर विधि से उसके साथ विवाह होने का उल्लेख है। कई रूपांतरों में सदयवत्स का अपने नगर लौटने का कारण पिता का अन्वेषण कर बुलवा भेजना लिखा है। और भी कई घटनाओं में अंतर व कमीवेशी पाई जाती है। अर्थात् अनेक व्यक्तियों की सूझबूझ से इस कथा में बहुत कुछ समय समय पर जोड़ा एवं रूपांतरित किया गया है।

कई कथानकों में प्रारंभिक भाग में उनके पूर्वभव का प्रसंग देकर

प्रीति का प्राचीन सम्बन्ध होना व्यक्त किया है। एवं रूपांतर में अन्य अनेक कथानकों की भाँति शिव पार्वती का प्रसंग भी जोड़ दिया गया है।

कथानकों में भिन्नता-अब गुजरात और राजस्थानी संस्करण में मुख्य रूप से जो अन्तर है उस पर प्रकाश डालना हूं।

(१) गुजराती संस्करण वीर एवं अदभुतरस प्रधान है राजस्थानी शृंगार प्रधान है।

(२) गुजराती संस्करण में कई घटनायें हैं। तब राजस्थानी कथा में घटनाओं का प्राधान्य व अधिकता नहीं है पर प्रेम सम्बन्धी कथन ज्यादा हैं।

(३) गुजराती संस्करणानुसार सावलिंगा सदयवत्स की विवाहिता पत्नी है, तब राजस्थानी संस्करणानुसार वह रत्नपालकी विवाहिता पत्नी और सदयवत्स की प्रेमिका है।

(४) गुजराती संस्करणानुसार सदयवत्स उज्जैनी के राजा प्रभुवत्स का पुत्र है तब राजस्थानीके अनुसार विजयपुर, आनन्दपुर, मृगीपुर, या पुहपावती के राजा महिपाल या सालिवाहन का पुत्र है।

(५) गुजरात एवं राजस्थान में प्रचलित आधुनिक कथानक मिलता जुलता है अर्थात्-गुजरात में भी प्राचीन कथानक को अब भुला दिया गया प्रतीत होता है। इनमें पूर्वभवों के प्रेम सम्बन्धों की कथा ७।८ भवों तक बढ़ चुकी है।

शृंगारप्रधान कथानक कीर्तिवर्धन की सदयवत्स चउपई और मारवाड़ राजस्थान के अन्यान्य गद्य पद्यात्मक 'सदेवत सावलिंगा' नाम के कथानकों में प्रधान रूप में शृंगार रस पाया जाता है।

सदयवत्स कथा एवं दो परिपाटी-राजस्थान की अनेक प्रसिद्ध लोककथाओं में "सदयवत्स सावलिंगा" की प्रेमकथा का कई शताब्दियों तक राजस्थान में सर्वाधिक प्रचार अधिक लम्बे समय तक

रहा है। इस कथा की अनेक प्रतियाँ एवं विविध रूपांतरों की उपलब्धि इस कथन का समर्थन करती है।

सदयवत्स कथा के विविध रूपांतरों के अध्ययन से जाना जा सकता है कि उस लोककथा का मुख्यतः दो प्रवाहों में विकास हुआ है। भीम कवि का गुजराती 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' एवं हर्षवर्धनके सदयवत्स नाम्य वत्स चरित्र' के गद्य कथानक की परिपाटी वीर रस से प्रेरित चली आ रही है। तो राजस्थानी पद्यात्मक एवं गद्य पद्यात्मक सभी प्रकार के कथानक शृंगार रस-प्रधान होने के नाते उससे बहुत ही भिन्न रहे हैं। पंजाब एवं उत्तर प्रदेशमें उपलब्ध सदयवत्स कथानक का केवल नामोल्लेख के अलावा विशेष कुछ भी ज्ञान अभी तक प्राप्त हुआ नहीं है।

सदयवत्स चउपई—राजस्थानी रूपांतरों में सबसे प्राचीन रचना खरतरगच्छीय जैनकवि केशव अपर (कीर्ति) नाम कीर्तिवर्धन रचित 'सदयवत्स सावलिगा चउपई' है। इसकी रचना वि. स. १६९७ के विजयादशमी को प्रथमाभ्यास के रूप में की गई है। किंतु जान ऐसा पड़ता है कि वास्तव में यह चउपई भी कवि की स्वतंत्र रचना न होकर जनता में प्रसिद्ध दोहे आदि पद्यों को अपने धागेसे माला बनाने के रूप में पिरोये हों ऐसे, संकलन सा दिखाई देता है। राजस्थानी भाषा के पिछले सभी रूपांतर प्रायः गद्य पद्यात्मक रूप में ही हैं। जिनमें से कुछ रचनाओंमें दोहे हैं गद्यांश कम हैं। तो कुछ में गद्यांश बहुत विस्तृत है। कीर्तिवर्धन ने अपनी रचनाकृति में बीच बीच में अपने पद्यों के साथ २ प्रचलित पद्यों को भी यथास्थान जुटा लिये हैं।

गद्यपद्यात्मक रूपांतर राजस्थान की गद्यपद्यात्मक 'सदयवत्स कथा सचित्र रूप में भी मिलती हैं। अतएव वह विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सदयवत्स सावलिंगा री वहा' गुजरात में आबाल वृद्धों में ज्ञात है। उनके आठ भव के प्रेम एवं वियोग की कथायें स्त्रियाँ भी बड़े चावसे

पड़ती है। उपलब्धि प्राचीन राजस्थानी काव्य ग्रथो मे पूववर्ती केवल १ २ एक या दो भव की कथा का वर्णन पाया जाता है। आठ भव की कथा का सम्बन्ध पीछे से जोडा जुटाया गया प्रतीत होता है।

कथा द्वारा जैन मनका प्रचार एव प्रसार सदयवत्स कथा का सस्कृत गद्य रूप कि जो गुजराती कथानक से प्रेरित होना प्रतीत होता है, उसके रचयिता हर्षवधन ने इस लोक कथा का अन्य जैन विद्वानो की भाति ही जैन स्वाग या चोला पहना दिया जान पडता है। जसे कि सदयवत्स न अपने बसाये हुए नगर म वीर जिनश्वर के मदिर की प्रतिष्ठा चतुर्थी की सवत्सरी मनाने वाले कालकाचाय के हाथो से करवाई है। जन कवि ने जनाचाय कालक के साथ उसका सम्बन्ध जोडा जुटाया है। जिसने सदयवत्स को इसके पूवभव की कथा सुनाई उससे सदयवत्स को जाति-स्मरण तब हुआ। हर्षवध न के उल्लेख के अनुसार सदयवत्स ने श्रावक धम स्वीकार किया था। किन्तु केशव (कीर्तिवधन) न उसे राजस्थान म प्रचलित लोककथा के रूप में ही रहने दिया है।

परिशिष्ट १ मे प्रकाशित सदयवत्स सावलिगा पाणिग्रहण चउपई की रचना किस कवि ने की है उसका उल्लेख अप्राप्य है। प्राय उसका रचयिता जैन होना सम्भव है। कवि ने किसी प्राचीन चरित्र के आधार पर यह रचना की है। पाणिग्रहण अधिकार के प्रथम अधिकार होने का इस चउपई में उल्लेख है। जसे कि 'ए पहिलु हुउ अधिकार, कवि जोई चरित्र आधार। इसकी भाषा १६ वी शती के अत भाग की अथवा १७ वी के प्रारम्भ के होना सम्भव है।

कवि केशव की रचना केशव कवि की सदयवत्स सावलिगा चउपई की रचना (परिशिष्ट २) विप्रल भ शृगार रस में ही भरपूर है। इसमे जो छद हैं दूहा (दोहा), च द्रायणा एव कवित्त मनोवेधक है। एव सुभाषित, अन्योक्ति अर्थान्तरन्यास कहावतें, और मुहावरा के द्वारा काव्य रसपूण बनाया है। कवि ने कडी ४५४, ४५५, ४५८, मे वस्तु निर्देशात्मक मगलाचरण किया है। (पृ० १३५) और अत मे फल

श्रुति दी है।

पूर्वभव का कथानक—मस्तून कथानक में पूर्वभव की कहानी दी गई है। यह कीर्तिवधन की चउपई में नहीं है। सम्यवत्स एवं सावलिंगा के प्रेमी युगल का सम्बन्ध नायक एवं नायिका के रूप में है। इसमें पराक्रम की कोई भी बात नहीं है। केवल पुष्पावती के राजा को पद-दलित करके सावलिंगा को सम्यवत्स प्राप्त करता है इतने पराक्रम का ही उल्लेख है। परन्तु इसमें कुछ अद्भुतता नहीं दिखाई देती। सम्य वत्स शौयवीर के रूप नहीं दिखाई देता, किन्तु प्रेमवीर के रूप में दृश्य मान होता है।

सदेवन्त सावलिंगा के आठ भव की कहानी कवि या लेखक इस कहानी के रचयिता का पता नहीं चलता।

कथानक का प्रारम्भ जग माता पारवती जी ने वनलीला देखने का हठाग्रह किया। इसलिए भगवान शंकर उनको साथ में लेकर वन में चल आये। रास्ते में एक नारियल नामक प्राचीन वाव देखने में आयी। तृषा लगी हुई थी जिसमें पार्वती जी ने भगवान शंकर से पानी लाने के लिये प्रार्थना की। शिवजी ने प्रार्थना सुनकर पानी लाकर दिया। सती उमा पानी पीने की तयारी करती है कि वहा शिर उठाने पर एक नर एवं मादा बंदर की जोडी देखी। पार्वती ने भगवान शंकर से पूछा कि ये बन्दर कौन से विचार में इतने मग्न हो गये हैं। शिवजी ने उत्तर दिया कि यह बात बहुत लम्बी चौडा है, छोड दो इसे। उत्तर सुनकर वह रूठ गयी और मारे क्रोध के जब भगवान शंकर के शिर के बालों में छुप गई। तब आखिर में शिवजी वह बात सुनाने के लिये तयार हो गये।

अष्ट भव के नाम (१) ब्राह्मण-ब्राह्मणी (२) चकवा चकवी (३) हिरन हिरनी (४) मयूर ढेलणी (५) हंस हंसी (६) राजा रानी (७) बंदर-बंदरी, और बाद में (८) नर-नारी

पहले भव की कहानी ब्राह्मण ब्राह्मणी धारापुर नामका एक देहात था। उस गाव मे दो ब्राह्मण रहते थे। दोनो निसन्तान थे। जिससे उन्होंने वनमे जाकर तपश्चया की। ब्रह्माजी प्रसन्न हुए दोनों को वर दिये। एक को पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ दूसरे को पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई। योग्य उम्र होने ही इन दोनो की शादी हो गई। युवक शादी के बाद विध्याध्ययन करके घर वापस आ रहा था। रस्ते के बीच मे ससुरसे भेट हुई वह जामाता को अपने घर ले आया। कुछ दिनो तक वह ससुराल म रहा। और बाद में ये दोनो पति पत्नी (युवक युवती) अपन घर जाने के लिय निकल पडे।

किंतु रास्ते में ऐसी घटना घटी कि इन दोनों की तृषातुर अवस्थामें मृत्यु हुई। पार्वतीजी ने भगवान शकर से प्रार्थना की कि प्रभु इस जोडी को जिन्दा कीजिये। तो शकर भगवान ने कहा कि अब ये लोग कृपा करने के योग्य नही हैं। फिर भी पार्वतीजी ने हठाग्रह धारण किया और उन्हें जिन्दा करवाया।

यौवन के मद मे मस्त बने हुए ये भट भटाणी एक शिवालय मे आये। विषयवासना बढ गई, इसकी तृप्ति करने के लिये देवल मे जो शिवजी का लिंग (मूर्ति) था उसको उखाडकर कही बाहर फेंक दिया और अपनी मनोवाञ्छा पूर्ण की। इस अयोग्य और नराधम कृत्यसे भगवान शकर क्रोधित हो गये और श्राप दिया कि तुम्हें सात भव (अवतार) तक वियोग सहना पडेगा।

शकर भगवान का श्राप सुनकर ये दोना काशी में करवट लेने के लिये निकल पड़े। रास्ते में एक गाव आया भट। (युवक) सुराक की तलाश में गया। जब वापिस आया तब देखा तो पत्नी का पता नही था। अब क्या करे। इसलिये उसने काशी (वाराणसी) जाकर गल पर करवट लगवा दिया और मौत के शरण हो गया।

जब भट्ट सुराक की तलाश में गया था, उस समय वहा एक राजा आया और भट्टाणी का अपहरण कर गया। वह स्त्री रात्रि के समय

चुपचाप राजा के पंजे में से छूटकर निकल पड़ी। और उसने भी काशी (बनारस) की राह पकड़ी। और गले पर करवट लगवा दिया। इस लोक को छोड़कर चली गई।

कहानी दूसरी, चकवा चकवी—किसी एक जंगल में एक पेड़ पर एक चकवा और चकवी रहते थे। उसी जंगल में एक बार अचानक अग्नि संचार हो गया। दावाग्नि का भीषण कांड शुरू हो गया। और जिस वृक्ष पर ये दोनों पक्षी रहते थे वह वृक्ष भी जलने लगा। किंतु दोनों को ऐसा लगा कि हमें आश्रय देने वाला वृक्ष जल जाय और हम यहां से भाग छूटें। यह बात ठीक नहीं है। ऐसा विचार करने से दोनों पक्षी भी दावाग्नि में आग के शोलों से जलकर भस्म हो गये मर गये।

कहानी तीसरी, हिरन और हिरनी की—एक जंगल था। वहां एक हिरन एक हिरनी रहते थे। वे वन में घूमते थे और अपना गुजर बसर करते हुये आनन्द से जीवन व्यतीत करते थे। उस जंगल में एक बार एक पारधी आया उसने हिरनी को फंसा दिया, हिरनी ने बहुत आक्रन्दन किया। हिरनी का आक्रन्दन सुनकर उस शिकारी के मन में दया उमड़ पड़ी। उसने हिरनी को मुक्त कर दी। अब तो हिरनी अपने पति हिरन की खोज में निकल पड़ी। किंतु रास्ते में एक पहाड़ के पास हिरन को मृत अवस्था में पाया। हिरन की मृत्यु देखकर उसने भी अपना शिर पटककर मृत्यु से भेंट की। वह भी चल बसी।

कहानी चौथी, मयूर ढेलणी—इस कहानी के बारे में कुछ लिखा गया प्राप्त नहीं होता।

कहानी पाँचवी, हंस और हंसी की—हंस एवं हंसी की एक जोड़ी जंगल में रहती थी। उनकी रहने की जगह पर एक बार एक सांप आया। और उनको निगल जाने लगा। किंतु दैवसंजोग से उनके कर्णपट पर भगवान का नाम सुनाई पड़ा। दोनों की मृत्यु हुई। किंतु इस पुण्य के प्रभाव से अगले जन्म में (भव में) ये दोनों राजा एवं रानी के रूप में अवतरित हुये।

कहानी छट्वी राजा और रानी एक नगर था उसका याम दैयपुर। वहाँ के राजा का नाम था मालवाहन और रानी का था दुम ति उनके पुत्र का नाम था वल्लभ।

एक दूसरा रायपुर नाम का नगर था। वहा सुव्रत नाम का राजा था। उसकी गुणवन्ती नाम की एक कन्या थी। उसके पिताने उसका विवाह सबध किया था वल्लभ के साथ। किंतु उसकी मा भाई और चाचाजी ने अलग २ स्थान एव अलग २ व्यक्तियो के साथ सगाई कर दी थी। खूबी यह थी कि इन सब रिश्तेदारो ने शादी की तिथि जो निश्चित की थी वह एक ही थी।

शादी के दिन चारो वर वरात लकर सजयज के साथ आ गये। राजकुमारी आश्चय में पड गई। शादी किसके साथ की जाय। क्योकि यहा तो एक के स्थान पर चार चार वर आये हैं। इससे उसके मनमे बहुत दुख हुआ। अपनी जिदगी पर नफरत आयी और वह अग्नि मे जल गई। दुनियां से विदा ली।

शादी करने के लिय जो यहा चार वर आये थे। उनमे से एक वर ने कुवरी की मृत्यु से अपनी बलि दनी। दूसरा कहीं भाग गया। तीसरे ने उसकी हड्डिया की राख गगाजी मे बहा दी। चौथा वल्लभ था उसने उसका पिंडदान दिया और पिंड भक्ष्य करने लगा।

जो व्यक्ति भागकर दूर देश चला गया था। उसके हाथमे अकस्मात एक अमृत का घट आ गया। उसको लेकर वह जिस जगह पर राजकुमारी जल गई थी, वहा आया। और राख के ढेर पर अमृत का सींचन किया। फलस्वरूप वह राजकुमारी एव उसक साथ जलजानेवाला राजकुमार दानों जीवित हो गये। बाद मे चारो के बीच म लडाई शुरू हो गई।

इन लोगा ने इस लडाई का फैसला करन के लिये एक पच चुना। और पच से न्याय करने की प्रार्थना की। क्योकि पच मे परमेश्वर का निवास है। पच ने सारा हाल सुन लिया। बाद मे फसला दिया कि

राजकुमारी को जिसने जिन्दा किया है वही उसका पति हुआ। नदी मे साथ बहानेवाला पुत्र हुआ। जु बरीरे साथ जलजानेवाला तथा उसके साथ फिर जन्म लेनेवाला उसका भ्राता होगा। और वल्लभ को उसका हकदार पति ठहराया गया। या आखिर मे राजकुमारी की शादी बल्लभ के साथ हुई।

विवाह के बाद कुछ समय पश्चात् ये दानों एक बार एक जंगल मे सर करने निकले। वहाँ एक बाघ (शेर) आया। वह राजकुमार का भक्षण कर गया। राजकुमारी उसकी खोज मे घूमती थी। इतने मे व० एक चोर आया उसने इस कुमारी को लूट लिया। उसने सब कुछ ले लिया। इससे दुखित होकर इस स्त्री ने एक कुए म गिरकर आत्म हत्य कर ली। दूसरे भव मे ये दोनो बदर एव बदरी के रूप म अवतरित हुये।

कहानी सातवी बदर और बदरी एक जगल म बदर और बदरी रहते थे। वहाँ से एक दिन शिव जी और पावती जी गुजरे। उस समय पावती ने बदर बदरी की जोडी देखकर भगवान शकर से पूछा कि उनके सम्बन्ध म क्या बात है। तो शिवजी ने उनके गत जन्मो की (भवो की) बाते कह सुनाई। बात सुनकर सती पावती जी ने उनको फिरसे मनुष्यावतार देने के लिये अनुरोध किया। प्रार्थना की। तो भगवान शकर ने कहा कि 'इस मुहूत म यदि यह बदर एव बदरी इस बाव मे गिर जाय तो मनुष्य रूप प्राप्त होगा।'

बदरी ने यह बात सुन ली। और पतिदेव बदर को भी अपने साथ इस बाव मे गिर जाने को कहा। किंतु ब दर ने न माना, ब दरी की बात को स्वीकार न किया। ब दरी अकेली बाव मे गिर पडी। तो शिवजी के वरसे (कथनानुसार) यह ब दरी एक सु दर स्त्रीके रूप मे पलट गई ब दर अब पछताने लगा किंतु अब पछताने से क्या होवे, "जब चिडिया चुग गई खेत। यह पुण्य क्षण तो अब व्यतीत हो चुकी थी।

इसी समय हीरासेन नाम का एक राजा अपने प्रधान के साथ वह

आ पहुचा वहाँ उसने इस रूपसु दरी को देखा । वह प्रसन्न हुआ । और उस सु दरी को रथ म बैठाकर अपने साथ ले चला । ब दर वन मे फल लेने गया था । वह वापस आ गया । स्त्री को न देखकर वह रथ के पीछे हो गया । रानी राजा से प्रार्थना की कि इस ब दर को भी साथ म ले चलिये । राजा ने स्वीकार किया । ब दर को भी साथ मे ले लिया गया । स्त्री ने छ महीने के बाद राजा के साथ शादी करने का वादा किया ।

राजा नगर मे आ गया । राजा ने इस ब दर को सुवर्ण की शृ खला से बाँध रखने की व्यवस्था की । राजा की जो एक सम्मानित रानी थी । उससे मिलने के लिये राजा जाता था । किंतु उस रानी से मिलने मे ब दर रुकावट डालता था, रानी से नही मिलने देता था । इसलिये उसने रानी के ब दर का घाट घडने की युक्ति सोच ली । किसी भी तरह से उसका इलाज खोलना चाहिये । तरकीब की गई ।

उस रानी ने इस ब दर को एक मदारी के हवाले किया । इस कृत्य स रूपसु दरी एव ब दर दोनो अप्रसन्न हुए, आखिर में रूपसु दरी ने इस मदारी को फिर एक बार आकर अपना तमाशा दिखा जाने के लिये कहा ।

छ महा की अवधि बीतने के पहले मदारी वहाँ फिर से आया उसने अपना खेल शुरू कर दिया । इसी बीच में रूपसु दरी ने अपना अमूल्य हार तोड दिया । मदारी ने उस हार के मोती (मौक्तिक) बीनकर इकट्ठे कर देने के लिये ब दर को मुक्त कर दिया । उस ब दर ने राजा की माननीया रानी से वैर लेने के लिये फलाग लगाई, किंतु वह निशाना चूक गया और मृत्यु के शरण हो गया । ब दर की मृत्यु होते ही रूपसु दरी ने भी अपने प्राण त्याग दिये और मर गई ।

ब दर दूसरे भव म सदेवत्स हुआ । सु दरी सार्वलिगा हुई । शादी की अभिलाषा रखनेवाला राजा हीरासेन धारानगरी के पदमशा सेठ के पुत्र रुपाशा के रूप म अवतरित हुआ । और प्रधान, लाल ब्रह्मभट हुआ मदारी गोरख साधु हो गया ।

कहानी ८ वीं सदयवत्स और सावलिंगा- ...

नामक एक राजा था उसके पुत्र का नाम सदयवत्स था। उस नगर के नगरसेठ पदमशाह के सावलिंगा नाम की लडकी थी। वह रूप का भंडार थी। मानो रूपराशि यहाँ खडी हुई हो। उसके रूप लावण्य या सौंदर्य को देखनेवाले मोहित हो जाते पीछे भी पड जाते। अधिक सुंदरता के कारण उसका नाम रोशन हुआ। उसके अनुपम सौंदर्य की बातें सदयवत्स ने भी सुनी इससे वह उसको दर्शन के लिये आकुल व्याकुल हो गया था। मन भी अधीर हो गया था।

एक बार एक गोरख नाम का साधु भिक्षा के लिये उस नगर के नगरसेठ पदमशाह के घर पर आया। उसने लडकी सावलिंगा को देखा, और देखकर वह मोह के कारण मूर्छित हो गया। इतने में उसका गुरु भी वहा आ पहुचा। और उसको वहा से ले गया इस गडबडी में सदयवत्स भी वहाँ आ गया। और उसने अपने मित्र लाल बारोट (ब्रह्मभट) से पूछा कि यहा सावलिंगा कौन है और कहा है?

ब्रह्मभट लाल ने उत्तर दिया कि अगर सावलिंगा के दर्शन करने हैं तो यह काम यहाँ नहीं बनेगा। किंतु एक रास्ता है कि आप उस स्थान पर चले जाइये कि इस नव डेरी पर सावलिंगा गीत गरबी गाने के लिये आती है वहां आप जावेंगे तो दर्शन होंगे। सदयवत्स वहां पहुच गया। वह स्त्रीमंडल के बीचमें जाकर खडा हो गया। और सावलिंगा से कहा कि "अरी तू तेरे घू घटका ओजल दूर कर दे और तेरा मुखचंद्र दिखा दें।" तब सावलिंगा ने उत्तर दिया "कि मैं जिस शालामें पढती हूँ उस शाला मे आना।"

यद्यपि सदयवत्स सदेवतकी पढाई खत्म हो गई थी। फिर भी पिताजी से आज्ञा पाकर वह शाला मे गया। किंतु वहाँ मेहताजी के भय से सावलिंगा ने उसको समझाया कि अगले दिन चपाबाग मे प्रीतिभोज का प्रबंध करो। उसमें मेहताजी को भी आमंत्रण भेज दो

इसमे हम मित्रों और शांति से बातें करने का मौका भी मिल जायगा।

दूसरे दिन गुरुजी को आमत्रण भेजा गया। इससे वह चपाबाग मे भोजन करने गये और सभी बच्चों को निकाल दिया और बाद म इन दोना ने एकान्त पाकर प्रेम से अनेक बाते की। दृष्टि से दृष्टि मिली और बातें करके तृप्त हुए।

किंतु यह सब प्रेम विषयक बातें गुप्त न रह सकी, प्रकट हो गई। गुरुजी को भी जानकारी प्राप्त हुई सो वे दौडते वहा आ गये। तब दोनो शर्मिंदे होकर वहा से चल दिये और जाते समय निश्चय किया कि दूसरे दिन सदयवत्स गुरुजी के बगीचे की रखवाली करने को जाय और सार्वलिंगा गुरुजी की आज्ञा से उसको भोजन देने जाय। निर्णय के अनुसार सदेवन ने गुरु जी से कहा कि आप सार्वलिंगा को भोजन देने के लिये आज्ञा देने की कृपा कीजिए ताकि आपके बगीचे की रखवाली करनेवाला भूखो न मरे। गुरुजी ने स्वीकृति देदी। और सार्वलिंगा को आज्ञा दी गयी। तो सार्वलिंगा भोजन मे बत्तीस प्रकार की सामग्री लेकर वहा गयी बात कही गयी थी भात चावल देने की किंतु वह तो भांति भातिके उत्तम खाद्य पदार्थो की सामग्रिया लेकर गयी। अधिक प्रणयकलह के बाद सदेवत एव सार्वलिंगा ने भोजन किया। दोनो ने आपस में या परस्पर प्रेम टिकाने का निभाने का वादा किया।

प्रतिदिन दोनो एक तोते के द्वारा प्रेमपत्र लिखकर परस्पर भेजते हैं। सार्वलिंगा के पिता पदमशाह सेठ ने लडकी की शादी फौरन करने क लिए निश्चय कर दिया। और रूपशाह एक बडी बरात लेकर बडे सजधजके साथ शादी करनेके लिये यहा आ भी गया।

सार्वलिंगा ने सदेवत से सदेश भेजा कि आप स्त्री का भेष लेकर मेरे महल मे आ जाना। सदेवत भेष बदल कर वहा महलमे आया किंतु वहा उसकी लीलावती नाम की ननद आ धमकी। जिससे इन दोनो में बातें न हुई। इसमे सार्वलिंगा ने सदेवत से कहा कि रात को भगवान शिवजी के मदिर म आ जाना। भला यह बात याद रखना। भूल

मत जाना।

सदेवत की पाटमदे नामक एक रानी थी। उसने पति का पर स्त्री से दूर रहने के लिए समझाया किंतु वह न माना। और उसने रानी को धमकी दी। भली बुरी सुनाई, रानी चुप हो गई।

शादी का समय हुआ तो सावलिंगा ने एक युक्ति की। ब्राह्मण देव को पोढ दिया गया, प्रपच किया गया। और सावलिंगा ने अपनी लदिगिया नाम की चेरी को अपने वस्त्राभूषण पहिना दिये और लग्नमंडप में शादी के स्थान चौरी (शादी की वेदी) के सन्मुख बिठा दी। इस तरह रूपशाह सेठ की शादी उस दासी के साथ हो गई।

रात को सावलिंगा रूपशाह सेठ के पास आयी। और घूघट के पट खोल दिया। उसका रूप सौंदय देखकर मोहित हो गया, और उसने सावलिंगा का हाथ पकड लिया किंतु सावलिंगा ने बहाना दिखाया कि मैंने एक शरत की है। प्रण किया है कि यदि मुझे रूपशाह पति के रूप मे प्राप्त होगा तो मैं अकेली आकर 'हे भगवान शिवजी तेरा पूजन करूगी। बाद मे पति से मिलूगी।'

सावलिंगा की बात सुनकर रूपशाह सेठ ने कहा कि रात का समय है और अकेली जाना चाहती हैं यह बात अच्छी और ठीक नही है। बहुत समझायी किन्तु उसने सावलिंगा ने नहीं माना। पूजन का थाल लेकर वह अकेली पैदल चलकर भगवान शकर के मदिर मे आ पहुची। सदेवत भीतर से द्वार बद करके नशे की खुमारी मे नींद ले रहा था। बहुत कोशिश की, किंतु वह किसी प्रकार से जाग्रत नहीं हुआ। इससे सावलिंगा ने मदिर पर चढकर ऊपर के शिखर को उतारकर मदिर मे प्रवेश किया। और मोह-निंद्रा मे पडे हुए उस सदेवत को जाग्रत करने के लिए अनेक प्रयत्न किये। किंतु ये सब प्रयत्न बेकार साबित हुए, निष्फल हुए। बाद मे हताश होकर उसने सदेवत की हथेली में समस्या (निम्न-लिखित काव्य पंक्तियां) लिखीं। जसे कि

"कोरे घडे [illegible] वारि का, जेने खोले आंखाएणी जार।
एवा शुकने तमो आपशा, तो मलशे सावलिगा नार।

× × ×

सुणो सदेवतराय, अमल कर्या वाकरे।
हु छु बालकुमार, जाउ छु सासरे ॥"

देह दर्द और हृदय के दर्द से पीडित होकर उसने हथेली में घाव के रूप मे काव्य पंक्तियां लिखीं। हतोत्साह हुई, और अपने घर पर वापस आ गई। तुरत वह पति के साथ पति के देश सिधार गई।

इधर सदेवन्त नींद से जाग उठा और सावलिगा का मिलन न होने से क्रोधित होकर अपने महल में वापस लौट आया। फिर उसकी रानी पाटमद ने उसको एक बनियेकी कन्यासे प्रेम करने के कारण कई अयोग्य बातें सुनाई, बहुत कुछ कोसा। महेणे टाणे लगाये। इससे क्रोधित होकर सदयवत्स ने कडी प्रतिज्ञा की कि सावलिगा से शादी करके उसको मुखिया रानी महारानी या पटरानी बनाकर छोड़ूगा। ऐसा कहकर वह अश्वशालाम पहुचा। एक अच्छा अश्व लेकर उस पर आरूढ होकर अकेला चल दिया।

सदयवत्स सावलिगा के नगर के बाहर पहुचा। उसको तृषा लगी हुई थी। हाथ मे काव्य रूपी समस्या लिखी हुई थी उसकी रक्षा करने के हेतु वह हाथ से पानी न पीकर पशु की तरह मुह से पानी पीने लगा। यह देखकर वहां की पनिहारियाँ उसकी दिल्लगी करने लगीं कि यह कोई गवार है क्या ?। किंतु वहां सावलिगा की चेरी तथा उस नगर की राजकुमारी कनकावती उस समय नदी तट पर आयी हुई थी। इन दोनों ने ताड़ लिया कि यह तो कोई चतुर बुद्धिशाली आदमी है। राजकुमारी कनकावती तो उसके दर्शन करके इतनी मोहित हो गई कि उसके मनसे निश्चय भी कर लिया कि मैं इस व्यक्ति के साथ शादी करूगी, अन्य से नही।

ससुराल मे आकर भी सावलिगा ने अपने पति के साथ बहाने बाजी

बढ़ा दी। और पति से कह दिया कि पीहर आते समय मैंने एक व्रत लिया है निश्चय किया है कि यदि मैं ससुराल में गर्भयुक्त पहुंच जाऊंगी तो मैं सात दिन तक अपनी शय्या में नींद लूंगी।

पति रूपशाह ने इस बात को सत्य मान लिया। इस घटना से हमारे देश में उस समय समाज में व्रत मानना के विषय में कितनी दिलचस्पी थी इसका पता चलता है। कितना था प्राबल्य व्रतों के विषय में इससे हमें दर्शन होते हैं।

अब तो सदयवत्स ने एक मालन को साथ लिया और उसकी सहायता से सावलिंगा से मिलने का निर्णय किया। सावलिंगा ने मालन से कहा कि तुम सदयवत्स को साधु का भेष पहनवा कर मेरे महल में जरूर भेज देना।

अब मालन उस नगर की राजकुमारी के यहां चल दी। और पहुंची कुमारी के महल में। राजकुमारी कनकावती ने भी मालन को कुछ लालच दिया। और कहा कि यदि तू मेरी शादी सदयवत्स के साथ कराने के काम में सहायता प्रदान करेगी तो मैं जिन्दगी भर के लिये तेरी ऋणी रहूंगी तेरे उपकार को न भूलूंगी।

मालन दोनोंके संदेश लेकर सदेवतके पास आयी और राजा सदयवत्स से कहा कि मैं सावलिंगा के साथ आपका मिलाप करा दूंगी। किंतु साथ ही मैं भी आपसे एक वर चाहती हूं, सदयवत्स ने कहा क्या कह दो। मालन ने कहा कि यदि आप मेरी बात के साथ सहमत होते हैं तो मेरी शरत यह है कि यहां के राजा वीरमदे की राजकुमारी कनकावती है उसके साथ भी शादी करनी पड़ेगी। है यह शरत मंजूर? राजा ने शरत को स्वीकार कर लिया। हां भर ली। क्योंकि उसका मन सावलिंगा से मिलने के लिये अधीर हो रहा था। जिसके फलस्वरूप उसने यह शरत स्वीकार ली।

अब राजकुमारी कनकावती ने दूती मालन के द्वारा सदयवत्स के मनोभावों की सारी जानकारी प्राप्त कर ली। और अपना निश्चय

सदयवत्स के साथ शादी करनेका यह उसने अपने पिता वीरमदेसे सुना। इस बात को राजा ने स्वीकार भी कर ली। साथ ही पितासे सार्वलिगा की सब बातें कह सुनाई। और उनका निश्चय भी बतला दिया। राजा ने इस काय में सहायता देन के लिए हा भर ली।

अब राजा ने सार्वलिगा की शादी के विषयमे निणय करने के लिए रूपशाह सेठ को अपने पास बुलाया और सारी बातें बतला दी। रूप-शाह को भी अब पता चला कि सही रीतिसे उसकी शादी भी सार्वलिगा के साथ नहीं हुई है एक चेरी के साथ हुई है। दूसरा पता यह चला कि सदयवत्स एव सार्वलिगा इन दोनो की परस्पर अत्यन एव हृदय से भी चाह है। ये सारी बातें जानकर उसने सार्वलिगा को सुपुद कर देनें की सम्मति देदी। सदेवत को दे देने की भी रूपशाह ने हा भरी। अब राजा वीरमदे ने एक बडा लग्न महोत्सव निश्चित किया और सदेवंत के साथ ये दोनो स्त्रिया सार्वलिगा एव कनकावती की शादी कर दी।

कुछ समय यहा बिताकर राजा सदेवत दोनो रानियो को साथ मे लेकर बडे सजधज के साथ अपने देश वापस लौट आया।

राजा शालिवाहन को पता चला कि पुत्र आ रहा है। यह जानकर वह बडा प्रसन्न हुआ और बडी धूमधाम से लेने के लिए सामने गया।

सदयवत्स की मा भी उमग म आ गई। उसने भी अपने बेटे को कि जो दो रानियो से शादी करके आया है, पाख (शादी की विधिके अनुसार) लिय। सदयवत्सने निणयानुसार इन तीनो रानियोंमेसे सार्वलिगा को पटरानी के पद पर स्थापित करके प्रण पूण किया। सदयवत्स ने कई वर्षो तक सुख से राजकाज किया। खाया पिया और मौज-मजा तथा शान्ति एव आनन्द मे जीवन व्यतीत किया।

प्रबन्ध में सामाजिक जीवन-नृपति एव प्रजाजनोंके बीचका स ब ध बहुतायन से नगरा म एव राजधानी म भी सदवर्ताव एव प्रेम भावना से युक्त रहता था। फिर भी राजा की अमाप सत्ता के सामने प्रजाजनों का कुछ बस नही चलता था "राजा किसी का मित्र नहीं'

ाचीन सुभाषित के अनुसार, सदयवत्स के पिता प्रभुवत्स का आचरण या
नीच कथानक को नया मोड़ देता है। एक दिन पुत्र के पराक्रम पर
तुष्ट होने वाले पिता दूसरे दिन प्रधान मंत्री के षड्यंत्र शिकार बनता
। स्वयं युवराज-पद पर स्थापित किये गए पुत्र को (राज कुमार को)
राज्य की हद छोड़कर चले जाने की आज्ञा देते हैं। यदि
राजा किसी पर संतुष्ट (प्रसन्न) होता है तब उसे पसाय (सं प्रसाद)
देते थे।

राज्य की कार्यवाही में-अनेक प्रकारके प्रपंच एवं षड्यंत्र की कार्यवाही चलती थी, यह बात हम प्रधान के षड्यंत्र (पृ० १४) की कार्यविधि से ज्ञात होती है। बहुतायत से राजा लोग निष्क्रिय रहते हैं। , क्षणतुष्ट एवं क्षण रुष्ट ऐसी राजा की उन्नत भावनायें भी गणना पात्र हैं ही। प्रभुवत्स राजा को प्रजाजना ने जो चीजें प्रदान की थी उनका राजा ने स्वीकार भी नहीं किया था। किंतु वापस लौटा दी थीं। (कडी ३९१)

न्याय देने की पद्धति का दर्शन सदयवत्स राजा एक प्रसंग देता है (पृ ६४) वहाँ होता हैं। खास करके कानून के चक्कर में पड़ने के बजाय सरल समझदारी एवं व्यावहारिक बुद्धि का प्रयोग करके ही न्याय का फैसला या निर्णय लिया जाता था।

त्यौहार या उत्सव प्रसंगऊपर नगर जनो द्वारा नगर की जोसजावट या शृंगार व वंदनवार होता था इसका भी कवि ने सुंदर बयान दिया है। (पृ १२ १३)

नगर मे एक ओर जैसे गणिकागृहो की अनिवार्यता देखने मे आती है, वसे दूसरा ऐसा अनिवार्य स्थान द्यूतस्थान (जू ठाण) प्रख्यात गिना जाता था ऐसा हमे पता चलता है (कडी ४०१) द्यूतस्थान द्यूत के क्षेत्रीय अखाड) राज्य-सम्मत गिने जाते होंगे ऐसा प्रतीत होता है। प्रसिद्ध जुआरियोंके नाम भी कविने अंकित किये है। (कडी ४०९-४१०)

वर्ग ही प्रसिद्ध वारांगनाओं के नाम भी (कडी ५४२, ५५२) क्रमबद्ध एवं ब्यौरेवार गिनाये हैं। आधुनिक युग के जिसकी गणना समाजमें होती है और इस समाजमें जितना महत्व का गिना जाता है उतना प्राचीन समय में गणिका एवं द्यूतका स्थान होगा ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

महाजन श्रेष्ठियोकीसत्ता-नगरों में उनके व्यापार के क्षेत्र में अबाधित रूप में रहती थी। उस समय के प्रचलित श्रेष्ठिया के नामों की जानकारी भी हमें प्राप्त होती है। (कडी ५३०, ५३५)

बारहट्ट और ब्रह्मभट-या बारत का स्थान राजा एवं प्रजा के बीच में संयोग जोडने वाली शृंखला के समान था। किसी भी व्यक्ति के लिये वह 'प्रतिभू' यानी Surety किंवा प्रतिनिधि बन सकता था और वह राजमान्य भी गिना जाता था। (पृ० १२) सावलिंगा को बहिन (भगिनी) समझकर एक गाव का बारहट्ट कि जिसको राजा ने पसाव (ग्राम) प्रदान किया था और वह उसका उपभोग भी करता था। उसने पाच दिनके लिए आश्रय दिया था। यह उसका उदात्त चरित्र उदाहरण नीय जान पडता है।

राजा की आज्ञा का पालन करने वाले-तलार ओलग (सेवक) उपस्थित रहते थे। (पृ० ८८-८९) दंड के भेदों में शूलि, अंग-च्छेद एवं कारागृहवास जेलखाना इतने भेद जानने समझने के लिए प्राप्त होते हैं।

आत्महत्या इसके उपरांत स्वेच्छा से लोग संसार असार जानते ही जीवन से तंग आकर काशी में जाते थे, और वहां करवट लगवाकर जीवन समाप्त करते थे। इसके द्वारा समाज की पूर्वजन्म के प्रति कितनी अडग श्रद्धा रहती थी इसका हमें दर्शन होता है। मालवा प्रदेश में शिक्षा के रूप में किसी धातु या सिक्का गरम करके निशानी कर दी जाती थी ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

आदि पृष्ठ । सदयवत्स वीरप्रबंध । लिपि संवत नहीं है । प्राच्य विद्या मंदिर, बड़ोदा ।

कवि भीम विरचित

श्री सदयवत्सवीर प्रबंध[1]

ॐ नम । श्री शारदाय[2] नमः । श्री सद्गुरुभ्यो नम ।

[मङ्गलाचरण]

(गाहा)

माई महामाई-मज्झे, बावन्न वन्न जो सारो ।
सो बिंदु ओंकारो, स ओंकारो नमस्कारो ॥ १ ॥

जिण रचीय आगम निगम, पुराण सर अक्खराण विस्तारो ।
सा ब्रह्माणी वाणी, पय[3] पणमवि सुपय मग्गेसु ॥ २ ॥

गयवयण गवरीनंदण, सेवइ सुहकरण असुह अवहरणो ।
बहु बुद्धि[4] सिद्धिदायक, गणनायक पढम पणमेसु ॥ ३ ॥

गुरु लहुय जि केवि कवियण, सरस-सुअत्थ सुच्छद-बंधयरा ।
एकत्थ[5] ताण सव्वे, करजुअल जोडि पणमामि ॥ ४ ॥

[नव रसात्मक सदयवत्स प्रबंध]

सिंगार हास करुणा, रुद्दो वीरो भयाण वीभच्छी ।
अद्भुत सत नवइ रसि, जसु जंपिसु[6] सदयवच्छस्स ॥५॥

---

१ सुदयवत्सवीर चरित्र' अ, 'सुदयवच्छचुपइप्रबंध' आ २ 'वीतरागाय नम ' आ ३ 'पय पूजवि हूंय मग्गेसु' आ ४ 'लधि', 'बधि' आ ५ 'एकत थाणि सव्वे', अ ६ 'बपिस', आ

[सदयकुमार परिचय]

(छप्पय)

मालवदेस-मज्झारि, नयरि ऊजेणि अणोपम[1] ।
पहु पहुवच्छ नरिंद, नारि[2] बहु लच्छि लच्छि-सम ॥
सिह सुअ सदयकुमार, सवल सामलि भत्तारह ।
साहसि[3] पवर प्रसिद्ध, जय जगि जयत जूआरह ॥
खित्ततणि[4] खित्तीय सोहकर, रायरीति धीर[5] जि विबुध ।
इम[6] भणइ भीम तस गुण थुणिसु, जो हरसिद्धि वर लवध ॥६

[उज्जयिनी नृप प्रभुवत्स]

(गाहा)

ऊजेणि अवणि-मज्झे, नयरीवर[7] नयर सयल-सिंगारो ।
तेणि पहू पहुवच्छो, पत्थतह पूरए अत्थो ॥७॥

[नगरी निवासी ज्योतिषी विप्र]

तिणि नयरि एक निवसइ विप्पो विज्जा निहाण चउवेई[8] ।
जोइसिव कला-कुसलो, निद्धण कणवित्तियाजीवी ॥८॥

तस घरणि इक्क अवसरि, अलय मत कत एक तस्स ।
"पिय ! पहुवच्छ नराहिव, पच्चूसे[9] पत्थि हो पत्थि' ॥९॥

मनि धरवि घरणि वयण, विप्पो सपत्त[10] राय अत्थाण ।
लेई अक्खय करपत्त, आसीय वयण पयासिय तस्स[11] ॥१०॥

---

१ 'निरुपम' आ २ महिल आ, 'बहुलच्छि' अ ३ 'साहसि जसि' अ ४ 'खत्ततणइ खत्तीय' आ ५ 'वीररति विबुर नर' आ ६ 'कवि भाम तासु गुण बखवइ, जा हरसिद्धि लवधवर आ ७ 'नारींवर' आ ८ 'चउवेयो' आ ९ 'पच्छमे पत्थि हो पत्थि' अ १० 'उपन्न' अ ११ 'अथ्याणो' आ

[आशीष वचनाथ राजसभा-गमन]

(दूहा)

विप्प[1] सुविज्जउ ऊनखिउ, कीउ पहुवच्छि[2] प्रणाम ।
आदरि आसण अप्पीउ, 'कहिन[3] देव ! कुण ठाम ?" ॥११॥

(छंद पद्धडी)

पहु[4] प्रछइ जपइ विप्पराउ
सुणि[5] नरवर ! अम्ह ऊजेणि ठाउ" ।
"दिन एता दिट्ठि न दिट्ठ देव !
त काई कारण ? कहिन हेव" ॥१२॥

"जा लगइ कुकम्म-वसि हुइ कोई,
ता सुपरिस-सरिसी भेट न होइ ।
जव टलिउ देव ! दारिद्दु भाउ,
तव पामिउ मइ पहुवच्छ राउ'" ॥१३॥

[प्रभुवरस वचन]

(दूहा)

विप्प-नयणि राउ रजिउ पूछइ वलीअ विगत्ति ।
"कवण कना गुण तू[6] अ तणइ? कवण तुज्झ[8] कुल वित्ति ?[9] ॥१४॥

[विप्र वचन]

(वस्तु)

विप्प जपइ, विप्प जपइ "निसुणि नरनाह !
जयवती ज्योतिष कना, कुलकम्मि अम्ह अच्छइ अगगइ ।

१ 'पहुणा' आ २ 'सवि जउ' आ ३ 'कहुन' आ ४ 'पहु पूछिउ' अ ५ 'सणि' आ. ६ 'काइ' आ ७ 'तदुम' आ ८ 'शुन' आ ९ 'वित्ति' आ

परणारउ[1] संवच्छरह, तह जम नवि विति सम्मह ॥
जं गुरुहिं जं तरुयरहि, जं जं दुह पावानि[2] ।
नरवर ! तिम मंदिर पिरू, तं जाणू तिणि वानि ॥१५॥

(दूहा)

विप्प तणइ वनि वड वसति, वमिउ राउ मनि रोग ।

[वसुमति वचन]

"ज समण ! तू[3] वरसिउ, तं[4] जाणिगु तू य जोग " ॥१६॥

तिणि[5] पवसारि प्रणामि रहिउ, गनि गज्जइ गजराउ ।

[ज्योतिष शास्त्र परीक्षा । गजराज जयमंगल आयु प्रश्न]

"जयमंगलु[6] जयमंगलह, एह कहि, केतू[7] याउ ?" ॥१७॥
मगा लेईं[8] तव तामिणि, कहिय सही करि कल्लि ।

[जयमंगल समादेश वचन]

"जइ पूछिसि पहुपच्छ पहु, मरइ ति यु जर कल्लि !" ॥१८॥

यभणुं ये रइ बोलडइ, राउ चमक्किउ चित्ति ।
"जउ यु जर कल्लि नवि मरइ,तउ तू म कहि,पुण गत्ति!॥१९

यागइ एक मणजाणता तइ यह बोलिउ बोल ।
या तिहै पाहिइ अधिक, जाणइ निरस निटोल" ॥२०॥

विप्प भणइ "नरवर ! निसुणि, देव मदु छि मनत ।
वे जयमगल हत्थीउ, तेम थिइ दिणि यत ॥२१॥

---

१ 'वरतक' मा २ 'वैयाक' य ३ 'तइ य ४ 'तिउ जाणिउ दू बोल' मा ५ 'तोणि' मा ६ 'जयमतु' मा ७ 'किग्रू' मा ८ 'विइत बहुत तीपाईं' य , 'स' मा ।

चिहुँ दिसि चिहुँ थम्भे सरिस, जइ वहु वघणि बद्ध।
तोइ वि प्रुहरे [वभरण भरणइ] "चल्लइ मत्त मदघ ॥२२॥

गरूग्र गुफा मल मुहिरइ, चिहुँ पक्खे पुतार।
इम रक्खतइ राय! सुणि, वि पुहरि मडइ मार" ॥२३॥

[प्रभुवत्स नृप कोप कथन]

(वस्तु)

राउ जपइ राउ जपइ "वयण नितुरिण[1] विप्प।
मुझ परत या पुव्व लगइ, अधिक उन्ठ वोलइ स वारु।
अलीग्र न चल्लइ अम्ह-तणइ, सच्च होइ तुह कज्ज सारु।
जउ वभण! वि-पुहर-समइ, मत्त न मोडइ खंभ।
तउ तू[2] आगा तिलयनइ ठामि दिवारिसु[3] इम ॥२४॥

(चउपई)

"जउ जोसी! तू ज्योतिप साच, तउ थिर थापउ माहरी वाच।"
[फलादेश मिथ्या करणोपाय]
इम बोली तुरी पाठविउ, राइ गज राखण आठविउ ॥२५॥

एकि भणइ "ए वाभण[4] बूड", एकि भणइ "ए[5] काचउ कूड"
एकि भणइ "ए पडिउ अपाइ किम छूटेसिइ राखिउ राइ ?" ॥२६॥

गज-पाखलि पायक सइ पच, ते[6] पुतारि भुणइ प्रपच।
तीह आपी आंकुस नइ आर, राइ[7] मेल्हया राखणहार ॥२७॥

मत्ता-पाखलि पुहरा पडइ, एकि आकुस लेई ऊपरि चडइ।
इणइ[8] परि राखिउ सघली राति, पुहलउ तिहा पहुवन्छ प्रभाति॥२८

---

१ 'निर्गुणि वर विप्प' श्रा २ 'तल तणइ' म ३ 'दिवारिसु' म ४ 'बूठ' म ५ 'कीधउ' श्रा, ६ 'जे' म 'कुणइ प्रपच' म ७ 'घूणी घणा पाड्या पुतार' श्रा ८ 'इम रख्यू गज' श्रा

[विशेष गज रक्षण प्रबंध]

घलो अधिपि बधाविउ बंधि, सवा भार लोह-संकल कंधि ।
नवि सलसलो सकइ थिउ ठामि, किरि[1] चित्र कि लिखिउ
चित्रामि ! ॥२९॥

राई तइ तेडया पुतार, "रे ! रूडि-परि करिज्यो सार ।
गाढा थई रासउ[2] गजराज, यामणि वि पुहर लहिणा आज" ॥३०॥

[उच्छृङ्खल गज गमन]

इम करता सिरि आविउ सूर, गज चालिउ पावरिमतू पूर ।
धाइ घसइ अनइ घडहडइ, किरि आसाढि अंबर गडगडइ ॥३१॥

श्रोडी सकल मोडया खंभ, चुहुटइ चालिउ गरूआरंभ ।
नवि लेखइ[3] आकुस नइ आर घूणी धरा[4] पाडया पुतार ॥३२॥

[उन्मत्त गज पथ विहार परिणाम]

गजि चउहटइ जई मंडिउ गाह, पान-तणा सवि लाध्या लाह ।
फूल तणा तिहा पूर्या पगर, मइगलि माथइ कीधउ नगर ॥३३॥

पुहुतउ श्रेणि सुगंधी-तणी, राज वस्त मेनी रेवणी ।
लाखइ केसर अनइ कपूर, वास्या तेल वहाव्या पूर ॥३४॥

[भीष-संभ्रम]

तीणइ दीठइ दोसी दडवडइ, पारिखिने पगि पीडी चडइ ।
फडीआ फोफनीआ सोनार,[5] नाठा लोक न जाणइ सार ॥३५॥

हाट माहि थिउ हानकनोल, किरि कमलापति करइ कलोल ।
पोता लाध्या पारिखि-तणा, कापडि सरिस किरिआणा घणा ॥३६॥

---

१ 'जाणे गज लखीउ चित्रामि' प्रा २ राख्यो' प्र ३ 'मानइ' प्रा ४ 'धरि प्रा ५ 'सूनार' प्रा

एकि अटालि मालि गढि चडइ, एकि पागरि दह दिसि दडवडइ ।
एकि[1] छावडा अछइ छडछोक,ते सीकिइ[2] -थ्या लूसइ लोक॥३७॥

गिउ गयद सुर-हटनी वाट, तिहा[3] मदिराना दीठा माट ।
मधु महुअडा द्रवणि जस द्राख, ते गजवरि आरोग्या लाख[4] ॥३८॥

आगइ पचायरण पाखरिउ, आगइ पन्नग पखावरिउ ।
आगइ गज अ गि जमदूत, वली वारुणी भावि थिउ भूत ॥३६॥

सु डाहल पूरइ परचड, दतूसल जाणे जमदड ।
पाडइ विसमा पोलि प्रासाद, नर नारिनू[5] ऊतारइ नाद ॥४०॥

[गजनियन्त्रणे नपागमन]

राउ असवार थई थिउ[6] केडि "जे भड भला ते वहिला तेडि ।
जे प्राणी बधइ[7] गज ठामि, तेहनइ आपू गाम अनामि ॥४१॥

आपउ अ ग-तणउ शृ गार, आपू एकाउलिनउ हार ।
आपू अधिक वली पसाउ, जे बलीउ बधइ गजराउ' ॥४२॥

एकि भणइ 'आघो थाईइ', एकि भणइ 'जमपुरि-जाईइ' ।
एकि भणइ वरि रूसइ राउ, सरसिइ[8] एहना पखइ पसाउ'॥ ४३॥

[ब्राह्मण मीमन्तिनी गृहागमन प्रसग]

नव[9] बारहि नयर ऊजेणि, नितु नव नवा महोत्सव तेणि ।
बभण एक तणइ तिणिवार, आघरणि अवसरि जयकार ॥४४॥

गयगामिणी धवल-धुरिण करइ, चारु विप्प वेद्र उच्चरइ ।
मस्तकि मेघाडवर छत्र, वाजइ पन्च शबद वाजित्र ॥४५॥

भरीय सेसि सइ हथिइ माई, पीहरि—थी पस पूरइ जाई ।

---

१ 'जे छा छडा पगइ छड छोक' आ २ 'पाछलि' आ ३ 'मन्दिरा-पूर्या आ ४ 'राय' अ ५ 'नचनारिद' अ ६ 'त्रिव' आ ७ 'बघइ बलीउ' आ ८ 'रडिसिइ' आ ६ 'नव बाहरि' आ

[अपशकुन परम्परा]

जां[1] घडि चालइ पहिलइ पाइ, ता भाडी ऊतरइ बिलाइ ॥४६॥

खडको खूली चानो बाट, जानों वाडि बिलागू घाट ।
जा[2] घाटइ बिच्छोडी वाडि, ता तरु-मइ नी छीको बिलाडि ॥४७॥

धग खचीनइ पाछो वलीइ, सूकइ काठि काग किलगिलइ ।
घनइ अनेरा हूई असुण, तिहना कारण जाणइ कुण ? ॥४८॥

एकि भणइ 'एह पडिसि आम',[3] एकि भणइ एह गलिसिइ गाम ।
एकि भणइ 'एह हवडा हाणि,एह असुण तणइ परमाणि'॥४९॥

[गजराज कृत सीमन्तिनी ग्राह]

गजर सुणी गज लिहा थउ बलिउ, पेखणहार लोक सहु पलिउ ।
सगू सणीजू गिउ सहू वही, विप्र-घरणि[4] गयवरि ग्रही ॥५०॥

इम साही सु डिहि कडि यत्रि, जाणे लाठि[5] लगाडी मत्रि ।
नवि मेहल्हइ नवि मारइ मत्त, पेखइ राइ राणा राउत्त[6] ॥५१॥

[सीमन्तिनी-पतिकृत मोक्षव्यापना]

(छन्द पद्धडी)

तव भाविउ धाइउ[7] ति नारी-भरतार,
वु वारव नमण करइ अपार ।
"को सुभट शूर साहसिक शुद्ध[8]
को धीर वीर वसह विशुद्ध ? ॥५१॥
कोइ जाइउ चउदिसि चपल अग्र ?
को अकल अटल आहवि अहग ? ।

---

१ 'ढेडि बोलइ' आ 'आगलि' आ २ 'जा घाटक कु च डीगो वाडि र्ता न रमइका छीक निलाडि' आ० । ३ 'पडिसि' अ ४ 'नारि वराहरि' अ ५ 'साटि अ ६ 'सामत' आ ७ तिहि' आ ८ सिद्ध' आ

काइ खित्तीग्र खल-खडरा समत्थ ?
को अछइ छयल खिति खग्गहत्थ ?" ॥५३॥

[मार्गे कुमार सम्यक्‌सागमन]

इम करतउ जउ जुवटइ जाइ,
पूछिउ[1] ताम पहुवच्छ-आइ ।

[सदयवत्स वचन]

"देव ![2] दया कर, कुरा दूहवइ तुज्झ ?
थिर थइ भिइ-काररा कहिन मुज्झ ॥५४॥'
कुणि मारिउ ? डारिउ ? हरिउ रिद्धि[3] ?
कुणि लूसिउ ? लीधउ ? तू कहिन सिद्धि ?"

[विप्र रक्षण-याचना]

तीरिण वयरिण विप्प गौर्ग[4] विहलमुच्छ,
"करि वाहर स्वामी सदयवच्छ ! ॥५५॥

(दूहा)

ग्राघरणि ग्रवसरि घरणि, ग्रावती ग्रावासि ।
मारगि ग्रबला एकली, पडी महागज-पासि ॥५६॥

जम-मुहि किस्यू[5] जीवीइ ?, चतुर ! विमासिन चित्ति ।
सदयवच्छ ! सा बभिरणी, मारीय हुसिइ मत्ति !" ॥५७॥

[वीर सदयवच्छ मत्तगजाक्रमण]

(छंद पद्धडी)

तव धायो धू बड घसमसत,
किरि ग्रावइ केसरि करि[6] कसत ।

१ 'तिहा पूछीय' ग्रा २ 'दव देव म करि' ग्रा ३ 'ग्ररथि' ग्रा ४ बयु बुहम पुछ ग्रा ५ 'केतू' ग्रा ६ 'कसकसत' ग्रा

यर्यरीय मटि मलनि[1] मानि,
मानिगु[2] मोर ड्ड मृगुटि मानि ॥५९॥

गयमत[3] रत्तू जव दिट्ठ दिट्ठि,
तव मांगमर बद्दवि सिंड मुट्ठि।
मुट्ठि मंडयि हृणिाउ गयन हृरिय,
गाहनीय[4] मुभट्ट सु दर गमग्यि ॥५९॥

नवि मेलद्दह नारिय मू टि यरिग,
दतूसम सोनवि यनिउ यगि।
दम ट्टणिउ वरहि सरिमालि न पि,
जिम मृटि[5] सोगि गिउ श्रयएा यपि ॥६०॥

[6] (राग केदार एकताली)

राइ बोलाव्या बहू, जे भड भय पड राडति।
तेहू पातलि परिभमइ, नवि बारण मुहि मड ति ॥६१॥

मेगल भगलउ ए, नवि जाएइ पवरिस-पार।
स कुसि सरिसा अवगणी घूरणो धर पाडया पु तार ॥६२॥

[सदयवत्स कृत हस्ति निग्रह]

सदयवच्छ सूर सही, जीराइ बनीइ अमरण-नारि।
मेल्हावी हणी हाथीउ, जग पेसइ जइ जयत जूमारि ॥६३॥

(छद पद्धडी)

गडमडिउ गयद कि पडयउ पुहल्व,
सुर अ तरिक्खि पेक्खिइ अपूव्व।

---

१ 'भलवइ कवालि' प्र २ 'कलकलिउ वटाए, पिउ मृगुटि भालि' प्र ३ 'ममतउ जब नयणि दिटु' प्रा ४ 'साहसीक सूर' प्रा ५ 'मू टिवि' प्रा ६ टूक ६१ थी ६३ प्रा प्रति मां नथी।

'जय जय' शवद जपइ जगत्त,
पहुवच्छ पुत्त[1] पेखइ चरित्त ॥६४॥

[सोमगिनी भाणज्य आनद]

(चउपई)

ते बभण तेडिउ[2] तिणिवार, युवति समोपी किद्ध जुहार[3] ।
बभण घरि विमणउ[4] उच्छाह, 'सुद्द! सुद्द!' करइ[5] नरनाह ॥६५॥

[प्रभुवत्स-दश धन्यवाद]

लाजतइ जई किद्ध जुहार, राइ आलिगण दिद्ध अपार।
बापिइ वेटउ बाहि धरिउ, राउ राजभवनि सचरिउ ॥६६॥

बारहट्ट बोलइ तिणि वार, सदयवत्स न सहइ कईवार।
भाटइ भेद परीठिउ इसिउ "पशु मारइ पुरषारथ किसिउ?॥६७॥

(छद तोटक)

मइमत्त कि मारिय लज्ज रयउ,
शर टकीय सु दर शल्ल विगयउ ।
गयगजण ! लज्जजइ रि किमइ ?
किम किज्जय सद्द सुसमर तिमइ ?[6]" ॥ ६८ ॥

(गाहा)

पोढा करीय पहारो, मेत्रावइ मुच्छ मोडए मूढो ।
साहसोअ सदयवच्छो, लज्जरिउ मारि मयमत्तो ॥६९॥

---

१ 'मवरिउ पेखइ पुत्त' य २ तेडाव्यु ताम' भा ३ 'प्रणाम भा ४ 'मनिई भा ५ 'सूदा माद'भा ६ रीछयउ' भा ७ टूक ६८ भा प्रति० मा नथी

[सदयवत्स युवराज-पदाभिषेक]

(चउपई)

ते महूरत ते मगलाचार[1], सेसि भराव्यउ सदयकुमार।
राउ श्रप्पइ राणि मनइ राज,सूदउ भणइ 'न राजिइ काज॥७०॥

घरि घरि तलीया तोरण बहू, ऊजेणी आणाघउ सहू।
हूऊउ हरिप राजा मनि घणउ, पेखि पवाडउ सूदा-तणउ॥७१॥

[सदयवत्स विनय वचन]

"तुम्हि जगि जयवता[2] हुया देव !,करिसु सदा हूँ तह्म पय-सेव
नयरि[3] निचिन्त रमू निशिदीस, तह्म पसाइ पहुवच्छ पहीस॥७२॥

रमू भमू जाऊ जूवटइ चूरि[4] चाचरि खेलू चउवटइ।
सुहडपणानी भोला फिरू, अधिपतिपणू न अगी करू॥७३॥

जिहा जिहा रामति हासा होइ, जिहा जिहा कला कुतूहल कोइ।
जोवा जाऊ तीणिइ ठामि, ईणइ सकटि पाडि[5] म स्वामि॥७४॥

राज-काजि एक धघव बाप, मारइ पुरुष न बीहइ पाप।
लीलावत-तणइ मनि लाज,[सूदउ भणइ] न राजिइ काज"॥७५

[प्रभुवत्स प्रसाद]

आपिउ एकाउलिनउ हार, आपिउ अग तणउ शृगार।
आपिउ आसण-तणउ तुरग, राजा अगि[6] न माइ रग॥७६॥

ते वभण तेडाविउ ताम, प्रति ऊठीनइ[7] किद्ध प्रणाम।
आपिउ वासि वसंतू गाम, बहु[8] अरथ नइ स बर द्राम॥७७॥

---

१ 'मगलचार' आ २ 'जइजइवता देव' आ ३ 'निरतर' आ ४ 'चरि' अ। 'जिम' अ ५ 'प्राव काइ' आ ६ रिदइ' अ ७ राजा ^ प ८ अरथ सरीसु अ बर द्राम' आ

बमणनइ घरि मागी भूख, नाठू दुरीय-सरीसू दूख।
महाराजि जउ दीधउ मान, लोक माहि तीणइ[1] वाधिउ[2] वान ॥७६

(दूहा)

बधी[3] तलीया तोरणह, गूडीय वन्नरवालि।
दीसइ दीवाली-तणा,[3] उच्छव हुई[4] भ्रगालि ॥७९॥

पच शब्द निनाद[5] रसि, वद्धावी वाजति।
पड-सद्द[6] पूरी भुवण, गयणगण गज्जति ॥८०॥

विप्प वेम्र धुणि उच्चरइ, करइ सुकवि कइवार।
रायगणि राजा-तणइ, मिलिया मग्गणहार ॥८१॥

वर मडपि मडीय गजर, वजइ मधुर मृदग।
[7]रागरग गायण गमक, नच्चइ नाचिणि चग ॥८२॥

किंहि कप्पड किंहि दिइ कणय, किंहि केकाण कच्छाहि।
धन देयंतो[8] किलकिलइ, पहुवच्छ मन माहि ॥८३॥

[9]प्रासीस दिइ बहिनर बहू, मा भनि रग रसाल।
भरीय सेसि सइ हथि-सिउ, वद्धावइ वर बाल ॥८४॥

(चउपई)

मणि माणिक मुत्ताहल-हार, [10]कापड-कणय कपूर अपार।
विवहारीए वधावू किद्ध, राजा किहिनू काईम न लिद्ध ॥८५॥

---

१ 'तु'भा २ 'लागउ भ ३ 'धरिधरि भ ४ 'दापाछव' भा
५ 'नर्पार' भ ६ निरदह घरि' भा ७ 'पडिछदे रागरगि भालहिकरइ,
नाचइ पात्र सुरग' भा ८ वेचतु' पा ९ बहिन करइ ऊमारणां,
मा पनि भा १० 'हीर चीर सोवन शृगार' भा

[धन्यपाल शमान मप्रधान प्रधान]

सदयवच्छा गुणी वृत्तत, मुहताइ[1] घरि बइठउ मंत्र ।
"राउ भापता न लीधू राज , भूप जमलउ थिउ युवराज ॥८६॥

मान थिवउ इहनइ सिरि भार, राजा आरोपिसिइ अपार ।
लहुडपणा लगइ लक्षण सार आगइ जूठउ अनइ जूझार ॥८७॥

जे माणस एहनइ नितु नमइ जे माणस एहनइ मनि गमइ ।
जे माणस आगइ एहना सरसिइ काज सवि तेहना ॥८८॥

आज थिवो[3] हिव एहनो भाग आज थिकउ एहनउ वीसास ।
आज थिकउ राजा मनि एह आज थिकउ हिव[4] अम्हनइ छेह॥८९

आगइ इह सिउ नथि मुझ रग, जे मइ जीव[5]विणासिउ रग[6]
अरथ-तणउ अति कीधु लोभ, सगे सणीजे[7] न रही शोभ ॥९०॥

[प्रधानकृत युवराज विरुद्ध षडयन्त्र]

हिव ते काई करउ उपाउ, जीणइ[8] एहनइ रूसइ राउ ।
इमिउ अपूरव पाडउ रेस, कइ मारइ कइ काढइ देस ॥९१॥

कुटम्ब तणू[10]साभलिउ कहिउ , मुहुतइ सोइ जि कथन[11]सग्रहिउ ।
मति-पयहपणू तउ आज, जउ हूं कालि चढावू राज ॥९२॥

[प्रधानकृत भेद प्रपचारम्भ]

तउ परधानि माडिउ परपच, उडद अणाव्या पाली पच ।
सा कइ अरकू[12]आथमणी दार[13]वीर वधावू लेई[14]तोरणि वार॥९३

---

१ महितानइ' आ २ 'तु हू जमलि' भ ३ 'पछी' आ ४ राज मनि आ ५ 'एहनइ नही मू ग' आ ६ 'जान' आ ७ 'रग' भ ८ 'माहि अ ९ 'जिम हिव' आ १० 'कुटुम्बि इस्यू विमासी' आ ११ 'थपणु' आ १२ मूर' आ १३ 'वार' आ १४ 'करइ' आ

धापणि कीधउ कालउ शृंगार, कालउ अंग-तणउ आकार।
काला कापड कीधा भेटि, तउ राजा घण पइठउ पेटि ॥९४॥

रा एकंति मंति लेई गउ, "काइ प्रधान काल मू हुअ थिउ ?।
एता सघलू साहरू राज, नवू ति काई कारण आज ?" ॥९५॥

जाणइ कामण मोहण कूड, जाणइ बुद्धि बोलतउ वूड।
जाणइ अंग तणउ [1]अनुराग, [2]वातइ ततक्षिणि लेई ताग ॥९६॥

[मंत्री वचन]

'नही उच्छव तम्ह घरि तेतलउ, वइरी घरि होसिइ जेतलउ।
'जयमंगल[3] मारिउ' महाराज', इसिउ वधामणु छाजइ आज ?॥९७

मंदि[4] आव्या छूटइ मयमत्त, रोसि चड्या ते हींडइ रत्त।
म्राह उपायि, वली घराह, इम अजुगत्तिइ[5]न आलि मराइ। ९८॥

जास पसाइ दमिया देस, जास पसाइ नमइ नरेस।
जास पसाइ दोहिलउ दुग्ग, लीधी पोलि निभोगन[6] भग्ग ॥९९॥

जीणइ तात ! तम्हे[7] लिउ दंड दमिय देस लीजइ[8] सवि खंड।
ते उनग आवइ अहिठाणि[9], जे जीता जयमंगल प्राणि ॥१००॥

मंदि आविउ करि सारइ काज, वइरी-तणा विध्वंसइ राज।
पाडइ विसमा पोलि पगार,प्राण-तणउ नवि जाणइ[10]सार॥१०१॥

ऐरावण सुणीइ इंद्रन्नइ, जयमंगल हूँतउ तुम्ह-तणइ।
बीजउ कोइ न त्रिभुवनि कन्हइ,प्रापति पाखइ[11]न रहिवा लहइ॥१०२

---

१ 'आवार' अ २ 'वात करतु बोलइ नारि' अ। ३ 'मइ मइगल' म ४ 'मन्दिर' अ ५ 'अजुगतउ' अ ६ 'ति' आ ७ 'तु महारउ' पद [redacted] ८ 'लीजता दंड' अ ९ 'अप्पाणि' आ १० 'लाभइ पार' अ, ११ 'विन किम सहिवा लहइ ??' आ

(दूहा)

अम्मूलिक चिंता रयण, जउ करि चडइ सुरक।
ता धरि किराउ ते रहइ ?, जित्तउ बीय मयक" ॥१०३॥

[आशंकित राजा चित्त]

(चउपई)

मुहूतइं मत्र भार जउ भणिउ, तीणि राजा-मन धारिउ धूणिउ॥
न सहि कोई नीसासा फूक, जाणे पूरव पूरिउ हंक ॥१०४॥

जे बहु नेह धरतउ बाप, ते माचु तोणइ कीधु साप।
रोस चडाविउ सघली राति,[1] पुहुतु तिहा पट्टवन्छ प्रभाति॥१०५॥

[दीपपूर्ण प्रमुवत्स]

फूकी धमी धमाविउ एम[2] जिम ते ततक्षणि न् दूई[3] प्रेम।
बूड[4] बोर्लता आविउ वधि, सूदा-सरसी पाडी संधि ॥१०६॥

[वत्सराज माता वचन]

थिउ अवसर ऊलगनु जाम, माइ बेटउ बोलाव्यउ ताम।
"सूदा ! सुप्रभातनी वार, जई राजा प्रति[5] वद जुहार" ॥१०७॥

[क्रुद्ध पिता मुख-दर्शन]

माता-वयणि सभागिउ सुह, ता राजा-मुखि[6] दीठ्ठउ रउद्द।
सिर नामना बोलिउ राउ[7], हासा मिसिइ भागा[8] हाड[1] ॥१०८॥

नीध नइ न-पाणीउ धूउ तिह ऊपरि ढालइ धीवूउ।
वार वार पय[1] करइ प्रणाम नीर-नणू नीठाडइ[11] ठाम ॥१०९॥

---

१ 'पाडइ बोलाविउ परभाति' प २ 'इम' प ३ 'नोडइ तीम' प ४ 'बूढ' प ५ 'राजानइ करइ' प ६ 'मनि' पा ७ 'साइ' पा ८ 'मचइ' पा ९ 'माँडिउ' पा १० 'सिरि' पा ११ 'नीचाडइ' पा, प

(गाहा)

मा जाणिमि खत्र नमीय, जीहा जपइ अमीय-सा वयण ।
दीठ्[1] कूप विलग्गो, पय लग्गवि, सोनए जोय ॥११०॥

(चउपई)

जे आकारइ ऊलखइ अ ग भमहि-तणउ जे वूभइ भग ।
[2]ते नर बालिउ [3]वूझइ इसिउ ,एह वातनू[4]अचरिज किसिउ ॥१११

वीर विचारी जाइउ सम्प, भमहि भावि ऊलखिउ भूप ।
कुमर ततक्षणि विमासइ चिंति, किमी कहीइ ज उत्तम रीति? ॥११२

(अडयल्ल)*

जिम जिम केसरि पइ ऊहटइ, जिम जिम विसहर नूली वटइ ।
दीन वयण जिम जपइ सूरु, देसि देसि कीयइ बहु पूरु ॥११३॥

[सम्यवत्स पिता-वदन]

अणबोलिइ ऊठिउ कुआर, जातइ [5]नरवर किद्ध जुहार ।
वारू लोक विमासण भरिउ, शिर नामी आघउ संचरिउ ॥११४॥

जे आपी अधिकारी हाथ, ते तिवार मुहि[6] नई नरनाथि ।
ते रणि रहइ जे हुइ लाजणउ, तेजी तुरय[7] न सहइ ताजणउ॥११५

[उत्तम-जन लक्षण]

सपदि हरिख न विपदि विपाउ, ए आगइ सतपुरिस सभाउ ।
जाउ करमनू कारण आम, त्यजी[8] राज वनि जाई राम ॥११६॥

एक दिवस अभि किउ पसाउ बीजइ सूदा रूठउ राउ ।
एकि राउल नइ बीजू रान, सूदानइ मनि सहू समान ॥११७॥

---

१ 'बे' प्रा २ प्रीछइ' प्रा ३ 'कारण प्रा * टूक ११३ए प्रति० मा नथी '। ४ 'जातउ प्रा ५ लोषी' प्रा ६ 'किम थाहइ' प्रा ७ 'राजधार मनि ८ 'प्रति' प्रा ।

सभा-सभाहि जे बांधिउ गाइ, ते गूढउ आणीतइ जाइ।
एउ गुणुरिम-नइ मंबन माय गग हिऊ गइ बोजउ हाय ॥११८॥

[सम्यवास मात वन्ना]

वलीय योर मनि वगिउ विचार जातउ जणणी रम जुहार।
जस उमरि वगिउ दस माम, पाय प्रणामू जणणी ताम ॥११६॥

(गाहा)

जस ऊमरि वसीम वाम नव माम दिवस म्रट्ठ म्रगानिया।
पय पणमवि जणणी तास वरिस्मु निवाम विदसम्मि ॥१२०॥

(मडयल्ल)

जई लागु जणणी-तणा पाय
आगीस-वयण उच्चरइ माइ।
"कहि पुत्त! अजु चलचित्त काई ?
अम्ह ऊपरि कीय[1] कुदिट्ठी राइ ॥१२१॥

[पिता रोष कथन]

"मइ" मारिउ आसण-तणउ मत्त
तीणि वज्रि कोप बहु छरइ तत्त।
जे पामिउ कलि दीउ पसाउ,
ते सयल अजूता जुत्त आउ ॥१२२॥

(दूहा)

आयस राउ-तणा पखइ, जे मइ कीधू आल।
बाल-स्त्री ऊगारिवा, कुंजर सिरि करवाल ॥१२३॥

एक अबला नइ वभणी, गब्भिणि गजि आरोडि।
जु देखो ऊनेखोइ, तु क्षित्ती कुलि [2] खाडि ॥१२४॥

---

१ 'कुन्दिट्ठ' म २ खिरातण म मा' मा १ लीटी वधारे तत्त जे पामिउ कालि पसाउ दाउ, ते आज सयल हऊ जिवाउ

वन्नेवा नइ कारणि, वहु माणस मेल्या राइ।
जउ मनि मारण चीतवइ, तउ करि वेरयउ जाइ [7] ॥१२५॥

[अन्यायी राजानापालन अमान्यता]

राउ अन्याय जिसा सहइ, वेटा वधव वाप।
अहि ऊगमि तीह पट्ट-तणइ, मुहि दीठइ वहु[2] पाप ॥१२६॥

एकि अम्या छइ इह-तणइ[3], साहसवन्त सुभट्ट।
जे रणि मगमि अ गमइ गुडीय महागज घट्ट ॥१२७॥

'रूठइ [4] जीवन जोखिम-ह, अ ठइ पयड पसाउ।
[सदय भणइ] स्वामीपणा, तीह जूठउ जस-वाउ ॥१२८॥

जस असख सोआल सिउ, इक्क सरोवरि सीह।
पीइ जल जमला रहीय, लोपी न सकइ लीह ॥१२९॥

एक भलेरू भोगवइ, राजा-पाहिइ रज्ज।
अधिपति-पण एतइ अधिक, जे सहू मानइ मज्झ ॥१३०॥

राय धम्मु तिहि[6] रायनइ, रूइ [7] दीसइ रज्जि।
जे अन्याई[8] अप्प-पर, लेखइ समउ सहज्जि' ॥१३१॥

[माता वचन]

"देसाउरि दिन केतला, जाइस रूठइ राइ ?।"

[सदयवत्स वचन]

"देवि ! म [9]चिंतिसि दोहिलउ, वलिसु वहिलउ माई !" ॥१३२॥

---

१ 'वे बाषवा' मा २ 'हुई' मा ३ 'अभु तणइ' मा
४ रूठइ भेषिम नारि, तुटई नहा य' मा ५ 'जमला रहिया' [illegible]
६ 'वेडराउ नउ मा ७ 'रूठइ-रापइ' मा ८ 'अ याय' ९ 'चरिसि' मा

भवणि गू भाने' पाण्डि,' पद्मणी गयर तुमारि।
घजी घर मउनि पडो, जाणे' तान समारि ॥१३३॥

[माता-तुन मूर्च्छा] .

बेटा वेर धोनइ मा मनि वगिउ विनाण।
वरार मापवा' भणी रवि नीसरिउ माद ॥१३४॥

चिहिं घटपडउ नीसरिउ गन्धर गनइ न माइ।
"ऊमासे रीसामडे, जाणे जीवी जाइ' ॥१३५॥

माता वेरे धीजणे धारिणि' छन्ह वाउ।
मइ-हरियइ सूदउ करइ, जणणी जीवेवाउ ॥१३६॥

"महूरति एव जि माउली मनि मूरछा जि भग।
"जाया दि जणणी' भलू' [घेटउ बोनण लग] ॥१३७॥

[सदयवत्स वचन]

"जाऊ तउ जीवी ऊगरू, रहूं तउ' रूसइ राउ।
कहिं, 'जणणी' किम सासहइ, ए एवडउ अपाउ ?" ॥१३८॥

' मत्र मइलउ मती भणइ, जे पइसिउ पहुन्नति।
सीए माडी' मू मारिवा, राउ सोधिसिइ रति ॥१३९॥

(गाहा)

॥ ॥ जपति कहा, दूमणा होइ सव्व सारिच्छा।
जम्मतरे न होइ, ज नवि होइ जम्म ''जम्मेहिं ॥१४०॥

---

१ 'सोभल्यु' पा २ 'करूउ' अ ३ 'जोवी जइ' म ४ मारेवा सणउ म ५ त सभलि मूनामही, जाण जसुणीअ मारो' म ६ 'वीजी' पा ७ 'अमरति जणणी जवा दिइ नही' ॥ ८ 'इअइ' पा ९ 'नहइ माडी' १० 'मत्री मयल्लु मह मलिण' पा ११ 'लकुचेहिं' ॥

तह मार भेर जिणाणो [1] दोगुहो दृि-गडण गम्हो ।
तह विहि मज्झ यामउ, नमो नरा नहि नल-परिच्छा ॥१४१॥

(दूहा)

भग न्र सूयनार ए स्नु [2] दुहिया हुँति । •
जे नवि जाणइ नारवो, ते वहिना विगमति ॥१४२॥

[माता दन न्हुन भोजन]

मारण जाणी गुमरलू, पर्हीरण मजिउ मइ ।
गउण भणी सीरामणी, प्रीयू [3] दही मगइ ॥१४३॥

गट्ट [4] गुणवि धणि पवनरउ, प्र तरि [5] जोपु जाम ।
वन रग्इ सीरावणी, मानू मुर पिऊ स्याम ॥१४४॥

जगाणी जिरागीर [6] मपिक, वीडू यि वरि निद्द ।
मदयनच्द्द गामनि-नणी, मनी भनामण दिद्द ॥१४५॥

[सहयात्रा यमनोःगुबा पत्नी सामती]

मा मोरनावी चलिउ, [7] मगिमर [8] नेरे हृथि ।
पाह्रलि [9] नेउर मर मुणी, गामनि आवइ मतिय ॥१४६॥

पय गचरि [10] प्रमदा चहिउ, [11] "दवि ! म परिसि दुहिल्ल ।"

[मूर्शा-वचन]

"मुणि मामनि" [मूदउ भगइ] "आविमु यनी वहिल्ल ॥१४७॥

(मदयल्ल) [12]

मनि ग्रम्पराइ गुणित मनि मालिणि [1] ।
त्रिय पाय पयि पुलिसि [2] मो मालिणि [3] ।

---

१ 'जणी ो मुद्द सोहदि' ह २ 'पुहु म ३ 'दीपू' मा ४ 'मूर' मा ५ 'उतरि नऊ' म ६ 'यमाही' ७ 'नावयु' मा ८ 'प्रसिद्धवन' ९ 'रिण भिनइ' मा १० 'पायी' मा ११ 'कहई' म १२ 'माल'म

हू गय-गामिणि [1] गमिमू [1] गिरी कंदरि
रहि रामा [1] [2]ग्रमिय-नायणि [1] मदिरि' ॥१४८॥

[सामली-वचन]

"जे सूर नर सासि करी, वापिइ वाघिया वह।
सुणि सूदा [1] [सामलि भणइ] ते किम छूटइ छेह ? ॥१४९॥

[नर विहीन नारी प्रतिष्ठा]

नर [3]विण नारी [4]एकली, लग्गइ कोडि कलंक।
भग्गइ एक मइ ससहिक, मुग-उप्पम जि मयंक ॥१५०॥

नर-पासइ नारी [5]तणइ, राउल [6]जाणइ रत्न।
रत्नि जि प्रीय सरिसी [7]मुलइ, राउल मानइ मत्र ॥१५१॥

शशि विण निशि, दिशि दिवस विणु, जिम नदी विणु-वारि।
[8]तिम सूदा [1] [सामली भणई] नर विणु न सोहइ नारि ॥१५२॥

माइ बाप बंधव [9]बहिनि, पोढी पीहर वेडि।
[10]मइ मेल्ही जस- कज्जिहि, कंत [1] न छड्डू वेडि ॥१५३॥

जे [11]सोहिलइ 'स्वामी' भणइ, दोहिलइ छडइ पुट्ठि।
नारी रूपी निशाचरी, जाणे [12]देव ति दुट्ठि ॥१५४॥

स्वामी [1] सुहिल्ले दीहडे, सहुको वंभगइ सत्थि।
भाई [13]भी छति भामिनी, जे आदरइ [14]ग्रणत्थि ॥१५ ॥

---

१ 'भामिमु २ 'मग लायणि' भा ३ 'पासई'आ ४ 'तणइ' भा ५ 'सनइ भा ६ 'मानइ' भा ७, 'मलू भा ८ 'सुणि' भा ९ 'बहू' भा १० 'तहा करणि मइ परहरी भा ११ 'सुहिलइ दीहडे दिइ' दुहिल्लिइ'भ १२ 'देवविघ्ध' भा १३ 'भाछट भ १४ 'अर्थिय' भा

[सदयवत्स-सामली प्रयाण]

अणबोलिउ चालिउ चतुर, नारी-[1]निश्चउ जाणि ।
सामलि सामू पय नमी, साथिइ थई सुजाणि ॥१५६॥

पय नगना प्रीय जणणि, "होयो अविचल आयु' ।
एहि विवच्छिनू वयण सुणि, अमृत आरोगु माई[2] ॥१५७॥

(छद पद्धडी)

गय गमणी रमणी तुर गति गमति,
[3]झड अनिल लग्ग अ गिहि नमति ।
पय-पकजि लक [4]तलि वडवडनि,
पति भत्ति चित्ति [5]घरि चडवडति ॥१५८॥

[सावलिगी सामली रूप वर्णन]

जस जघ-जुअल वर रभ-थभ ।
[6]पिथल कि उरयल करिण कु भ ॥
कर पल्लव नव शाखा अशोक ।
सोवन वन्न साम शरीर रोक ॥१५९॥
मुख-कमल अमल ससिहर-सरिच्छ ।
निलवटि तिलय ताडीक मच्छ ॥
कु डल कि कंत्रि पायार मार ।
कोसीस निकर परिगर अपार ॥१६०॥
तिल-फुल्ल[7] नास-सजुत्त मत्त ।
[8]त्रुटि दाडिम दत, अहर राग रत्त ॥
अ जन सह खजन सरिस नेत्त ।
सीमत कु त किरि [9]मयर-केत्त ॥१६१॥

---

१ 'निश्चल मन' अ २ 'दृ उ' अ ३ 'चल अनल' आ ४ तिचउ वडति' आ ५ 'करि पउवडनि' अ ६ 'प्रच्छल' आ. ७ 'कुसुम नासिका' आ ८ 'तुटि' आ ९ 'मघरि' आ

दूद मर्मा [illegible] ।
[illegible] ॥
उरि हार [illegible] ।
[illegible] ॥१६२॥

मञ्जीर घोरि पावराग गुम गि ।
[illegible] गिरि [illegible] ॥१६३॥

(दूहा)

गुणासण भामण पग्र पगण न [illegible] ।
सा सामलि पालो पुनद, प्रीम गुण-धागनि बद्ध ॥१६४॥

[सामलिगा वचन]

"सुणजि १सदय कुमार ! हूं म त्यरा-सागर तीगारि ।
वामणी पूछइ विगनि, सामलिगि सु विचारि ! ॥१६५॥

भरि नम्पर भणनी 'उदउ जागिणि जिमणी जाइ ।

[सदयवत्स वचन]

सुणि सामला ! [सूदउ भणइ] तूसइ त्रिभुवन माहिं' ॥१६६॥

[शकुन मीमांसा]

अवला अगि अलकरी, कारइ बम्भि कुमारि ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइ] निश्चइ लाभइ नारि ॥१६७॥

हय सुपल्लाणु समुट्ठउ, ४गलि गज्जनु गज्ज ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइ] रानि ५भमना रज्ज ॥१६८॥

---

१ 'डलति लव' मा २ तन मडन उरवर खिउ' म ३ 'सम्ब कुमार नइ' मा ४ गज्जइ गज्जराज' मा ५ 'ववती' मा

वायस जिमणउ ऊतरइ, [1]डाउ ऊतरइ स्वान ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइ] पगि पगि [2]गुरिम निधान ॥१६९॥

खर [3]डावउ सम्वर करी, जउ फिरि जिमणउ जाइ ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइ] मगपणि कनहु कराइ ॥ १७० ॥

तरु ऊपरि तेतर लवइ, [4]घूडि सर शिवा करति ।
सावलिंगि ! [सूदउ भणइ] एक्क अणेक वरति ॥१७१॥

मघूरा पहिलइ पुहरि जगलि जिमणा जाइ ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइ] मिलीइ [5]सुअण-समाहि ॥१७२॥

छीक डावी धाह जिमणी, [6]भु डनइ मुखि मास ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइ] सफल मनोरथ तास ॥१७३॥

सडमु सारसु खर तुरीय, डावी साली हुंति ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइ] अफल्या [7]ताह फलति ॥१७४॥

वामा देवा वामा वायसो, वामी भीज भुकति ।
ससु म उरभय पुनह, विहू नाजि पामति[8] ॥१७५॥

[गुणवान प्रशमा]

(चउपइ)

राजा-गुणि राउत रणि रहइ स्रीय गुणि प्रमदा दोहिलउ सहइ ।
गुण विण काइ न किहलइ गमइ, जे गुणवत ते [9]सविहूगमइ॥१७६

१ 'हुइ सावइ स्वान' मा २ 'परख' मा ३ 'डावो निसि ऊतरइ सुर करि' मा ४ 'घुडिइ मूडि सरि सेव' मा ५ 'सजन सुथाइ' मा ६ 'वारणा मानू' मा ७ 'वृक्ष' मा ८ 'मा' प्रति०म नहीं ९ 'सवि करइ' मा

[सहनशील सामली]

[1]सामलि चालती मन रगि, भूखी त्रिसी नवि जाणइ[2]अ गि।
मारगि नई-नीझरण निनाद, मधुरा मोर सुहावा साद ॥१७७॥

तरुअर-तणइ [3]तलि सीली छाह, वाट घाट विलगइ वर बाह।
कद [4]मूल फल अ व [5]अहार, इणि परि गम्या दिवस दसवार॥१७८

[निजल बन प्रयाण]

पुहुता परवत पइली तीर, मागलि खारू रण, नही नीर।
सीसि सुर, तलइ वेलू ताप, सार्वलिगि [6]नरणि निसा प्रलाप ॥१७६॥

[सामली-प्रश्न]

(दूहा)

'नाह! कुर गा[7]रण थनि, जल विण किम जीवंति ?' ।

[सूडा उत्तर]

नयण-सरोवर प्रीति-जल, नेह-नीर पीयंति' ॥१८०॥

[सामली प्रश्न]

' रत्ति न दीठु पारधि, अगि न [8]लागु वाण।
सुणि सूडा! [सामलि भणइ] इह किम गया पराण ? ॥१८१॥

[सूडा उत्तर]

"[9]जल थोडु सनेह घणु, तरस्या बेऊ जणांह।
'पीय पीय करता सुकी गउ, मुआ दोय जणाह' ॥१८२॥

---

१ 'चालती रनि वनि मन रगि' अ २ अगि अ ३ 'तीरि' अ ४ फूल' आ ५ दपार अ ६ 'तव' आ ७ आ ८ 'रत्ति न देषू' आ ६ जणि' आ

[तृषातुर-सामलो]

(चउपई)

जिम हीमइ [1]कमलिणि कुरमाइ, जिम वसति परजालइ जाई ।
तिम जल विण सामलि-सरीर, [2]देखी करइ विमासण वीर ॥१८३

[अद्भुत प्रपा-दर्शन]

दह दिसि [3]निरखइ नयणे जाम, पाधरि परब भरइ स्त्री ताम ।
ते देखी नर हरखिउ हीइ, इसी [4]वाट विसमो न रहीय ॥१८४॥

वहिनउ थई पुहुतउ तीणि ठाहि-'जस भय भग नही मन माहि ।
ऊभी अबला दीठी द्रेठि, माडया गोला [5]माडव-हेठि ॥१८५॥

शीतल जल सरवइ सवि ठामि, जीणि दीठइ मनि [6]भाजइ श्राम।

[मूदा-वचन]

[7]"माई" भणवि शिर नामइ वीर, वहिलउ थई [8]नइ मागइ नीर१८६

"वाई ! वार म लाइ, स्त्री त्रीसी," तीणिइ बोलइ ते बईअर हसी ।
भाऊ [9]अन-जाण पहुतउ आघ, जाणे किरि वउलावइ वाघ ॥१८७

[माता हरसिद्धि प्रपा]

इणइ परविइ कीजय पाप, आई [10]बाई म बोलसि बाप ।
पाणी पलीय न पाइ कोइ, एह परब हरसिद्धिनी होइ' ॥१८८॥

'लीजइ लोही दीजइ नीर' तिणि वातिइ [11]विलकिलिउ वीर ।
'देम्यु लाही वार म लाइ प्रमदा त्रिसीय पाणी पाइ'' ॥१८९॥

---

१ 'पीइणि' म २ 'पेखी वयल विमासइ' मा ३ 'नयणि निहालइ' मा ४ वात विमासी' मा ५ 'मडप' मा ६ 'हुउ विश्राम' मा ७ 'शरमनी नइ साहसवीर' मा ८ 'नइ' म ९ 'मापन जाणइ माघ' मा १० 'माई म बोलसि' मा ११ 'व्याकुलीउ' मा

गारि यारि रखउ गरि भगी, गावसिगि माहुमी मारी।
जउ 'तरणा पोटउ गिरनार बान प्राणउ पानि र थाप ॥१६०

[गूगा रत्न ना प्रवरा]

नर [१]गीगर न वयणि विग्ग मगीपालिय मुदि ऊजिउ प्रग।
म[२]दरि नडिउ छन्इ रस माग, न नरद लाहीनणउ निवास ॥१६१

[३]पामद करि गिर गाही नेणि जिमणइ जिमन्दड तारी तेणि।
मउ मस्तग [४]पावइ मा गुद्धि, रउ हगी हाथि [५]साहि हरसिद्धि ॥१६२

[प्रसम हरसिद्धि कथन]

करि [६]भानीनइ पारण वही "[७]माहसीव तू गूदउ सही।
प[८] मइ जोइऊ ताहरू माह गू [९]पजीह ऊजेणी-नाह ॥१६३॥
ऊजेणी माहरू अहिठाण वाजू पाटणपुर पहिठाण।
हुं वउलावा आवी धीर !, जोवा ताहरू साहस धीर ॥१६४॥
हू जोगिणि तूठी हरसिद्धि, मागि मागि मनवछित रिद्धि।
ताहरा 'पवरिस नही कोइ पार तू सूरा सविहू शृंगार' ॥१६५

[सदयवत्स देवी-वर-याचना]

'जूम सग्रामि ठामि [१०]बहू जइत्त, [११]परमेसर सू पामे पहित।
प्रभु कठीनइ लागउ पाइ, मया किह्वारइ म[१२]टालिसि माई !'' ॥१६६

[वर प्रदान]

काली कक लोहनी छुरी, [१३]साथिइ कानी फउडी खरी।
ए वि आप्या 'वेटा भणो, 'जय' जपवि चालो जागिणी ॥१६७॥

---

१ 'तिति नपानु भाणु ताप' २ नीसरूपणु नइ नव रग मणी पासी मुहि उरइ' प्र ३ 'वाम करिइ करि' मा ४ 'छेदइ मनसिद्धि' मा ५ साहिउ मा ६ 'यारी नइ' मा ७ 'प्रभण' प्र ८ सिद्धि' मा ९ 'साहम न सहूं' मा १० 'बहु' मा ११ 'परमेसर तू पामे' मा १२ 'मेल्हसि' मा १३ 'बीजी आपी' मा।

[1]जोगिणी वनी, टली ते परव, हुई वीर मनि विमणी वरव]
जे भव भगति न लाभइ सिद्धि, ते हेला [2]तूठी हरसिद्धि ॥१९८॥

रनीयाइत थिउ चालिउ राउ, वनिता चित्ति वसिउ विपवाउ ।

[पति-दुःख कारण सामली क्षमावाचना]

"करूं अ वीनती बे कर जोडि, प्री ! माहरी पग-त्रपण छोडि॥१९९॥

तइ [3]मू पाणी पीवा काजि, मस्तक ऊडविउ महाराजि ।
मइ भाविइ गुण होसिइ एह,आगइ दूख,नइ सूकिसि देह'॥२००॥

[पीहरमां मूकवा विनति]

[4]प गाउ करी मू [5]पीहरि आवि,मू मेल्ही नइ स्वामि ! सिधावि ।
जाता कोइ न करइ [6]पचार, वली सम्हारइ करयो सार ॥२०१॥

[अवलाए चीतविउ उपाउ], तिहा [7]आव्या तउ राखिसिइ राउ।
दाखिन पाडी देसइ देस, 'रहिसिइ तिम राखिसिइ नरेस" ॥२०२॥

वनिता-तणा वयण [8]नय वाच, सदयवच्छि ते मान्यो साच ।
"[10]मेल्हिसु लेई पाद्रि पहिठाणि,जई [11]ऊलगि सु अवरि अहिठाणि२०३

ऊनग लेई नइ आणू करू, ता लग स्त्रीइ-स्यू केयउ फिरू ?।
जिहा उलगस्यू लहिसिउ तिहा लाख,
प्रमदा पीहरि न [12]मेल्हउ पाख" ॥२०४॥

प्रमदा मनि पीहरनू राज, [13]चितइ कत अनेरू काज ।
'मनि विहु जण्या जोन जूजूउ', ए ऊखाणउ साचउ हूउ ॥२०५॥

---

१ योगिणि तणी वुनी जु म २ 'तूठी' आ ३ 'मू' अ ४ 'मया' म
५ 'मभ आ ६ ऊचार, वली वहिली' अ ७ 'गया' आ ८ 'जिम पण म ९ 'मनि' आ १० लेई मूकिस पाटण' आ ११ 'उलग्योस' अ' १२ 'मूकिस' म १३ कतह मनि' अ ।

[महाशिव वन प्रवेश]

करइ वान वे चालइ वाट उाडिउ रण्ण नइ छाडया घाट ।
आगलि ऊमटिउ आराम, जिहा छइ सकल सदाशिव ठाम ॥२०६

जिणि वनि [1]बारह मास वसन दीसइ कोइ न [2]पामइ अन्त ।
नही पाणीया-जीव प्रवेस, इसी [3]अछइ मरज्याद महेस ॥२०-॥

मार मधुर मरि करइ निनाद कोइलि [4]तणा साहावा साद ।
गुमर नरद सूडा मालहा भमइ भमर [5]माल्टइ मालही ॥२०८॥

[6]मुरहा मीत सू माला वाउ, जे लागा तनि टालइ ताउ ।
सने सदा-फल एडा रूग, [7]जेहनइ दरसणि भाजइ भूख ॥२०९॥

जिणि वनि योगी [8]यति विश्राम जिणि दीठइ [9]मनि भाजइ श्राम
[10]पुहुतउ वीर तेह वन माहि हूउ हरिख निहु मन माहि ॥२१०॥

[वन श्री वर्णन]

(छंद पद्धरी)

निहा दिट्ठ तम्मर मनि [11]थमाल ।
जात्तिीय जाईफल तज तमाल ॥
वनि मगर तगर चदन [12]निवार ।
कवीन कसथ धनगार मार ॥२११॥

कदली दल र ।
न य ॥
।
२।

२
१

घा
१२

[1]महमहइ मलय मानय महुन्ल ।
सेवत्तीं जत्ती बकुल वेल्ल ॥
करणवीर कुसुम थोर्खड सार ।
रयचपु [2]पाडल जूहीय अपार ॥२१३॥

केतकी अट्ठदल कमल-वृंद ।
कृष्णागर वालु करन्न कद ॥
वकडीय कुलीय पयडीय पलास ।
[3]चिहु पखि वन पासलि ति वास ॥२१४॥

तिहि-मझि सजन सरवर [4]सुरग ।
उत्तुंग पालि पूरीय तरंग ॥
तिहा त्रिविध कमल कैरव कमोद ।
रस [5]रुद्ध हस पामइ प्रमोद ॥२१५॥

तरवरइ तीरि वहु वतक कक्क ।
चिहुँ पखे [6]कुरलइ चक्कवक्क ॥
नवकुंड अमीय उप्पम ति नीर ।
शीतल सुअच्छ गहिरू गभीर ॥२१६॥

[कामपति मंदिर वर्णन]

[7]तस अग्गलि उमयापति अवास ।
कैलास छडि जिणि कीधु वास ॥
मड निवीड तुंग तोरण पयार ।
अपुव्व पुष्प दीसइ दूआर ॥२१७॥

---

१ महमहन्ति अति मलया अमाल,फूल सेवत्री जाती विकल वाल' मा २ 'पाडलनु नही मा ३ वन पासलि विहुपखि शव निवास' मा ४ 'अड्ड मा ५ लीय मा ६ 'करलइ' मा ७ 'तिहि' मा ।

थिर पथरि मडीय थोर थभ ।
पूतलीय [1]रूप्प विभ्रम वि रभ ॥
मडपि गवक्ख चिहुँ पक्खि चार ।
मणिमइ सनाका मिसर मार ॥२१८॥

कणयमइ दड ऊडइ सहित्त ।
लहलहइ धव न धज वड विचित्त ॥
[3]आसन्नउ आगलि सोहइ सड ।
पडिआर [4]नदी चडी प्रचड ॥२१९॥

[सूदा-सामली मंदिर प्रवेश]

(चउपई)

नेमल नीरि पखाल्या पाउ [5]मानिनी म्यू मन रगिइ [6]राउ ।
तो जाइ जगदीसर भणी [7]देखी मडपि महिला घणी ॥२२०॥

[हरगौरी प्रणाम]

बाहरि थिका बे जोडइ हाथ, प्रणमिउ प्रभु जडधर जगनाथ ।
रउ गजर गभारा माहि, भवला एक तिहाँ ईस भाराहि ॥२२१॥

गरू वन ते वेखी मनि, आणदिउ ऊजेणी धणी ।
बहिरो धोती सबन मांचरिउ, राणी सग्मु रा नीमरिउ ॥२२२॥

सामली पूछिउ 'सूदा पाहि, वनिता वृ द [8]महावन माँहि ।
सीय [1] प्रासाद तणइ जानीइ,' ए कारण निगनिइ निहानीइ॥२२३

---

१ 'मनोरम भ्रमति' पा २ 'कनक मचिइ कलग-इ' पा ३ 'प्रावास
॥ ४ तन माहु' पा ५ प्राय मानिनिरय ' पा ६ 'जाई' प ७ 'देखइ'
पा ८ 'प्रो पासि पा ९ 'हरवासी' प १० 'कुतिग निरखिइ' पा ।

[सार्वलिंगी विमासण]

सार्वलिगि ते सभली, चित्ति चमक्कइ लग्ग ।
[1]मूंदि जि मउण विचार कीय, ते मू परतखि पुग्ग ॥२५६॥

(चउपई)

लीलावतीइ कारण कहीय, सार्वलिगि ते समनि रहीय ।
भ्रम चीतवइ प्रदीठइ भूप, मूदइ सहू समलिउ सरूप ॥२५७॥

जाणी मूत्र तणू जगदीस सार्वलिगि तउ धूणिउ सीम ।
हर मांहूमू जोईनइ हसी, लीलावती-नइ विमासण वसी ॥२५८॥

[लीलावती प्रश्न]

"नारी ! गुज्झ कहना काइ, माय् घूणो मस्तया काइ ? ।
साचउ कहउ, सदाशिव आण, नहीतरि माहा आव्या अप्रमाण '२५९

सूदइ सपथ दीजतउ सुणिउ, राजा हृदइ बोल रणझुणिउ ।

[सामली विमासण]

सामली वली विमासण पडी, वहिना वाट सउथि सापडी ! ॥२६०

एक प्रण-कहइ तउ एहनू पाप, बीजउ वली सदाशिव शाप ।
रवि [2]ऊगइ जु विहाइ राति, तउ ए प्राण तजइ परभाति ॥२६१॥

आगइ एक माहरइ काजि, मस्तक ऊडविउ महाराजि ।
आ बीजी पग-अधण मानि, राजकुमरि प्रीउ पामिउ रानि ॥२६२॥

सार्वलिगि प्रति उतावली, प्रण-बोलता हुई आकुली ।
लीलावतीइ [3]मांडिउ लाग, ए मइ काइ पाडिउ पाग ? ॥२६३॥

[लीलावती-वचन]

"बाई ! का [4]प्रण-बोल्या रहउ काई जाणउ तउ कारण कहउ ।"

---

१ 'मूदइ सकल विचारिया' अ २ 'ऊगमणि विहाणो' अ
३ 'माण्डू' आ ४ 'म म रहउ ? जु आणइ, आ

[सावलिगी-वचन]

"अवला जे तइ आराधिउ ईस, ते जाणे तूठउ जगदीश ॥२६४॥
वली म थाई पूछिसि पछइ, बहिनि [1] बाहिरि स ऊभउ अछइ" ।
[2]सावलिगि-सुवचन सभली, क्षामोदरी सव सलभली ॥२६५॥

[लीलावती सदयवत्स-दर्शन]

लीली गई लीलावई नारि, आवी ऊभी देव-कुमारि ।
निय नयणइ नर निरखइ जाम, [2]'थिरि मूरतिमय ऊभउ काम'॥२६

(गाहा)

[3]लीलावय सारिच्छा ममवडि लीलस्स रायहसम्म ।
उमरि वणी-दडा, पुट्ठिवि मोहइ ए हारो ॥२६७॥

[4](दूहा)

"लज्जा सकटि दिट्ठ, प्रीय बोल सवणु न जाइ ।
लिउ रे नयणा रिट्ठ, घउ, जा नवि अतरि थाइ" ॥२६८॥

(चउपई)

चलिउ सूदउ मइ सामलो, सावलिगि [5]साथि जई मिली ।

[सूदा प्रति सावलिगी वचन]

भलउ भावि वीनविउ भूप 'स्वामी ! तुम्हि [6]साभलउ स्वरूप॥२६९।

ईसा सूत्र अवधारिउ आम, किहा ऊजेणी ? किहा आराम ? ।
कीधो थाउ हूउ कूपसाउ, ते जाणि जगदीश पसाउ ॥२७०॥

इम जावा जुगतू नही कन !, आ वनितानउ सुणी वृत्त त ।
एव हत्या, वीजउ हर लाप, कहिता वात म करिसिउ कोप ॥२७१॥

---

१ 'लीला वतीइ' आ २ 'जाण मूरित वतुराम' आ ३ 'प्रहिली नयण समरि सा समरइ लीलपि राय हसम्ब' आ ४ दूक २६९ ब' मां नथी ५ 'साँथिइ' प ६ 'सांभणु' आ.

[सउकि (सपत्नी) विवरण]

आदि [1]सकति कीधउ आग्रहउ, स्वामी ! सउकि किसी हुइ? ग्रहउ ।
मालव-तणी महेसरि घडी तोणइ तउ उमया वीर [2]चौगटी ॥२७२

खेडि माहि अधिपति अघभाग, बेटा वधव लखमी लाग ।
[3]मविहू-पाहिइ सपराणी सउकि, [4]वर वहिचवा चाली चउकि॥२७३

स्वामी ! कहिउ महारू मानि, सिरजी सउकि [5]मिली मू रानि ।
माहरी [6]काई म करउ लाज, अण परणइ अनरथ हुइ आज ॥२७४

दिनि एकइ आगमि छ मासि, राणी राउ वीनविउ विमासि ।
कुमरि-मणू कारण जाणीइ, [7]अति आग्रहु माडी आणीइ" ॥२७५॥

[धारापति(लीलावती पिता) चिंता]

राणी वयण विमासइ राउ, पुत्रि-तणी औछवण उपाउ ।
सदयवच्छ नवि [8]जाणइ सुद्धि, कालि कुमरिनइ तपनी अवधि॥२७६॥

धारानयरि राउ धरवीर, सभा बईठउ साहसधीर ।
सुधि पूछइ कुमरि-नइ काजि 'कोई ऊजेणी आव्यउ आजि ? ॥२७७

लीलावतीइ लीधइ नीम, छमासि छइ थोडी सीम ।
'आणइ भवि अनेरउ [9]वरू, कइ सूदउ कइ ' जमहर करू ॥२७८

फूल धतूरा धरणि पडइ, कइ महेसर मस्तकि चडइ ।
बीजी गति नवि तीह लहीइ" तिम कुमरीइ हठ लीधउ हईइ ॥२७९

[बंदीजन कथित सदयवत्स-समाचार]

राजा वयण सुणी तिणि वार, वदिण एक करइ [10][11]जइकार ।
'हूं ऊजेणी आविउ आज, सूदा सुधि साभलि महाराज !॥ ८०॥

१ 'शकति लीधु' आ २ 'चोघटी' म ३ 'मिवहु आ ४ 'वर विहचावइ सागीउकि' म ५ 'वली' आ ६ 'काई करसि' ? पा ७ 'मायह करीनइ आहा' आ ८ 'शुधि' आ ९ 'वरइ' म १० 'साहस करु' म ११ 'जयवार' म

[सावंलिगो प्रश्न]

सावंलिगि ते संभली पूछइ [1]वयण विसेस ।
"तइ रिहि दिठ्ठउ, रिहि [2]गुणिउ, गहो [5]ए सदय नरेस ?" ॥२४७॥

[सीजावती रचना]

'रायणगि राजा तणइ बोलइ वदिएा-यद ।
धीर मएाो ते वयवइ सही ! ए सदय नरिंद ॥२४८॥

धीर [3]माहाग्उ गाउलउ सान यदीनउ वीर ।
वीर मएाी गूढउ थम्, मइ दवि दहू शरीर' ॥२४६॥

जिम जिम पाणि महण नउ प्रवसर जाइ प्रजुत्त ।
तिम तिम माय-ताइ [4]नइ चिंता चित्त बहुत्त ॥२५०॥

माय बाप सज्जन सविहू, वात विमासी एइ ।
धारू माणस मोकली, बईठा बेटी देइ ॥२५१॥

कुमर किह्वारइ न प्राविसिइ, परणेवा परदेसि ।
सउ हासारथ होइसिइ, इम चीतवइ नरेसि ॥२५२॥

राय राणा सूमी भला, मागी रह्या महीस ।
माय बाप सहू वूझवी, सही ए सही न रीस" ॥२५३॥

तीणि कारणि तप आदरिउ, मइ महेसर-पासि ।
पूरी ईस मासि अनेकनी, [6]परतु छट्ठइ मासि ॥२५४॥

पुरुष न को पईसी सकइ, ए वनमाहि अजुत्त ।
आवइ कोइ किह्वार ते, जे हुइ [7]पुण्य पवित्त ॥२५५॥"

---

१ 'वली' प्रा २ 'सामल्य' प्रा ३ 'महाप' प्रा ४ 'तनि' प्रा
५ 'प्र' प्रा टूक २४३ नथी ६ परता छठइ' प्रा ७ 'पुनि' प्रा

[1]त्रित्ति साहसि सुयमि, लीला अ गि मणु पमो ।
इत्तिय गुणि पहुवच्छ [2]मूनु, [3]न कोइ सुभट सूदा समो ' ॥२८७

[धारापति प्रश्न]

(दूहा)

[4]रा पूछइ "सुणि बदीयण [1] कुण दिसि कुमर पहुत्त ? ' ।

[बदीजन वचन]

[5]"'उत्तर ऊजेणी थिवो, गिउ सामलि-सजुत्त' ॥२८८॥

(वस्तु)

भूप चिनइ, भूप चितइ, निय मन माहिं ।
"ए [6]काई कारण शिव-तणू, मूदा प्रनि जे राउ रूठउ ।
[7]कामुककुल जगि जाणीइ, लीनावई[8] जि तूठउ ।
सयणि विमासी चालीउ, राजा लोर सिउ राउ ।
उच्छव ईसर प्र गणइ, सपत्तउ समवाउ ॥२८९॥

(चउपई)

[9]लीला सूदउ सामलि सचरइ, वनिता सवे विमासण करइ ।
[10]"का जाई ? आठवइ उपाउ ता राणी सिउ [11]पुहुतउ राउ॥२९०

कोलाहल कीयउ कामिणी, बिइ वड वाहुगि वद्धामणी ।

[मदयवत्स वधामणी]

"अवसरि भलइ पधार्या आज, तू अरि-तणा हिव सरिया काज२९१

---

१ 'कीरति मा०स सिद्धि, जस लीला वयरा' मा २ 'तणु प
३ 'कोइतेह सुभट सूण समउ' मा ४ 'पहु पूछइ, कहि प ५ 'श्री
मालिउ ऊजेणी ! कप जु' मा ६ काईम परम तणउ सत्त, पुत्त पुहु-
वच्छ रूसइ' म ७ 'कामिक लिगजु' म ८ 'लावइ तुठो' म ९ 'ता' म
१० 'आ काई' मा ११ 'आविउ' मा

[सार्वलिंगी प्रश्न]

सार्वलिंगि ते सभली, पूछइ [1]वयण विसेस ।
"तइ किहि दिट्ठउ, किहि [2]सुणिउ, सही [1]ए सदय नरेस ?"॥२४७॥

[लीलावती-वचन]

"रायगणि राजा तणइ, बोलइ वदिण-वृंद ।
धीर भणी ते वरणवइ सही ! ए सदय नरिंद ॥२४८॥

धीर [3]माहारउ माउलउ तात वदीतउ वीर ।
वीर भणी सूदउ वरू, कइ दवि दह्यू शरीर ! ॥२४९॥

जिम जिम पाणि ग्रहण नउ अवसर जाइ अजुत्त ।
तिम तिम माय-ताइ [4]भइ, चिंता चित्त बहुत्त ॥२५०॥

माय बाप सज्जन सविहू, वात विमासी एइ ।
बारू माणस मोकली, बईठा बेटो देइ ॥२५१॥

कुमर विह्लारइ न आविसिइ, परणेवा परदेसि ।
तउ हासारथ होइसिइ, इम चीतवइ नरेसि ॥२५२॥

राय राणा भूमी भला, मागी रह्या महीस ।
माय बाप सहू बूझवी सही ए सही न रीस [5] ॥२५३॥

सीणि वारंणि तप आदरिउ, मइ महेसर-पासि ।
पूरी ईस भासि अनेकनो, [6]परतु छट्ठइ मासि ॥२५४॥

पुरुष न को पईसी सकइ, ए वनमाहि अजुत्त ।
आवइ कोइ विह्लार ते, जे हुइ [7]पुण्य-पवित्त ॥२५५॥"

---

१ वली' मा २ सोमल्य' मा ३ 'म्हारउ' मा ४ 'तनि' मा
५ 'म' मा दू क २४३ नथी ६ परता छठइ' मा ७ 'पुनि' मा

[1]खित्ति साहसि सुयसि, लीला अ गि अणु पमो।
इत्तिय गुणि पहुवच्छ [2]सूनु, [3]न कोइ सुभट सूदा समो'' ॥२८७

[धारापति प्रश्न]

(दूहा)

[4]रा पूछइ "सुणि वदीयण ! कुण दिसि कुमर पहुत्त ?'।

[वदीजन वचन]

[5]''उत्तर ऊजेणी थिको गिउ सामलि-सजुत्त" ॥२८८॥

(वस्तु)

भूप चिंतइ, भूप चिंतइ, निय मन माँहि।
''ए [6]काई कारण शिव-तणू, सूदा प्रति जे राउ रूठउ।
[7]कामुककुल जगि जाणीइ, लीलावई[8] जि तूठउ।
वयणि विमासी चालीउ, राजा लोक सिउ राउ।
उच्छव ईसर अ गणइ, सपत्तउ समवाउ ॥२८९॥

(चउपई)

[9]लीला सूदउ सामलि सचरइ, वनिता सवे विमासण करइ।
[10]''का जाई ? आठवइ उपाउ, ता राणी सिउ [11]पुहुतउ राउ॥२९०

कोलाहल कीधउ कामिणी, विइ वड वाहगि वद्धामणी।

[मदयवत्स वधामणी]

''अवसरि भलइ पधार्या आज तू अरि-तणा हिव सरिया काज२९१

१ कीरति साहस सिद्धि, जस लीला वयणु' आ २ 'तणु' अ ३ 'कोइतेह सुभट सूरा समउ' आ ४ 'पहु पूछइ, कहि' अ ५ 'को चालिउ ऊजणी ! क्य जु' आ ६ कारिम परम तणउ सत्त, पुत्त पुहवच्छ रुसइ' अ ७ 'कामिक लिगजु' अ ८ 'लावद तुठा' अ ९ 'ता' अ १० 'जा काई' आ ११ 'पाविउ' आ

जस [1]कजि तप तप्पउ छमास, ते परमेसरि [2]पूरी ग्रास ।
'स्वामी ! दिमि ग्राणी ग्रवधारि, [3]ग्रा सूदउ नइ सामलि नारि२६२

[धारापति ग्रागमन]

माहेसर प्रति करी प्रणाम, रा चचलि चडी घमकायउ ताम ।
पूठउ थिकउ [4]परि थिउ सहू पूलिउ, सूदानइ जई सीकिइ मिल्यउ२६३

[बारहट्ट वचन]

बारहट्ट बोलाविउ वीर "साभलि सूदा ! साहसधीर !।
ऊभउ रहउ, ग्रवधारि सरूप, तू भेटेवा ग्रावइ छइ भूप' ॥२६४॥

बदिए तउ बोलाविउ जाम, पय खचीनइ [5]रहिउ ताम ।
ता राजा छाडी रेवत, साई [6]दीधू सामलि-कत ॥२६५॥

[लीलावती पिता स्नेह वचन]

सार्वलिगि नइ नामइ सीस 'पुत्रि-भणी [7]बोलावइ पृहवीस ।
'माई महासति जे ग्रागिली ते तू ग्र भगतिइ दीसइ भली' ॥२६६॥

बारू वक्ष एकनी छाह [10]राउ सूदु बे बईठा साह ।
ऊजेणी ग्रधिपतिनइ ग्राधे, सदय [11]भेटिइ हुई समाधि ॥२६७

[सदयवत्स विचित्र प्रश्न]

"ऊजेणी वसुधा विख्यात सूदा नामि [12]ग्रछइ सइ सात ।
पण मोलविइ म ग्रादर करउ वात विमासी बाहइ घरउ ॥२६८॥

ते किम [13]इम एकलउ भमइ ?, ते किम पालउ पथि ग्रवगमइ ?।
तू धारा-नयरी-नायक, हु पाधरउ ग्रछउ पायक ! " ॥२६९॥

---

१ 'कामिनी जि तप नप्पु' पा २ 'पूगी' पा ३ 'पा'पा ४ 'बहु परि प्पु पछइ' पा ५ मूग रेहि जइनइ मिलइ' ६ 'जोड' प ७ लीधु' प ८ 'ते दिइ ग्रासीस' पा ९ 'तइ तोठइ ग्रावइ पा १० 'राजा बैठू० प ११ 'दीठइ' पा १२ 'बसइ पा १३ 'एकला बनमाहि' प

[बारहट्ट-प्रवर । परिचय-निवेदन]

(दूहा)

बारहट्टि [1]इरिणइ अवसरि वदियरण बोलिउ इम्म ।
'सूद' [2]ति सहू अम्हि समनिउ, नू अ राउ रूठउ जिम्म ॥३००
ऊजेरणी अधिपत्ति तू, आ धाग [3]धरवीर ।
मेलउ माहसरि कीउ, छडि विमामरण वीर ।'' ॥३०१॥

वदिरिण-केरइ बोलडे, थसिउ सूद सकेत ।
परण्या पाखइ न छूटोइ, ए सहूइ हर हेत ।' ॥३०२॥
[4]सिउरण समस्थि म अवगरणइ, मूदइ मा महिलाउ ।
सावलिगि साथिइ सती, [5]तह मुह रक्खइ राउ ॥३०३॥

[लीलावती गुण-वर्णन]

(गाथा)

नर नारि सार परिवारे, पक्खलि [6]मिनिय नरिंद नर खने ।
लीलावई लावण्य-वयरिण, न वुनो गोलीय बलिहार मज्झम्मि ॥३०४॥
अह लीलावई नाम, लीला-गई रायहसम्म ।
उयरि बरणी पडिबिब पुट्ठीय पडिबिबिउ हारा ॥३०५॥
[7]शिव जोम समे उपवासत्त ये मज्झि रयरिण सर मज्झे ।
जल-केलि-करण सुक्क, [8]नीरस तरूइ नील पगुरण ॥३०६॥
तह पगुरण प्रभाव पल्लवियउ, सुक्क तरूअर तिवारो ।
तिरिण [9]पल्लवरण पुज्जिय शिव, वच्छति सदय भत्तारो ॥३०७॥

---

१ 'तरणइ' मा २ 'तुम्हें सहू सामलिउ' मा ३ 'नयरी धरि' म
४ 'मूमण सवे मइ अवगण्या, मुदु अछइ सामइ' मा ५ 'तेणइ' म
६ 'तह मरा जेहिमि' म ७ 'शिव-सोम उपवास समइ, पय-अभि' मा
८ 'नी सस्य तरुवि' मा ९ निणि पूजिसि, शिव-कठिनू' मा

[1]मउदद्वय मउनीया, भूपाना मवन मूर मामता।
ते [2]अवगणिय आएामा, गीनावय लग लग्न सुद्दे ॥३०८॥
[3]अधिपति अधिरागी मांथि, मेणारिव वारहट्ट वहु वभो।
पाएो पाणि-ग्रहण किद्ध, सग्मि मुदयवच्छम्म ॥३०६॥

[सदयवत्स सोमाअनी-पाणिग्रहण]

(वस्तु)

राउ [4]रिज्झउ, राउ रिज्झउ, सिद्ध स हि कज्ज ।
[5]मयन लाज आएादोउ, वदीजण मुयस तम बोलइ ।
विप्प वेद भुणि उच्चरइ, हूणगमणि हरसति बोलइ ।
साडीय चउरा चग निहि बिहु राजा रहि आवासि ।
अध-दल सिउ अभिकारोउ [6]मृ विउ मूदा पासि ॥३१०॥
ताम [7]चल्लिउ, ताम चल्लिउ मिलवि मनरगि ।
[8]राजासिउ राणी सवे, कुमरि माई धरवीर धरणि ।
लीलावई-घर जोइवा, सावलिगि सिउ भेट करणि ॥
सदयवच्छि प्रमदा सविहू कीधउ एक प्रणाम ।
शाई देई सामलि-तणा [9]बोलइ बहु गुण-ग्राम ॥३११॥

[सामली रूप वर्णन]

(षटपद)

आगइ अहर रस रत्त अनइ अहर विलासीय ।
आगइ लोयण लाइ अनइ कज्जलिहि बलासीय ॥

---

१ 'मडा था आ २ 'मवणीय मागध नयी' आ मां आ 'ा द नयी ४ 'रुठउ सिद्धि सह' आ ५ दिइ महेसि मगिउ कत जि लीलावतीय लघु ततखि तोण दिणि मुरित लगन लेउ दिल करण किद्दउ' म ६ 'मेल्हिउ' ७ 'वलीय' आ ८ 'राजा एसिइ म ९ 'ते बोलइ गुणग्राम' म

आगइ थरणहर थोर, अनइ हाराउलि भारीय ।
आगइ काम गायम धारि, अनइ झकरि झमकारीय ॥
आगइ काम कीय कामिनी, अनइ वस तन सि ऊजली ।
पट्टवच्छ-तरणउ भमर रगि रसि, इसी नारि सूदा मिलो[1] ॥३१२॥

[सार्वलिंगा-सत्कार]

(चउपई)

आराणि वईसरणि आदर वहू, [2]सार्वलिंगि सतोमिउ सहू ।
बीडा आपइ आपरण हाथि, जे धरिण आवी धाररिण साथि ॥३१३॥
सार्वलिगि सनमानी राइ, राणी सवि रलीयाइति थाई ।
ऊठी अवला आयस मागि, सतोषी सामलि सोहागि ॥३१४॥
चानी चद्रवदनि चमकत [3]किरि कदप्प लीलायई क्त ।
राजकुमारि रूपिइ रति जिसी, सार्वलिंगि सविहू -मनि वसी ॥३१५॥

[लग्न निमित्त मिष्टान्न भोजन]

घडी चडाहि गमि घहु वहु आदर-सिउ आरोगिउ सहू ।
लगनवार लोलावई रेसि सदयवत्स वर भरीइ सेसि ॥३१६॥

[वर-तुरग प्रशस्ति]

(राग धउल धनासी)

आमण-तणउ अणाविउ ए ।
नरवरिइ तरल तुरग, ए सखी ! ।
साहण-पति पल्लाणविउ ए, [4]पलाणि पवग ।
तीणइ वरराउ चडाविउ ए ॥३१७ ॥

---

[1] 'ट्ठ क ३१२ अमां' नथी २ 'लीलवइ' प्रा ३ 'काम जिस्यु' प्रा ४ 'मति मानहर' प्रा

(छद चामर, त्रिताल)

घडति तेवि जे जडति ते तुरग आणीउ ।
जे गुद्ध रित्त सानिट्टत्त, सदाणे वसाणिउ ॥
पायालि हु ति [1]वीमयउ हो मदीय आसणे ।
सोहति सदयव म वीर, त तुरग आसणे ॥३१८॥

[2](धउल)

चिहु दिसि च्यारि चमर ढलइ ए आ आ।
सिरवरि ए सोहइ छत्र, विप्र वेय-धुनि उच्चरइ ए आ आ ॥
आगलि ए, नाचइ नानाविध पात्र ।
बह वदिए कलरव करइ ए ॥३१९॥

(छद चामर त्रिताल)

करति वदिएा अणिक्क मगलिक्क मालयं ।
विचित्त त्रित्ति, पत्त पाउ राग रग तालय ॥
चडी तुरगि, चगी अ गि, [5]सार सु दरी रसे ।
ति चालवति नारि च्यारि, चामर चिहु [6]दिसे ॥३२०॥

[वर यात्रा धवलगीत वणन]

[7](धउल)

वर आगलि थिउ सचरइ ए आ आ ।
राएा ले ए सरिसउ राउ, पायदल पार न पामीइ ए आ आ ॥

---

१ 'सिद्धि सित्ति' आ २ 'पयाकिउ' आ ३ 'मदीइ सासणे' आ ४ ससिर सोहइ छत्र अलब कि चिहु दिसिचप ारि चमर ढलइ ए। बदियण कलिरव करइ बहूत, कि अगलि यात्रा नाटक करइ' ॥ ५ 'तत्थारि सारि सु दरी,' आ ६ 'दिसि किनिरी ॥ ७ 'वर आगलि थिउ चालइ ए राउ कि पयदल पार न पामीइ, ए। ततखिण बत्तु नीसाएा जे वाउ कि हिइ हीसइ गज सारसो ए ॥' अ

वालोय जउ ए नीमाए जे धाउ ।
हय दीसइ गयराय सारसी ए आ आ ॥३२१॥

(छद चामर, त्रिताल)

[1]करति मारसी गइ द, सू डि-दडि]डवर ।
नीसाए [2]वाउ, ढक्क धाउ, ढोल वज्जइ अ बर ॥
पवित्त वाउ, [3]दिन्न राउ, वेगि वावरइ करो ।
[4]प्रेमि सदयवच्छ वीर, सपत्त तोरणइ वरो ॥३२२॥

(धवल)

गय गामिणि गुण वनवइ ए-आ आ ।
ससिमुखीय सुकोमल महमहइ ए ॥
करइ सिणगार हार एकाउलि उरि ठवइ ए ।
ककण कु डल झनहलइ ए ॥३२३॥

(छद चामर)

नरिंद इ द मत्त लोय, लोय-मज्झि सोहिइ ।
पदिट्ठ दिट्ठ माणिणी, [5]मणत रगि मोहिइ ॥
भवानि पत्ति-पाय भत्ति कन लद्ध कामिनी ।
ति [6]सूद वीर, सप्नवति, [7]गेलि गयद गामिणी ॥३२४॥

(धवल)

करूप ए समउ कुमार, अहिणवउ इ द नरिंदवरो ए ।
ससि भरति कुमार, सदयवच्छो शृ गार करति ॥
हरसिद्धि भरिा विप्र, वेदधुनि उच्चरइ ए ॥३२५॥

१ 'हय गय होस" सारसी कहि,' मा २ 'ोल ढक्का धाउ हूय साव प्रवर' म ३ 'दितिराउ' म ४ 'इणि परि सदयवछ वीर, सपत्त करिसी-नणो वरो' मा ५ 'मन्न रगि म ६ 'ते सूर वार' मा ७ गेलिइ मायवर मामिन।' मा

[1](मौक्तिकदाम छंद तत्त कुं डलिउ)

पउमिणि हस्तिनि, चित्रिणि दारा, सखिणि सारइ किद्ध सिंगारा।
रति पति रंगि, मिलवि सहि रामा पेख्खिवि सदयवत्स वरकामा ३२६

जे काम-नरिंद तणइ दलि सारा, गमइ मत्त पयोहर भारा।
जे हेलि सा गिहिल्लि[2]चलइ चमकंति ते सुद्द नरिंद स्यू रंगि रमंति३२७

जे नेय भय दिट्ठ कि तद्द कुरंगि [3]यत्त सरेह सुनेह सुरंगी।
जे चपकि चदनि अंगि गमंति, ते [4]सुद्द नरिंद स्यू रंगि रमती ३२८

करइ नित मानिनी माणणि सोह,जे जाणि जुवाण तणइ मनि मोह
जे पत्ति उरत्थलि नारि नमंति, ते सुद्द नरिंद स्यू रंगि रमंति।३२९

[5]ठवइ उरि हार कि तारय-श्रेणि, ढलंति नितंब प्रलंबित श्रोणि।
जे ताणणि आकणि नित्त घुमंति, ते सुद्द नरिंद स्यू रंगि रमंति ३३०

[लीलावती सखी विनोद]

(षट्पद)

"हे सही [6]कहि कुण कज्जि, अज्ज उंहास अंगि बहु ? ।
[7]कुंकुमि मज्जलि मणाय-कुसुमि, सिंगार किद्ध सहु॥
भरीय सेसि सीमंत, [8]कंन कंदर्प रायघरि ।
गुडीउ माहण मयमत्त नित्त सरि सज्ज कि [9]उपरि॥
माणिसि मयक मधु रति मधुप, [10]पहुवच्छ-तनय मुज्झ मनि वसिउ।
उल्हवण अनल[11] न किततु रयणि सदयवच्छ सुखनिहि जिसिउ॥३३१

अगगइ [12]अहरा रत्त अनइ वलि विलासीय,
अगगइ लोयण लोइ, अनइ मज्जलिहिं अन्नासीय,

---

१ 'मौत्तिक [illegible] डलिउ' पा २ 'वलइ' पा ३ 'जेउत्त' प
४ 'ते सुदय वत्स सिउ रंगि रमंति' पा ५ 'ठिइ' पा ६ जे तुरणी
निच्छद हुरमंति' पा [illegible] 'कुमरिति' पा ८ 'कन ठक परिय' पा
९ 'सरि' पा १० 'पुहर मनि सनुक्रमु ११ 'न किनु रणमरि' पा।

अगइ [1]थणहुर थोर, अनइ हाराउलि मारीय,
अगइ गय मगारि अनइ [2]नेउर झकारीय
अगइ कामुकीय कामिनी, अनइ [3]वसत निसि उज्जली ।
पहुवच्छ-तणाउ भमर रगि रसि, [4]इमो नारि सूदा मिलो॥३३२॥

[लीलावती वरप्राप्ति-धयता]

[दूहा]

लीलावई मनि चीतवइ "[5]ईमरि किउ पसाउ ।
ऊजेणी थिउ आणिउ, सदयवत्स पहु जाउ ॥ ३३३[6]॥
जस कारणि मइ एकमो, तप कियउ छ मासि ।
ते आशा [7]मुझ पूरवो सामी लील विलासि ॥३३४॥
हारि दोरि कङ्कणि हिं, सयल शृ गार किद्ध ।
लीलावई मन रगि [8]रसि, सदयवच्छ कर लिद्ध ॥३३५

[चतुर मगल]

राय पखानइ पाय वर, सासू सेसि भरति ।
विप्र भनइ वनिना सवे, मगल चार करति ॥३३६

(छद पद्धडी)

मगल चार करति, हत्थ लेई [9]हत्थे लावउ,
मतरपट उद्धरीय, किद्ध बिहु कर-मेलावउ ।
सभ सूर स जोई, नारि वर नयणि निहालइ,
करइ सुकवि कइवार, राय वर पाय पखालइ ॥३३७॥

---

१ 'सिहण मुथोर अ २ 'झमरि' मा ३ 'वसत निसि' अ ४ 'अनइ सवर मुदा मिली' अ ५ दूक ३३३ 'मा' मा नथी ६ 'पूरी हुई' मा ७ 'पुहुनी वम्मडपि विहि' अ ८ 'मथवालउ' मा ।

(वस्तु)

नारि लद्धी, नारि लद्धी, नाह नव रंग ।
नारी लद्धी नवल, अमर वेगि[1] आ हुन्ति पामीय ।
अध [2]सपति अध रज्जस्यु, दिद्ध उदक सइहत्थि स्वामीय ॥
[3]वीर वली चिंता बहु, जिमजिम व्याहइ राति ।
हेम धण हरसिद्धि भणइ, पुरिस [4]पुत्र प्रभाति ॥३३८॥

[विवाह-कुलाचार]

(चउपई)

[5]जउ मनरंगि विहाणी राति, दातण करइ कु अर परभाति ।
ता [6]साला सवि आव्या सार पुण्यवतना पुन्न अपार ॥३३९॥
[7]तीणइ ते ऊजेणी धणी बोला विउ 'बहिनेवी'-भणी ।
शिर नामी वईठा सुविचार, कणम लगइ[8] जिके जूआर ॥३४०॥

[द्यूत क्रीडा]

मदयवच्छ सविहू दिइ मान, प्रीति सरिसा आपइ पान ।
[9]तीणइ मेल्ही पू जी पड माहि, जूअ मागइ सवि सूदा-पाहि ॥३४१॥
ते बोलइ 'सूदा ! सुणि वात, करी सूथ अम्हस्यू रमि रात ।
भइ आपणी भलउ सहु कोइ,[10] पछि पियारी दुहिली होइ ॥३४२॥
मदयवच्छ लहुडपण सीम, जू आव्या [11] ता भणिवा नीम ।
रमिवा [12]मसि असिवर ऊडवइ, हस्या[13]वीर कलकलिया सवइ ।३४३

१ आहुति' प्रा २ 'सपतिसु तस जुगत्त उदक दिउ' प्रा ३ वीरवर' प्र ४ पत्र' प्रा ५ 'मसइ भावि जागीउ जूआर दातण करवा काज [illegible] आर' प्रा ६ 'साला स्यु' प्र ७ 'उत्त हे ऊनेणीनु धणी' प्रा ८ 'सेनुउ' प्र ९ 'जण मेली बईठउ' प्रा १० 'पइहु' प्रा ११ 'तइ कहिवा' प्रा १२ 'रसि' प्र १३ 'धीतिवउ खलीपा' ॥

लिउ हयीग्रार हरावी सही, सूय पाखइ [1]न रमाडइ मही ।
गाठइ गरय न हाटि निखेव, सूदउ वीर मनावउ सेव ॥३४४॥

[हरसिद्धि दत्त-वर व्रत-जय]

सदयवच्छ समगी हरसिद्धि रामति मिसि लूसी निइ रिद्धि ।
पाडिउ [3]पइन [4]पहिलुइ दाणि, साला हाग्रारथ नइ हाणि ॥३४५॥

लीधा लाख हरावी हेम, ए ऊन्वाणउ साचउ एम ।
[5]ग्या ग्रन्य काजि, मनेरू थाइ, ते घाठी कहिं कल्हिवा जाइ? ॥३४६॥

सालाने वानइ ते वाठि, [6]वहिनेवो ते बाघोउ गाठि ।
[7]ऊठ्या सवे स्नारा भणा, ग्रइ पसरावी सूदा-तणी ॥३४७।

[सम्यक्त्त्वस्नद्धृत द्यूतद्रव्य-दान]

राजा-नइ घरि जाणि जग, मागणहार-तणइ मनि रग ।
सदयवच्छि वरि माडिउ करण, हाथ ग्राडावी ग्रढारइ वरण॥३४८॥

[8]ठाकुर पुरोहित पडीग्रार, [9]सूदा सामलि ? [9]भनाव्या सार ।
निह मन गुढिइ दोधू मान जुगता-जुगति दिवारउ दान ॥३४९॥

छ दरसण पाखड छनवइ, [10]दानि मानि मागण रजवइ ।
ग्रापइ सविहू काजि सुवर्ण, किरि ग्रहिणवउ ग्रवतरिउ कर्ण ॥३५०

[11]राज मानि माणस प्रति वहू, ग्रापी ग्ररथ सतोसिउ सहू ।
सूदउ वीर पडावइ साद, [12]ग्रढार वरण दिइ ग्रासिर्वाद ॥३५१॥

पहिलू [13]मोकलावी महेस, तउ ससरा प्रति [14]गिउ नरेस ।
ग्रायस मागी ऊभउ रहइ, ससरउ सदयवच्छ प्रति कहइ ॥३५२॥

---

१ 'रमाडू नहीं' ग्रा २ 'मनायू' ग्रा ३ 'जइत' ग्र ४ 'चिहू' ग्रा ५ 'गणि काउ नइ' ग्रा ६ 'तु पूश्री पू जी बाधिउ गाठि' ग्रा ७ 'लेई राजा' ग्रा ८ 'मूद वाल' ग्र ९ 'तोडा या सुविचार' ग्र १० 'मानिइ मागण मन ग्र ११ 'राज माहि' ग्र १२ छ दरसण घरि थानि वदि' ग्रा १३ 'जई मोकलावइ ईस' ग्रा १४ 'नामइ सीस' ग्रा

[लीलावती पिता वागपति वचन]

"ऊजेणी अधिपति [1] अवधारि, [1]पगाउ करी अम्ह नयरि पधारि।
मागवि अत्र गपति अत्र राज, [2]मागि जि राईं आईइ काज ॥३५३

दे उउर वहु धीधु दत [1], तुम्ह जावा जुगतू नहीं हेव।
आगइ एर नारिनउ गाय गीजो- मिउ दिय बाप्यु हाथ' ॥३५४॥

[सूत वचन]

सूडु ससरा मागनि साच वानइ बान त ग्रहण-वाच ।
"लीलावती नइ सांपिइ लेमु सामलि पीहरि पुहुचाडिमु ॥३५५॥

करीय रहण पहिलू परमि, तउ [3]आणिसु अबला बिहु रेमि।
जउ सासरइ रहू सुख भणी, तउ [4]नाजइ ऊजेणी धणी ॥३५६॥"

[कवि वचन]

जिणइ तात तणइ अधबान, छाडीउ राज करी तण तीन।
त किम सूडउ सासरइ रहइ ? सामलि-मरिमउ मारगि वहइ॥३५७

[प्रयाण]

वूल्या परवत विसमा घाट आगलि इद्र वाहण-नउ थाट।
वाघ सिंघ वानर वनि मिलइ देखी वीर सुभट खलभलइ ॥३५८॥

मुपुरिम नसीह नामइ सयर ते प्रति दीध हरसिद्धिनु वर।
मधुरइ सादिइ मोर कीगाइ, वावन-ना वध ढीला थाइ ॥३५९॥

[गाढ अरण्य प्रवेश]

आगलि अगोपम अति कांतार काठ समुद्र न लाभइ पार।
नवि जाणीय सवार अमूर, वनमाहि पइसी न सकइ सूर ॥ ३६०॥

---

१ गया' था २ मागिन देव' भा ३ 'आविहु अवला' भा
४ 'जम जाइ' भा

पुहुतु वीर ते वन मझारि, गाढइ करि करि साही नारि।
"स्वामी ! धार अपार अवनारि", विण वावो तिहा पांवइ सालि ३६१

मरत धान खडधान अपार, पखि जाति नवि लाभइ पार।
मृग नइ सालीही गहिगहइ, मढार भार वन देखो मन्नहरइ ।३६२

मजलि सरोवरि झीलइ हस परवन पाखिलि अति वहु बस।
धम धसाधस परवत जलइ, नई नीझरण गिरि हि ऊतरइ ॥३६३॥

निगि नीरि उन्हाइ आगि, गज वे मडलि जई लागी धागि।
वनि करमदा दाडिम द्राख, नालिकेरि लीवुइ-ना लाख ॥३६४॥

[चक्वाकी प्रति-सार्वभिमा अन्योक्ति]

वासु वीर नीरतटि रहिउ सामलि सूदु बोलावीउ ।
"स्वामी ! आ साविज अवनारि, काठइ वईठा करइ पोकार ॥३६५

च्यारि पुहर चकवाक इम रडइ, जाणे पाटणि पुहरा पडइ।
विहुंया कमल, विहाणी राति, प्रीति प्रीय पामिउ परभाति ॥३६६॥

मामइ पडतो ते साहमू जाइ, सार्वभिगि मुख दीठउ रोइ।

(उपजाति)

विनाकम वाला मुख चन्द्र विंव । कंठे च मुक्ता मणि-हार तार।
पुर्नानिशा विभ्रम भीति हेनि । सूर्योदये रोदिति चक्रवाकी ॥३६७॥

(चउपइ)

मूकिउ नयर मही निटोल, मूकिउ वन ते बोलइ बोल ॥३६८॥

[घ्रूतकार-स्वरश्रवण]

जा मवगमइ पथ प्रति घणउ ता सुर सुणिउ जूआरी-तणउ।
हाथ माहिल्या हीरा सोइ, एक भणइ "ए जोता जोईइ" ॥३६९॥

[पवत प्राकार प्रवेश]

परयन-शिरि पोढउ प्राकार, जस कमाड कामीमा पार।
दीसइ हट्ट, धवलगृह श्रेणि, रा मदिरि जई [1]रहिमु तेणि ॥३८६॥

[अनाथ स्त्री रुदन-श्रवण]

(दूहा)

राती रोग्रती साभली, नीघणीमाई नारि ।
सूदइ सा पूछी विगति, थणि [2]धावल हर मझारि ॥३८७॥

पूछी ता प्रमदा कहइ "[3]सांभलि साहसधीर ! ।
हूँ निधि नद नरिंदनी, सूद [4]! विलसजे वीर' ॥३८८॥

[नद नरेंद्र निधि दर्शन]

सावलिंगि नवि सभलइ नारी निद्रा लिद्ध ।
सदयवच्छ [5]रवि ऊगमणि पेखीय सयल [6]समृद्धि ॥३८९॥

धण मणि मुत्ताहल रयण, हीरा हेम अपार।
अवलोई सूदु सहू, उरी दिद्ध [7]दूआर ॥३९०॥

[निर्लोभी सदयवत्स]

बलि बाकल पूजा पखइ, लच्छि न लीधी हत्थि ।
दीठी अण-दीठि करी, [7]सपय मूकी समत्थि ॥३९१॥

[पुण्य प्रशंसा]

(वस्तु)

पुण्य तूसइ पुण्य तूसइ, सकति सुर सच्छि ।
पुण्य प्राणि वनिता वरी, [8]पुण्य पुव्व पयरद्दुण लब्भइ।

---

१ 'रहीमा' मा २ 'धवल' मा ३ 'सूणि हो' मा ४ सूरि' मा
५ 'सपद्धि' मा ६ 'बार' म ७ 'मू की सूदइ मा ८ 'पवर पुण्य मा

दान दिइ ते धन्य नर, [1]अदयवंत वीहइ न खल्भइ ।
पुण्य ज पुन्यय भव पसइ, [2]वंछित सुख न होइ ।
[3]पुण्यवंत पुण्य ज करउ, सुख संतोष सवि होइ ॥३६२॥

[नगरी अवलोकन]

(चउपई)

[4]सविहु परि गढ जोयउ फिरी, चालिउ [5]वीर मनि चिंता करी ।
परमेसर जउ करइ पसाउ, तउ ए रूडउ रहिवानउ ठाउ ॥३६३॥

दिवस च्यारि वनि [6]वहिउ नरेस आगलि दीठउ वसतउ देस ।
[7]पुर प्रासाद नइ पट्ट निरवाण, गामि गामि गिरूआ अहिठाण ।३६४

वारू लोक-तणा तिहां वास [8]पखी पथिक करइ उल्हास ।

[मार्गे भाट मिलाप]

आ वि जाइ [9]वहता वाट ता सर-पालिइ भेटिउ भाट ॥३६५॥

[10]नर एक नउ अवारउ जाइ, पूठिइ प्रमदा पाली [11]पाइ ॥
भाटि बोलाविउ "सुणि हो सूर! रहि राउन! [12]अति थिउ असूर"५६६

भाट भोगवइ [13]गाम नि ग्राम आदर सिउ आणिउ आवासि ।
पेखा अ ग-तणउ [14]आकार, ते आवर्जन करइ अपार ॥३६७॥

तेडाविउ वालद तिवार, मर्दन दवा काजि कुमार ।
क्नावली हुईय अ घालि, भोजनि शालि दालि घृत घोलि ॥३६८॥

---

१ 'अदयवंत पण पुण्य युगमइ' अ २ 'जि सुख नगीरि' आ ३ 'पुण्यइ ए पामीय सहू मयइ सूरइ कीरि' अ ४ 'गाढा गुहरि' अ ५ 'वीर चीतवणा' अ ६ 'वनिउ' आ ७ 'पूरव' अ ८ 'पखीय हृदय आ ९ 'वसनी' आ १० 'दासइ नर एकनु जि' आ ११ 'काइ ? आ १२ 'दइ' आ १३ गामनू आ १४ 'अधिकार' अ

"नयरइ मंदिरि निद्रा ठाम, करउ पथिक[1] करउ विश्राम।"
जा बे जण बईठा एकंति, ता कामिणि बोलावी कंति ॥३

[मूदा-वचन]

सुणि सामलि[1] बोलिउ माहरू कोस पच पीहर ताहरू।
दिवस पच राह [2]चइ प्रदेशि, हूँ पूहचू पइठाण प्रदेसि ॥४०

अहि ऊगमि पेखू पहिठाण, जई जू ठाणइ मारू ठाण।
जे [3]सूरा समरथ जू-जाण, तीह-ऊपरि माइरू मडाण ॥४०

लीला लाछि हरावी [3]लिउ, तेहनउ अरथ दोसीनइ [4]दिउ।
तू पहिरेवा सरीखा सार चुहरू वस्त्र विविध शृ गार ॥४०

घाट हुडी नइ वस्त्र विहीण इम जाती तू दीसिसि दीण॥
पहिरण पखइ पीहरि गमिसि, तउ माहरी माम नीगमिसि ॥४०

[चारण गढ़ निवास सूचन]

वदिण तणइ बहिन क्षत्रिणी क्षत्रिणी मानइ 'भाई' भणी।
ए नातरू नवू नही म्राज भाट भुवनि रहिता[5]नही लाज ॥४०१

[6]'जे भड माहि भवाडइ भला जावणि मरणि नही एकला।
[7]ऊठारा मागी लिइ मड, क्षामोदरि[1] क्षत्री गुरु चड'' ॥४०५

सामलि सूदानू सुणिउ वयण नारी नीर भर्या बे नयण।
'पाणी बल जे पेखइ प्रदसि, पच दिवस प्रीय[1] किमइ रहेसि'४

नारी 'देव' भणी नर गिणइ, नरनइ नारी पय लू छणइ।
इम करता 'नर न रहइ ठामि, ते नारी काइ सिरजी स्वामि''[?]४

---

१ 'छइ' प्रा २ 'भूपा प्र ३ रूपोस' प्रा ४ बोल' प्रा ५ 'नवि' प्रा ६ जे रणि चडया प्रा ७ 'ऊठारा प्रा ८ 'उ' प्रा

[सूदा-वचन]

सूदउ भणइ "मामलि ! सुणि वात, नर जाइ जोयण सइ सात ।
साति दिवस महिना मनमाहि, जिहा अबला तिहा आवइ ठाहि" ॥४०८

[सामली-वचन]

"स्वामी ! ए उत्तर अवधारि, धरयो घणू विसासइ नारि ।
नर नवनवइ भवनि रसि रमइ, सुकुलिणी दीह दूनि नीगमइ" ॥४०९

"कणय रयण मुत्ताहल हार, हीर चीर सोवण शृंगार ।
नर [1]सहू समपइ अबला हाथि, वीजा मरिमउ आवइ वाथि" ॥४१०

तीणि उत्तरि ते अबला रही, वात एक [2]पुणि वत्तइ कही ।
"सामीय ! कहिउ माहरू मानि, प्रीय ! पाटण ते नथी समानो ४११

[मन्थवासवचन]

[3]सदयवच्छ प्रम पूछइ इमिउ "कहि कामिणि ! ते पाटण किस्यू ? ।"

[सावलिगा वचन । नगर पाटण-वर्णन]

"स्वामि ! सहारइ आपू छेक, लागइ दव दीहाडउ एक ॥४१२।

जिणि पाटणि पोढा प्रासाद, मेरु शिखर सिउ [4]वहइ विवाद ।
[5]गरुउ गढ ऊचा आवास, किरि अहिणव दीसइ कलास ॥४१३॥

माहि महेस विष्णु नइ ब्रह्म, सहू समाचरइ कुलाचित [6]धम ।
[7]दिनकर भगति-सणउ अति भाव, अधिकउ परमेसरी प्रभाव ॥४१४

बावन वीर वसइ तिहा वासि, पूजइ जिनवर फलीइ आसि ।
जिन शासन गाढउ महगहइ जीव दया देखी मन रहइ ॥४१५॥

---

१ 'माणि माणिक' प्रा २ 'सहूइ आपणइ' प्रा ३ 'नरवर नइ ' प्रा
४ 'लीणी' (४१२) 'प्रा मा नथी' ५ 'मुदयवच्छ कहि आपू' प्रा ६
'मोटइ वान' प्रा ७ 'गम्भन गुण' प्रा ८ 'कम प्रा ९ 'दिन करनी
भगति पति भावि' प्रा

[प्रतिष्ठान पुर-प्रवेश]

पामिउ पुर पट्ठिाण प्रवेसह, नयणि निहालइ नयर निवेसह।
तां सरोवरि जल भरइ सुवेसह,चतुरि चतुर्विध नारि निवेसह॥४३१

[विरह विलपित पुरुष प्रसंग]

मागइ विरहि [1]वितक्खो पाणी, लागी अ गि [2]तरस मपराणी।
कज्जल लग्ग दिट्ठ दुउ पाणि, पीयउ पुरुसि पनू जिम पाणी ॥४३२

'नर नवरंग सही सवे जन, किणि कारणि पशू जिम पीइ जल?'।
नारि-[3]नयणि करि लगउ कज्जल,तिणि[4]दीठइ नर भरइ न प जल४३३

(दूहा)

ईणि नयरि जे [5]निद्धणह, तेह तणी घर नारि।
थारू माणस जे [6]वसइ तेह [7]नहु पाणीहारि ॥४३४॥

पाणीहारिइ परखीउ, नर पीयतउ नीर।
सदयवच्छ त सभलि, चित्ति चमक्यउ वीर ॥४३५॥

[अमंगल कबंध दर्शन]

पढम पेखइ नयणि, पोलि प्रवेसि प्रवीण।
पुरुष एक पय-पाणि विण, सरडु श्रवण विहीण ॥४३६॥

[गणपति मन्दिर प्रवेश]

तं पेखवि पाछउ वलिउ, गिउ गणपति प्रासादि।
आणि असुउणि ज ईणि नयरि, पडीइ वडइ विषादि ॥४३७॥

तिणि ठूठइ ते ऊलखिउ, ए अम्ह पेखि वलंति।
आणि भलेरू भेटणू, देउल-[8]मज्झि मिलंति ॥४३८॥

---

१ 'थल्यरवइ' आ २ 'तिहा मप्पाणी' म ३ 'नर करि' म
४ 'मीउजय-मय' म ५ 'निम्रण्छ अ ६ 'अछूइ' म० ७ 'तनहु' म
८ 'माहि' आ



(१) देखिये पृष्ठ ६२ कडी ४३२ ३३
'पीधउ पुरीष पशु जिम पाणी।
और (२) पृष्ठ १७०-१७१ कडी ३२९
'पसूआ जिम पाणी पीयइ ।

पूग-पत्र-फल फून सिउ, आणी अमृत आहार।
लीला लेतउ उलम्बिउ, जाणी किद्ध जुहार ॥४३९॥

[छूटा-जन कृत मूदा-वन्दन]

सउए भणी [1]ते वदीया, नीघा पूगी पान।
'भाई' भणी बोलाविउ, दिइ मनशुद्धिइ मान ॥४४०॥

[छूटा जन आत्म-परिचय]

जूठाणइ जूय केतलू ? [2]केनू जाण जूआर ? ।
उडइ नइ उडिउ सहइ, ते अम्ह दाखि विचार ॥ ४४१॥

(वस्तु)

मित्र मभलि मित्र मभलि, मुझह् वीतक्क ।
हूँअ स्वामी मीघल-तणउ, कु अर कोडि क्चण सहित्तउ ।
मइ गय हय मय पच, लेइ ए पाटण पेक्खण पहुत्तउ ॥
ते हला रसि हारिउ, नाक पाग कर कन्न ।
ईणि जूठाणइ जूअ रमइ, वलीया भड वावन्न ।४४२॥

(चउपई)

सूध न काई देवू स्वामि !, जूउ-दड पडइ ईणि ठामि।
ससिवर एक-मू ठि हारीइ, जीजा कांजिइ बाजी सारीइ ॥४४३

[कामसेना गणिका जूठ-प्रवत]

[3]वे जगु पाटण मज्झि पहुत्त, दीठउ देउलि लोक बहुत्त ।
"कहि भाई ! कोलाहल किसिउ ? ए अण-खाघइ पाणी रिसउ ४४४

'कामसेना जे नाचिणि नाम, लिइ पच सइ सोना ग्राम ।
मुहणइ सोमदत्त माणिउ, ते इहा कहडी नइ आणीउ ॥४४५॥

---

१ 'सहु वदीव' प्रा २ केता रमइ जूआर' प्रा ३ 'त मुणि' प्रा

'गणिकारी मा पनिति रढीन, तिरहारीउ मनाविउ मिन।
डोकरी मंडिउ गाडउ हाथ मर्म पालाउ न छूटइ साहु" ॥४४६॥

[गहल्ल्यया वचन]

'मस्पारगइ थानइ मुणि मित्र !, म गाहूं मति मरइ मगात।'

[द्व ठा-वचन]

"देव ! पोरउ रपी पपाउ, माली राउइ बीटिउ पाउ ॥४४७॥
तब मोदलिया कठी भाग बीजउ मति मुण्डिउ गाडा।

बीजी राउल-थाई रोड "दणि वारण टलीइ मोड" ॥४४८॥

ते जाया पुहुपु प्रासादि, डोकरि दीठी मइनी वादि।
"नर नयपोसन छइ नयरगि, न बोलिस्यइ भस्तारइ "म गि" ॥४४९

एवदनि बोलइ "गुणि साह ! भस्ति परठगा छइ राउत माह।"
सेठि-कुमर ऊचरइ गुजाण "भागण विहु जण एह प्रमाण ॥४५०

तव तीणइ विहु वारण वही राउलि वात विमासी सही।
सदयवच्छि विधि लीधा साद, तेह न उ निरवाल्यु वाद ॥४५१॥

[सदयवत्स कृत चतुर न्याय]

एव सेठि हारिउ ताम, ' माणि विन्छे दिइ दर्पण ग्राम"।
सेठिइ जे जण बोलाविउ, भरथ भारीसउ लेई आवीउ ॥४५२॥

धन रेडी भोडिउ भारीस, एकन्ति तव दिइ भासीस।
माघी थई लेवानइ भय, "दरपणमाहि गिणी लिउ गर्य ॥४५३॥'

[गणिका कपट व्यहार]

हाथि ताली देई हसिउ लोक ' राउइ लीधा टका रोक !।
म तरि तेडावी डोकरी, काढी बाहरि बोंहि घरी ॥४५४॥

---

१ 'इतनी मति माहली रढील' २ सुदय भणइ सुणि द्व ठा मित्र म ३ 'ए मुह' म ४ 'भगि मा

इक्कि छाणिइ, इकि छाटइ छारि, इकि सोजवइ अनेरइ सारि ।
एकदति तव [1]ग्रोपी इमी, राय राजा छवि राणी जिसी ! ॥४५५॥

तेह-नणइ छाकरि नही छेह, डोकरी देखी हरखी तेह ।
वादिइ विवहाराइ हरावी, टका टीक राक लेइ घरि आवी ! ४५६ ।

[गणिकाप्रति कुनम्बीजन घृणा]

भाणारणा घवनहर घमी, अबला मत्रे आवी उद्धसी ।
"कहउ किमी परि जीतउ वाद ?,' बोली न सकइ बईठउ साद ॥४५७

जीणइ घणा घामन्या ति घाठी, कला वहुत्तरि सिउ बुद्धि नाठी ।
त्रिणि दिवस जि लाघणइ लाघो, घणे घाबू ए कीधी घाघो ॥४५८

परख्या पावइ पुरुष वीमसी, नयर-माहि नर मघनइ हसी ।
"काई रे छोडी ! पूछइ काज, हारिउ वाद [2]विगूती आज" ॥४५९॥

[सघयवत्स प्रति कामसेना-आकर्षण]

काममेनि समनिउ स्वरूप, ते राउत-नू [3]जोईइ रूप ।
तेडिउ सघलउ सपरदाउ चातुरि चतुर जोएवा जाउ ॥४६०॥

पुन्ती मडपि [4]मू धा दीती, वाजिउ [5]गजर सधुडिउ गीत ।
षशकारि सातइ सुर सारि, आलति कोधा आलतिकारि ॥४६१॥

उडीमान उडवीउ तान [6]झणझुण करइ मृदग रमाल ।
घुरी घूआनी घूरली आदि रही रेख [7]रविनइ आयादि ॥४६२॥

नयण [8]वयण मन मस्तक नास, हावभाव कटि-तणा कलास ।
उर कर चरण नगइ वानवइ इम जूजूआ अ ग जानवइ ॥४६३॥

---

१ देखो' मा २ 'विगोई' आ ३ जोय' मा ३ 'जोवा नइ तिहा' मा ४ 'मधि आदित आ ५ 'गुहर मुद्ध मगीत' आ ६ 'रणझिण' मा ७ देवनइ' मा ८ 'मयण' मा ९ 'करइ' मा

[कामसेना विह्वलता]

उत्तर ऊजेणी पति दिट्ठ वइंठउ मत्त वारणइ वनिट्ठ।
कामसेनि [1] थई काम विराम, माणस थाइ न जाणइ माम ॥४६४॥

[2]तेउ चलावी भणी अवास, भूटी नाडि न [3]सनकइ सास।
नयर [4]नरेसर बाहर करइ, इसिउ पात्र भण-भूटइ मरइ ॥४६५॥

[उपचार]

राजवद जई जोई नाडि, एउ विकार नही अम्ह पाडि ।
देस विदेसी बीजा बहू, राजा आयसि आविउ सहू ॥४६६॥

एकि भणइ "ऊनारउ [5]आच,' एकि सेक दिवरावइ पाच ।
एकि भणइ "आलस छाडीइ," एकि [6]भणइ "मडल माडीइ' ॥४६७

एकि भणइ "अम्ह हलूउ हाथ ' "एकि भणइ दिइ कडूउ क्वाथ"।
आपापणी कला सवि कहइ [7]गुणीया नइ थईद गहगहइ ॥४६८

[गूर्जर वद्य निदान। अनग रोग]

गूर्जर वद्य तिह्वारइ हसिउ, जाणे धरणि धनतरि जिसिउ।
दीठइ रूपि सरूप ओलखइ, वद अनेरू रा आगलि झखइ ॥४६९॥

"एहनइ अगि अग्गलउ अनग नरवर ! को दीठउ नवरग।
महूरति एकि मूर्छा भाजसिइ, मिलिउ लोक देखा लाजसिइ"॥४७०

तास वचनि कालमुहा थाइ वलिउ चेत [8] वद ऊठया जाइ [9]।
बाहरि वरतइ भीडाभीड, प्रमदा पचबाणना पीड [10] ॥४७१॥

---

१ 'हूइ कामिनी काम' भा २ 'लेई' भा ३ 'लाभइ' भा ४ 'नरेस न भा ५ 'इसि ते' भ ६ 'साच' अ ७ कहइ' भा ८ 'एक थाइ छत्रीमु काय भा ९ 'गुणीआ नीकारकि' भा १० 'वेगि ऊठी' भा

[राजपुत्र आनयन उपाय]

नाचिणि [1]जस नायिकीदे नाम, ते तेडीनइ कहिउ काम।
"तू [2]डाहा डाखरो म जेडि, रवि [3]मदिरि जई राउत तेडि ॥४७२॥

उत्तरि बईठउ ऊची पाटि भड जे पाखलि वीटिउ भाटि।
केकि-कना सिरि भाटि भमाल, आगलि ऊडए अनइ कर माल ॥४७३॥

[वदा एकदति विरोध-दर्शन]

एकदनि तीणि वोल्हिइ बली, [4]रीमिइ पुरप एक ऊछनी।
' जिणि [5]हलूई कीधी आज, ते टीटउ तेडिइ [6]कुण काज ? ॥४७४॥

राय राणा [7]भूनलि [8]जेतला विवहारीया कहूं केतला ?।
करइ साद कोडिसर केडि, केहा गुण तू राउत तेडि ? ॥४७५॥

[गणिका द्रव्यहरण नपुण्य]

पारखि सिउ जउ कीजइ प्रेम, पाडी दिइ पीयाळ हेम।
पोठी वानी तउ घणउ विराम, सारी लोइसू [9]सारा ग्राम ॥४७६॥

दोसी [10]कोर कापडां दियइ, लूगड माहि ति बिमणू लीयइ।
काज सुरहीउ सारइ घणू, आपइ सदा सुरहू घूपणू ॥४७७॥

सोना काजि [11]किह्लारइ [12]वाहि, सूघ थउय लिइ सूना माहि।
पहिलू घाट घडीनइ हाटि, धरि आवइ घडामण माटि ॥४७८॥

बामण सिउ बहु नेह म करइ, मास पक्ष पूठिइ परिहरइ।
भाट भलउ हुइ दोह वि च्यारि, जा जूवटइ न थालइ हारि ॥४७९॥

---

१ 'जे' भा २ 'गाढी' भा ३ 'मडपि भा ४ दीसइ भा ५ हूं हालू भ ६ 'नू', भा ७ 'भपति भ ८ ज मला भा ९ माला' भ १० कापड वाह भा ११ जिह्लारइ' भा १२ पाहि' भ

तबोलीनो थोडी तीम, जिह्नइ पान पाचनो सीम।
टीटा दखी टाले द्रेठि, साह्मा जईनइ मनाव सठि ॥४८०॥

माली आपइ [1]सुरहा फल, जे वाह नइ अति बहुमूल।
मोटा झोटा अनइ घड छक तेह्नइ दीजइ तिलु छेक ॥४८१॥

फ्टरसी नइ [2]फरफट कूच, हाय किह्नारड न मेल्हइ मूछ।
ते उम्मगूनइ म दसि अडाउ कूडा करगर लाउ नसाउ ॥४८२॥

[धनवान परीक्षण]

नारणावटि नाणू [4]निरखीइ तिम आपणइ पुरुष परखीइ।
[5]जिहा जिहा दीसइ द्रव्य जतलउ, तिहा आदर कीजइ तेतलउ ॥४८३॥

[कामसेना वचन]

कामसेना नइ चडिउ काप नायकने प्रति दीघ निराप।
"ए बूढी-नणा वाल म विमासि राउन तेडी घाणि आवासि ॥४८४॥

गई रामा [6]रवि मडप भणी, कही व्याधि ते कामिणि तणी।

[सदयवत्स प्रति वचन]

"सुणि सावजजन साची वात, कामसेना तू गाता रात ॥४८५॥

हू पाठवी तीणइ तू अ पासि [7]पमाउ घणी अम्ह पावि आसागि।
म-य मनेथि मद्धइ '[8]अम्ह पणउ त वनिता [9]विक्रम तू मन्तणउ॥४८६॥

वार म लाउ वहिनउ थद दव [10] टामा तणी ? टनी छद टव।
मरइ अगूटइ मोटू पात्र तइ दाठद दुम फीटइ गात्र' ॥४८७॥

---

1 'हास्य नेह मन' प्रा 2 'फाफट' प्रा 3 'क- पग माद' प्रा
4 'परखीइ' प्रा 5 'जहनउ माथ दीसइ' प 6 'रथि' प्रा 7 'मत्रा
प्रा 8 'मति' प्रा 9 'विभ्रम' प्रा 10 'व वरिविउ' प्रा

[ठूठा प्रति सूग वचन]

सुइ भणइ 'सुणि ठ ठा मित्र !, इणि माडिउ एवडू चरित्र ।
'इम तडइ [2]निम कारण कहइ एहू वात विमासण लहइ'' ॥४८८॥

[ठूठा-वचन]

ठ ठु भणइ [3]' नवि जाणिउ भेद, म्हारि राइ-तणइ मनि खेद ।
[4]दहरा माहि दूहवी जेम, इम वीसरइ न डोकरि तेह ॥४८९॥

इणि चोमासी वाह्या वीर, इणि [5]खाइ पाडया घर घीर ।
[6]इणि वमाड विगाया भना [7]इणि रोल्या रात्त वेतला ॥४९०

वेसा-तणउ म करि वीसास वेसा-वयण ते मुहि गली पास ।
[8]म छ जेम मास नइ धरइ जीव तणउ जीवी ग्पहरन्द ॥' ४९१

[सूगा-वचन]

मइ भणइ 'हू म्र जाणू मइ वमा तणी वात छइ वहू ।
जउ भाई ! भय कीजइ एह, छयल्लपणानउ म्राविउ छइ ॥४९२

[ठूठा-वचन]

"एह म्रनरउ मही उगाउ एहनइ विपय-तणउ विवसाउ ।
इहनइ मनि माटीनी म्राम, इहनइ लहइ विदसी वास' ॥४९३

[परिचारिका निवदन]

परिचारिकि जे [9]पूठिइ वही, तीणइ घरि जईनइ कारण कही ।
त धीरउ म्रविदउ करइ, पणि ठू ठीउ 'कूटाइ करइ ॥' ४९४॥

१ 'निम प २ प्रति मा ३ 'मइ मा ४ 'हाणिउ वाद विगोइ जेह, ५ वीसरइ' मा ५ 'ख्या छइ' प ६ ईणइ ख्यास विमाया घणा मा ७ माणस जेम मछिनइ मा ८ वहसी' मा ९ 'पूछो रही मा

तउ पीजी योगाजी वाल "जई चानवि ०ठूठउ घडाल।
मानी नाग लोभवि घणू कामिणि काज वर श्रापणू ॥४९५

'तउ तीणइ गिननी नइ गूट हून्नावो वानाविउ ठूठ।
नाच-तणउ देसाडिउ लाभ काइ ए किसी कारणि नाम? ॥४९६॥

[ठूठा ने मोचन प्रलोभन]

'लाच प्राच नवि ठूठउ सहइ वाई वयन मधूरव वहइ।

[ठूठा-वचन]

'कामसेनि-लहुडी जिनलेग तेह उपरि माहरी मभिलेख ॥४९७॥

ते जउ रातिइ मइ सिउ रमइ तउ ए गेहि तम्हारइ गमइ।
बीजू [3]काइ म बोलि आल, [4]ठूठइ सरिस न घालइ चाल ।४९८।

मनि आपणइ प्रालाचीय साच, वेशा ठूठइ लीधी वाच।
चतुरा राउ ऊठाडयउ तेहि प्राणिउ गयगामिणि नइ गेहि ॥४९९॥

[कामसेना श्रावासे ठूठा गमन]

नाचिणि नर आवतउ देखि, आपणपू सवरी सुवेखि।
कणम-कलस भरि निर्मल नीर दिइ आचमण विच्छे दिइ वीर ।५००

[सत्कार]

आदर सिउ प्रवास मझारि,"आणी आवरजइ घर नारि।
भोजन भगति युगति जूजूई, मिलिया राति सुरगी हुई ॥५०१॥

घडइ झलकि जागिउ जूमार, दातण करिवा काजि कूआर।
कामसेनि प्रायस उह्लासि, दातण लेईनइ आवी दासि ॥५०२॥

"दातण सारिइ 'ऊग्यू सूर, आविउ ठूठ म करउ असूर।"
बोडू आपी बोलइ बोल, "राउत ' रखे करउ 'विगोल ॥' ५०३॥

---

१ हुयाई' म २ काटे कीनइ सजनी खुट' मा ३ पेसा-वचन मा
४ 'वहु मा ५ इस्यु भलिइ ठूठु चडान' पा ६ ते श्रावमेन करइ
अपारि मा ७ 'समरइ ८ 'प्रति काम म

कामिणि [1]कपट न विमास्यू चीति, खेडू खडग विलायु भीति ।

[द्यूतस्थान प्रति गमन]

मारति टली ऊतारा-तणी भट चालिउ जूम्र [3]ठाणा भणी ॥५०४

ता जूमार बईठा जूवटइ, जा नगड भवर [4]कोइ ऊमटइ ।
ता लगइ कूडी काढइ मूठि [5]पड़िय-सिउ वोलाव्या ठूठि ॥५०५॥

तीणइ जाणिउ नवउ जूमार ठिगि सघने [6]जईं कीन जुहार ।
पड चापी बईठउ चउपट्ट, नही नर बीजा [7]मानि मरट्ट ॥५०६॥

तीणि थानकि सपराणा सही, एकइ पुहपि परीक्षा लही ।

[मूल-द्यूतचातुर्य परीक्षा]

माधउ यईनइ बोलउ हसिउ "मूदा [10]सूप पूछीइ किमिउ ?॥५०७॥

गउन[1]रमतउ म करिसि काणि हणि पडि जीपिसि मोडया प्राणि।
लाख लगइ हू पूरिस हेम, 'मोडि मरय मनि माणे एम ' ॥५०८॥

[प्रसिद्ध द्यूतकार उपस्थिति]

माविउ सूद्रक मकनिकुमार आविउ वीरभद्र भँडार ।
माविउ कामसेन नइ कालूउ म्राविउ [1] रिगवत रीमालूउ ॥५०९

माविउ वक्ट नइ माधनु आविउ गीमट नइ राघनु ।
इम जूटवइ जूमारी मिल्या, वीरइ वीर वर्द्धसना कल्या ॥५१०॥

---

१ 'कथन' थ २ 'चमकिउ' मा ३ 'वामा' मा ४ 'को न' मा ५ पुरुष एकमिउ ' म, 'वह मूटि' मा ६ विचि दीधउ ठाहार म ७ बुनि मा ८ सूप' मा ९ तिम माडे जिम चापइ तेम' मा १० 'रोगु' मा

[सदयवत्स द्यूतजय]

सदयवन्छ नइ सधतिकुमार [1]त्रि जण रूडा रमइ जुआर।
बावन वीर बहुत्तरि राण ऊपरि थ्या मड भागइ दाण ॥५११

हेमा माहि हराविउ राउ [2]जीतु सोवन लक्ष सवाउ।
तीणइ बीजा ऊपरि उद्रक, रमता थिउ साम्हउ सूद्रक ॥५१२॥

सूद्रक-सरसो समवडि जाइ बीरिद वीर न पाछउ थाइ।
बिहु जण जमलू दीसइ जयत सूदइ पोढू पाडिउ पहित ॥५१३॥

काल पास शिव जोगिणि जेउ जाणइ [3]जूअ-तणा मल भेउ।
ते नर हारी ऊठया माथि एक भणइ। "ठिग दू ठउ साथि"॥५१४

धन ऊसरडी ढिगलु करइ, थोडउ बईठउ खोनउ भरइ।
ऊठिउ कुमर ऊतारइ जाइ, धन वेचतउ कुणिइ न रहाइ॥५१५॥

[द्यूत द्रव्य दान]

मण मागता भोडावइ हाथ, सूदा-जम जाणइ जगनाथ।
[4]सूदउ सविहू आपइ जीप, जूअ रमिवानू एह जि धीप ॥५१६॥

[सार्वलिंगा अर्थे वस्त्राभरण विक्रय]

खउपट मल्ल घुरुटइ मचरइ, दोसी हट्ट दीठइ सभरइ।
[5]सार्वलिंगिनइ सरसा सार कुकुरइ नानाविध शृंगार ॥५१७॥

कस्तूरी केसर कप्पूर [6]धूप धूपणा अनइ सींदूर।
?ार सुगध वस्त [7]घणा लिद्ध ते वाधी दोसीनइ दिद्ध ॥५१८॥

---

१ ए बि' आ २ सूद्दर' म ३ 'जवटनु'आ ४ 'आव" सविहू कारणि जीप, कूडे रमतो पछइ केही कीप ?' आ ५ पहिरवा पवित्र, म २रि सुहुर्या वस्त्र विचित्र' म ६ 'घुति धूपणइ सरिस ? ७ बहु' आ

कामसेना घरि जरा जेतला, ते जोता होइड तेतला ।
ता अढलक [1]आवइ आफणी, अरणतेडिउ ऊनारा भणी ॥५१९॥

हमगमरिण नइ आपिउ हेम, माडइ लेखा अधिकू प्रेम ।
ताराइ [2]रङ-मनि फीटी रीस, एकदति तव दिइ आसीस ॥५२०॥

भोग भगति आवजिउ इसिउ, च्यारि राति राउत तिहा वसिउ ।
दिन पचमइ व्याहारा वार, हुई हयोआर-तणी [3]मनि सार ॥५२१॥

[म्यान मध्यगत अमूल्य कापली]

[4]असि कतारी जोइ जाम, अबला ओढरणी बलगी ताम ।
हेडउ झाटकता खडखडी, सूकी खोली आगलि पडी ॥५२२॥

खोलि माहि अमूलिक जिसिउ, तेह सरीखू [5]होइ किसिउ ? ।
सवा कोडी [6]तणी कापली, चद्रवदनि [7]देखीनइ चली ॥५२३॥

कामसेना [8]प्रभु लागी पागि, "स्वामी ! जि काइ जाणत मागि" ।
मनि आपणइ सुणी महाराजि, मलविइ आपी अबला काजि ॥५२४

[9]हुउ चतुर बोलिवा सचीत, तव जूय ठाणइ चमकिउ चीत ।
जा [10]आराधणा आरति हुइ, तिहा लगइ जई आविउ तोइ ॥५२५॥

[कामसेना कचुक परिधान]

कामसेनाइ पहिरी कापली, रगिइ राज-भुवनि [11]समचली ।
कीधउ साहतउ सिणगार, [12]उपरि एकाउलि मोती सार ॥५२६॥

---

१ ऊनारा भणी, अणतेडयु आविउ आपणी' आ २ 'हामइ आ ३ 'समाल आ ४ इसि' आ ५ 'ओढणि दीधी' आ ६ वेरी अ ७ 'तोणइ दाठइ आ ८ जई वनगी आ ९ हऊउ चतुर चालवा सचति, नव जू थाणइ गिउ मन-माति आ १० 'आरोगण' अ ११ 'छापरी' आ १२ 'उरि' अ

पात्र राउ ईसी पालखी, [1]साथिइ सपरदाउ नइ सखी ।
चतुरि चिहुदिसि घालइ द्रेठि, चहुटइ साम्हउ [2]मिलिउ सेठि ॥५२७

[श्रेष्ठीए कांचली जोई]

[3]सेठिइ सा बोलावी नारि, रगिइ जाती गज-दूमारि ।
रूडउ रतन जडित्त कचूउ, दखो नर निरखतउ हूउ ॥५२८॥

[चोरी मां गयेली कांचली ओळखी]

निरखी उलखीया अहिनाण [4]तु हूउ युगति विमासइ जाग ।
रा मंदिरि मानीतु पात्र, किम एहि सिउ [5]पडावइ खात्र ? ॥५२९

[महाजन श्रेष्ठी पास फरियाद]

पाच सात तेडी आवत, मनि आपणइ विमासिउ मत ।
नुहि एकला जि पुरुष प्रभाव [6]मिली महाजनि कीजइ राव ॥५३०॥

[महाजन श्रेष्ठी नाम]

तेडिउ तेजपाल [7]तारसी, तेडिउ [8]धाधउ नइ धारसी ।
वहिलउ धईनइ वीरम तेडि [9]जेसल नइ करणउ करि केडि ॥५३
[10] तेडिउ सतिग [11]सामल सार, आवड [12]वाहड अभयकुमार ।
पाल्हउ [13]पासनाग जसनाग, माहव मोकल नइ वरणाग ॥५३२
[14]धाईउ धीघु नइ जसराज, पेथु पूनुसाह महिराज ।
[15]हादु हरपति अनइ हरराज, हामु जागु नइ मकराज ॥५३३॥

---

१ 'आगइ लि' आ २ 'जोई बोलइ आ ३ 'चुहटइ' आ ४ 'एइ'प्राप
५ 'खरादू' म ६ 'मिल्या सामत आ ७ तेजसी प ८ धांणिग' आ
९ 'नही जुगति जे कीजइ नेडि' म १० सोलउ' प ११ ना
साहारा' [illegible] १२ 'भोमउ' म १३ पाछउ आसउ माल माणिग रहूउ
माइन साहास' आ १४ १५ 'आ सीटी [illegible] माँ नथी

[1]राजु भोजु नइ वलोकु जगु, नाइउ नौसल नरपति नगु ।
धरणिग धारण ताहरू काज, ऊठउ महाजन मिलीइ आज ॥५३४

[2]आसड पासड पूनसी सेठि, मिलिउ महाजन वडली-हेठि ।
चमक्या सवि चुरटानो वाट, हू हू [3]करी सभेरइ हाट ॥५३५॥

['हाट माहि पाडी हडताल']

[4]हाट माहिं पाडी हडताल, चाल्या [5]कामसेनाना काल ।
माथू धूणइ बुहरइ [6]माम, [7]गू गलि करी वीहावइ गाम ॥५३६॥

दनुसेठि मेलावउ करइ, [8]राउलि जई पोकारव करइ ।
[9]रायगणि जई ऊभा रहइ, [10]नामइ काध, नवि कारण कहइ ॥५३७

[राजसभा प्रवेश]

मान देई बोलिउ महाराज "मिलिउ महाजन केहा काज ?" ।

[श्रेष्ठी वचन]

तउ श्रीमुखि वोलाविउ सेठि, "तम्ह ऊपरि कुण [11]जोइ कुद्रेठि?" ५३८
"स्वामि ! कुद्रेठि न जोइ कोइ, अम्हे वाणीए न वसिवू होइ ।
जे जोईइ [11]निभय नइ काजि, वारी हुइ ते ताहरइ राजि॥" ५३९॥

[वणिग वचने आशंकित राजा]

सालिवाहन समस्या लहइ, नद-लोचनइ निश्चिइ वहइ ।
वीहता काई म [12]करिसिउ माम, निर्भय [13]थ्या भाखउ नर-नाम" ५४०

१ 'या लीटी' अ मा नथी २ या लीटो 'अ' मां नथी ३ 'करइ' अ
४ 'हाटि तदे' अ ५ 'सात मा ६ 'गूगरि' मा ७ 'हाहुलि साहुलि
त पोकरइ अ ८ 'राउ आगलि' मा ९ 'सिर नामइ' मा १० 'करइ'
मा ११ 'वारिनइ काजि पडइ देव ! ताहरइ' अ १२ बोलु मा
१३ मई हुवइ भाखउ नाम' मा

"नरवर ! नर तीह नाम न होइ [1]कपट कटा रहइ सहू कोइ।
[2]तेह-तणइ उर मंडण थपिय सरव समोपनइ तूं [3]निहि हृदिय॥ ५४१

[राजा शालिवाहन-वचन]

राइ मा घोनायी रमणि   यदि थांनना समोपी वचणि ? ।
पूछणा तणउ [4]पडूतर ताप   तू मूनी पान्या नही पाप ॥ '५४२॥

[कामसेना-वचन]

तीणि [5]वचनि चमरी तइ चिति, "स्वामी ! सांभलि अम्ह परतीति।
उत्तम मध्यम लांमा भला साथ चोर पहोइ केतला ? ॥५४३॥

आठ पुहुर एवि आवइ जाइ, भोला भूपति ! पूछइ कांइ ? ।
वाट, वृक्ष फल, नइनू नीर नयर-[6]सोहा मिणि तणू शरीर ॥५४४

[7]सतति सुपुरिस केरी दानि, स्वामी ! सविहू सरीसा मानि।'

[प्रप्रसन्न राजा]

तीणि वचनि रीझाव्यउ राउ, कामसेनाइ कीधउ सुपसाउ ॥५४५।
कहइ [8]बोलिइ नापइ राउ मारी छूटी पूछउ माइ ।

[चोरी नु माल]

राज-दूतइ रा मायस लही, गयगामिणी चोर जिम ग्रही ॥५४६॥
निवड वधि बांधी नइ नारि मारइ महिला विसमे मारि।
इम विनडी तो न कहइ वात, सूली तणी पूछमु हुई सात ॥५४७॥

---

१ 'कूडू कपट प्रा २ 'तहनु उरि ज मडण पछइ' प्रा ३ तै पछइ' प्रा ४ तू उत्तर' प्रा ५ 'वातइ सा चमकी चीति' प्रा ६ 'सालि' प्रा ७ 'सुपुरिस दाता घणा छइ प्र ८ 'पूछी कहइ प्रा

बाजि [1]वाहल लोक घणा मिल्या, एकदंति-नइ कहिवा चल्या ।

[एकत्रित गणिका-नाम]

एकदंति ऊठी उद्धसी, मिली [2]भेलि गणिका-नइ किसी ॥५४८॥

हीरू हासलदे [3]हरखली नारी, सीगालदे सोमलदे सवि वारि ।
काऊ करणू नइ काह्नलो, नागलदे नामलदे मनी ॥५४६॥

साऊ [4]महिजू नइ सहिवली, वाछू मीणलदे वरजली ।
[5]नागू नायकदे नागिणी माजू माह्लणि [6]नइ कमिणी ॥५५०

राजू रतना[7] रूपिणी, भाऊ भावलदे रसिमिणी ।
सुहडी घडी[8]विल[9]सिणी घणी [10]राज भुवनि आवी रणझूणी॥५५१

[गणिका-समुदाय राजसभा प्रवेश]

[10]रायनइ सवे दिइ आसीस, सु दरि [10]गाढउ ढाकिउ सीस ।
राज[11]राइ-परि सिउ रोस?,काममेनाइ कुण कीधउ दोस?॥५५२
मूली भणी चलावी स्वामि । ए आचार अछइ तम्ह गामि ।'

[राजा वचन]

राउ रीसाविउ बोलइ हसिउ 'का रे[12]राडु पूछउ किसिउ?॥५५३॥
सातउ चोर, नइ थाइ साध अनइ भली पूछउ अपराध ? ।
नयर-सेठि-वेरी साचली घर [13]फाडिउ घरवा रत [14]फली ॥५५४

---

१ 'सागि भा २ भेलि' भा ३ 'कामलि किमा, पेतू सौमिणी अ ल्हणि जिसी भ ४ मूलव' भ ५ नाकू' भा ६ 'कारेमिणी' भा ७ रूडामणि भा ८ रगिइ राज भुवनि मवि वनी भा ९ वूटी' भा १० माफइ माडइ भा ११ 'काय किस्यु ए' भा १२ 'काम कहिसउ भा १३ 'माटू' भा १४ 'वनो भा

परिलू गूली मानउ पात्र पदद [1]पूटू सघलू मात्र ।"

[गणिका मन भय-मचार]

इम्यू [1]मूणी सइ घमरी होई वेगा भणए "न ऊभा रहोइ ।।५५५

समको चोति, वसिउ सकेत 'ए ठूठउ हूउ भम्ह वेन ।
भागइ यादि यिगूती जाणि, ऊपरि मधिवी हाणि कवाणि" ।।५५६

एवदति बोलइ मातुली, 'काइ रे सवि मू-पाग्रलि मिली ? ।
रोता नयि छूटउ छोगरी जोउ चोर विहु चहुटइ फिरी ।।"५५७।।

[चोरनी शोधमां]

चउरासी चुहटा नइ ठाणि पुर पइठाण-तणइ महिठाणि ।
घरि चाचरि चुहटइ चउवटइ, इकि चाली जोवा जूवटइ ।।५५८।।

[द्यूत स्थाने सदयवत्स मिलाप]

जा जूवटइ बहु रमइ जूमार पाखलि प्रमदा मिली अपार ।
राउत'ताहरी रामति वालि ! ए कावला हुई भम्ह कालि'।।५६९।

चोर तणी परि बाधी वधि कामसेनि भाहणिवा कधि ।
सूली भणी चलावी सही !' सुणी मात न रहिउ सासही ।।५६०।।

[वताल श्रवणजन्य मापात]

किरि हाकी ऊठिउ हनुमत, किरि [3]कोपानलि चडिउ कृतत ।
चडवडि चुहटउ चालिउ ईम किरि आविउ भारथ गुरु भीम ।।५६१।।

सूली हेठि [4]दिट्ठ सा नारी, लाजिउ मनि आपणा मझारि ।
वाढथा [5]बध विछोडी वेस, "रे आव्या उत्तर हू देस" ।।५६२।।

---

१ 'सूघू' मा २ 'मणिइ' मा ३ 'कोपांजलि' मा
४ 'दीठी नारी' मा ५ 'बधन छोडो' मा ६ आवु धिवहू' मा

[तलार सहू मदयवत्स-युद्ध]

त सभलि [1]तव चडिउ तलार, बोनाव्या ग्रोलगू ग्रपार ।
घाटि धरीनइ वहु वाधिउ वधि [2]असि लोह सिउ ग्राहणु कधि ।५६३

चिहु दिसि चउरा पायक मिल्या, लउहड लाकड लेई वल्या ।
एक तणी ऊदाली डाग सूदइ सविहू भागा ग्राग ॥५६४॥

'हणि ! हणि !' भणी, लिद्ध हयीमार, हाकइ ताकइ[3] घाइ ग्रपार ।
जे सुभड भला ते पाखलि[4] फिरड, ग्राघउ[5] थईनइ घाउ न करइ ।५६५

हठि चडिउ तलार हाकलइ जे जीव राम्वी 'रहज्जो कलइ ।
फ्रूटि घरी मनाव्यउ भाक, कोटवाननू वाढथू नाक ॥५६६॥

"जा बापडा ! म बोलिसि वर्व, गाढा सविहू ऊतारू गर्व ।
मा ग्रोलगू जि विहू वलउ लहइ तिह मारता किम कर वहइ ? ॥५६७

मोकलि जे गाढा बलवत [6]मोकलि जे सूरा सामत ।
माकलि राउन रणि वाउला, मोकलिजे ग्रगि ऊतावला ' ।५६८॥

[तलार-विमासण]

वली तलारि विमासिउ इमिउ, 'छेदिइ नाकिइ [7]दूटीइ किसिउ ?
जउ नरवर थीनवीइ ग्राम, तउ मू ठाकुर[8]फेडमिइ ठाम ॥' ५६९॥

[राजा प्रति निवेदन]

जण मोकली जणाविउ [9]"स्वामी', [10]दस्य कि दाणव ग्राउ सग्रामि ।
कामसेना-ना वाढया वघ,ग्रम्ह-सिउ कीधी ग्रालि[11] 'मणघ' ॥५७०॥

---

१ 'तुहि' म २ 'लहय' मा ३ 'घीर मा ४ 'भमइ' मा
५ पई कोइ नवि माणमइ ' मा ६ 'म णि जे माउला मा ७ 'बीवइ'मा
८ 'फोडमि मा ९ राउ म १० दव' म ११ 'मनू ष' ष

[सार्वलिंगा प्राणत्याग निश्चय]

[1]गई समसानि सजाई करी, भाट-तणइ मनि पईठो [2]घरी ।
नीघु ऊचु चडइ अपार, करइ वेग नइ लाई वार ॥५९८॥

[सार्वलिंगा पतीम प्रार्थना]

देसी दिवस तणी [3]गति सोइण, करी सनान दान दिइ दीण ।
करइ साखि त्रिकम नइ तरणि,' जनमि जनमि [4]सूदा-पय शरणि ॥५९९

(दूहा सोरठो)

सूद ! तम्हारी साथ, यिउ आतरू [5]अति ऊरतउ ।
हिव जोसि जगनाथ, साहसि सामलिमा [6]धणी ! ॥६००॥

ऊनै अतरि एहि, तउ पहिलू पामिउ नही ।
वाहण [7]विहि-वसि होइ, न रहइ नीजामा पखइ ॥६०१॥

नीसरि सूदा साथि, जीव ! मा हारी प्रीय-पखइ ।
ते जाणइ जगनाथ, नाह- विछोइया माणसा ॥६०२॥

ऊभी मास करहि, अबला आहेडी तणी ।
दरि पईठउ वि मरेहि, केसरि नइ ए किम नीसरइ ? ॥६०३॥

नाह ! तम्हारा नेह, किम ओसीकल एक भवि ? ।
जइ दस वार हि देह, ए आपणउ ज होसोइ ! ॥६०४॥

माणिक मूठि [8]भरेही, पडइ तउ प्रापति न पामीइ ।
नाह [9]नावरइ देहि, दरसणि देखेवू यिउ ॥६०५॥

---

१ 'जइ' पा २ 'भरी' पा ३ 'दिसि' पा ४ 'पु सूदा-चरणि' पा ५ 'छइ अति घणू' पा ६ 'भणइ' प ६१० 'प' माँ टूक नथी ७ 'विचिविहि सेहि' प ८ 'जमहि प्रापति विण नइ पामीइ' पा ९ नावरे' प

पाना-नूवा एक, पीहरि मेल्ही [1]परणी नइ।
[2]माज [3]ऊनाट घनेकि, तिहनइ थाइ कल्पना ॥६०६।

मूवा [।] सउकि मु राम्व, मनि माहरइ काई नही।
महि समावड [4]नाम, कीधा माज मणोमरा ॥६०७॥

जिराणी काजि दीह, भावया भावेवा सणा ।
तिह लिखी सौं [5]लीह, करी [6]कुडेरू दामिसिइ' ॥६०८॥

(चउपई)

या सहम-[8]किरण नइ करइ प्रणाम, जा 'नारायण' मात्वइ नाम।
जा घसमसतउ [9]धायउ घोर, मागलि दीठउ माविउ [10]वीर ॥६०९॥

[मन्पवस्म पागमन-पान]

हुंउ हरिख गहगहीउ गाम, प्रदोजन [11]फौटउ प्रदनाम।
पानउ हू तउ पापणि मोम, ते मम्ह देविइ टालिउ दोस ॥६१०॥

गम-वन्न नइ[12] रूडा ठाम, माणी प्रवल समोप्या ताम।

[पतिशा-पालनाय पुनर्गमन]

रहिउ राति निज नारी ठाहि, चालिउ वली विहाणा माहि ॥६११॥

मूंध्या हाटि मधइ हथीमार, तिहि लेता [13]तउ लागइ वार।
माणी वारइ विणसइ काज, ते लेई मावउ छउ माज ॥६१२॥

---

१ 'परह मइ' पा २ जिह नइ माज घनेकि ऊचाटइ' प ३ 'साथ' प ४ 'साप पा ५ घणीमरा पा ६ 'कही' पा ७ 'कुमेइ पा ८ कर प ९ घाविउ' पा १० 'पाविउ वीर' पा ११ 'टलोउ प्रदनाम पा १२ मूरा पा १३ 'सवां मू पा

(गाहा)

पिय मिलणी कुल छलणी, अपजस-पडहो, वज्जसी नयरे।
सरसव-पमाण सुखं, दुख तह होइ मेरु-सारिच्छ ॥२०६॥

(चौपई)

मुद्र गारी वेस्या नइ तिणइ। पाछी फिर आई तिण खिणइ।
फिरतो बोल्यो सदयकुमार। हरखि निरखि ससनेही नारि॥२०७॥

[सदयवच्छ वाक्य]

(गाहा)

नयऽसत्ता ससीवयणी। हार आहार वाहणा नयणी।
जलचर मग्गा गमणी। सा सुंदरि कच्छ पामेसि? ॥२०८॥

(दूहा)

जाण्यो ए तो वल्लहो, जिणि सू कीधो बोल।
निरखि मुख कि कहइ मानतो, एक ज वयण अमोल ॥२०९

नगर मज्झे सालूर, सगति रूप पाडिया विंय।
[.... .] ॥२१०॥

[सावलिंगावचन]

(दूहा)

"देहड़ नगरी मही अछइ, जस सालूरड़ नाम।
सगति रूप देवी जिहा, तिहा पामिसि ते ठाम" ॥२११॥

सुणि वाणी हरखित थयो, करि सवत सुवस्थ।
वेन देई वेस्या तणो, आयो निज घरि जत्थ ॥२१२॥

मोरा जिम मेहां तणी, ईपइ वाट उच्छाह।
राह तिमइ जोवत रहइ, कदि आवइ दिन ताह॥२१३॥

७१ पवाडउ-(स) प्रवाद प्रशस्ति।

७१ पसाइ-प्रसादन। कृपा से। पहीस (स) पृथ्वीश।

७३ चाचरि स) चत्वर, अगन म । लुहुड (लहुड) पणा (स) लघुत्वेन छोटपण। अगो वरू अगोवरू । लिए वडी ८७।

७९ गुडीय व नर वालि (स वदनमाला) देखिये । मन्मासहृत मानमजरी। क्षुद्रावलि जनु मदनगृह बाधा वदनमाल । छोटी धजा और तोरण।

अगालि (स) अकाले।

८० वद्धावी (स)वर्धापन, (प्रा) वद्धावणी वधावा निमित्त । पडसद्द (स) प्रतिशब्द, पडघा।

८१ कइवार सत्कार।

८३ कराय (स) कनक सुवण। कच्छाहि केकाण-कच्छ देश के प्रसिद्ध अश्व।

८४ मुत्ताहल (स) मुक्ताफल, मोती।

८६ मुहुत्त। (स) महामात्र अथवा महत्तर स सबधित मुख्यमत्री। महूतक महेता, मुथा आदि अपभ्र श रूप प्राप्त है।

भूप जमलउ (स) यमल बराबरीके, एक जोडीके, एक सरीखे।

९१ रूसइ (स) रुष धातु रोष कर।

९२ मतिपयइपणु -(स) मत्री पद। इधर षष्ठीके हि्मीय प्रयुक्त है। 'ह (स्य) और पण (स त्वन पण)।

९३ पालो-एक नाप जिसम सात सेर कच्चा रहता है।

अरक-(स) अर्क-सूय।

९४ कालमुहुअ (स कालमुख)श्याम वर्ण ।

९६ ताग- मत।

१०० अहिठाणि- आ' प्रतिका पाठ अप्पाणि' विशेष युक्त है। स अधिष्ठान। उत्तम सवा।

१०३ सुरक सु रक सु मात पढिये। सुतरा रक अत्यत रक, ऐसा अर्थ

भी हो सकता है।

चिंतारयण-चिंतारत्न, चिंतामणि। जो चिंतन करे सो प्राप्त कराने वाला अमूल मणि। कित्तउ (स वियत्) कितना भी। बीय मयक(स) द्वितीया (बीज बीय) का मयक (स मृगाक), चद्र। शुक्ल द्वितीया की चन्द्रलेखा घडी भर के लिए दृश्यमान होती है।

१०६ धमी धमाविउ धमीधमाविउ (एक शब्द) धमधमाया।
सदस्यवत्स सदयवत्स पढिये।

१०७ ऊलग सेवा।
जुहार जयकार, जयहार जउहार, जुहार, प्रणाम।

१०८ रउद्द रौद्र रुद्र स्वरूप भयकर।
हास मिसिइ (स हास्यमिषेण) हास्य का निमित्त बनाकर।

१०९ नीच-नीचु। दृष्टात अलकार। निठाडइ निद्धाडइ। तिरस्कार करके निकाल देना।

११० जीहा (स जिह्वा) 'जीहा' पढिये।

१११ भमहि-भ्रू भकुटि।
अचरिज (स आश्चर्य प्रा अच्छरिय)।

११३ ऊहटइ-(स) अवघटयति।

११४ ताजणउ (स तर्जनकम) चाबुक।

११७ राउल-(स राजकुल) राजका निवास स्थान।
रान-(स) अरण्य (प्रा रण्ण, जू गु रान) जगल।

११८ दूसरी प क्ति सुभाषित के रूप म प्रसिद्ध है।
सबल-(स शम्बल) भाथु (स भक्तोदेनम्)। भत्था।

११९ प्रणीमू-प्रणामू पढिये।

१२२ मइमारिउ- मइ मारिउ। पढिये।
छरइ धरइ पढिये। सयल-सकल।

१२३ आयस-(स आदेश) आज्ञा।

ताडोक–'ताडक' पढिये।

१६१ **मयरकेत** (स मकरकेतु) कामदेव।

१६२ **खड** 'खड' पढिये।

१६६ **'उदउ' भणइ**– उदय हुआ ऐसी आशीष भणती जोगिणी दाहिनी जाती हैं।

१६९ **डाउ** 'डाबउ (बाम बाजु) पढिये।

१७५ **देवा** देवो।

१७६ **सबिहूगमइ** सविहू गमइ।

१७६ **सुर-**(स सूय) 'सूर' पढिये।

१८८ **पलीय**-'पलीय पढिये।

१८९ **बिलकिलिउ**-'याकुलीउ व्याकुल हुआ।

१९१ **नस मास** 'नस मास' पढियें।

१९४ **अहिठाण**-अधिष्ठान। **पहिठाण** प्रतिष्ठानपुर।

१९५ **पवरिस** पौरुष।

१९७ **कउडी** (स कर्पादिका प्रा) कवड्डिया कउडा। कौडी। द्यूत खेलन मे इसका उपयोग हाना है।

१९८ **भव भगति**-सारा आयुष्य भरकी की हुई भक्ति। **हेला** रमत मात्र म।

२०१ **पचार** उपचार अथ म समझना चाहिए।

२०३ **उलगि** 'उलगि सु' पढ़िये। उलगि स्यू सेवा करूगी।

२०५ **ऊखाणउ** (स आभाणक, प्रा आहाणउ) उपाख्यान, लोकोक्ति। देखिये कडी ३४६।

२०६ **रण्ण-**(स अरण्य)। देखिये 'रान' कडी ११७।

२०९ **सुरहा** सुरहि (स सुरभि) सुगधा।

२१२ **घुलव** 'फुलब' पढ़िये। **नागवेलि**-नागवेलि।

२१४ **बकडीमाफुलीय पयडोय पलास**-समान भाव के लिये देखो बसन्त विलास', लिपिसवत १५१२ का दूहा।

केसू कली अति वांकुडी आकुडी मयण की जाणि ।
विरही ना इणि कालि कालिज काढइ ताणि ॥'
तिवास तिवास पढिये ।
२१६ कवक 'वक्क' पाठ होना चाहिये ।
२१९ धजवड (स ध्वजपट) । पढिग्रार-(स प्रतिहार) मंदिर के प्रतिहार के रूप मे स्थित ।
२२३ सूदा पाहि- सूदा पाहि पढिये ।
१३२ ग्रालवइ (स आल्पति) आलाप करती है।
२३१ पागति (स पंक्ति) ।
२३६ साइ (स स्वामी) स्वामीने सावलिगीरी सावि लीनावनीको ली
२४२ जुहार (स जयकार) जय बोलने के बाद प्रणाम ।
२४३ पुहर प थ एक प्रहरमे पहुच सके इतना दूर । अति दूर नहि ।
२४४ घूग्रा (स दुहिता का यं प्राकृत रूप है) पुत्री ।
वघू वधू पढिये ।
२४६ ग्रवढडी (स अवधि) ।
२४९ माउलउ-(स मातृकुल प्रसिद्ध)।
२५४ परतु-(स प्रतीत) सच्चाई का अनुभव ।
२५९ गुज्भ (स, गुह्य) छुपाने लायक कोई बात ।
२६० सउकि (स सपत्नी) ।
२६६ लीली गई लालागई' पढ़िये ।
२७३ सपराणी (स सप्राणा) चेतनवती उत्तम श्रेष्ठ ।
२७८ जमहर (स यमगृह या जमहर) राजपूत इतिहास मे शत्रु का विजय देख के राजकुल की महिलायें सभार करतीं थीं। यें अग्निकुंड मे भस्मीभूत होती थीं । यमगृह प्रवेश अथवा आत्मघात का अर्थ म प्रयुक्त है ।
२८६ धीद्राता (स धीद् धातु) तृप्ति होना सुख पाते हुए ।
२८७ गांगेय भाष्य । माणि अभिमान रखने म । कविका महाभारत

के पात्रो का अच्छा परिचय इस प्रशंसि से प्रतीत होता हैं।

२९१ वड वाहमि वड (स देश) वाहक ने वद्धापनिका दी।
बद्धामणी (स वर्धापनिका) अभिनन्दन।

२९३ सौंडिइ-'सोंमिइ (सोमाडें में) पाठ ठीक रहेगा।

२९९ पाथरउ-(स प्रास्तरक) रास्ते मे पाउ से चलने वाला मामूली आदमी।

३०० बारहट्ट-(स द्वारभट्ट, प्रा मे बारहट्ट) का लोकभाषा मे 'बारोट' नामसे प्रसिद्ध है।

३०१ मेलउ- 'मेलउ पढिये। मिलाप कराया। हर हेत हर (ईश) के कारण से।

३०६ प गुरण (स प्रावरण) उत्तरीय वस्त्र।

३०८ मउडबद्ध (स मुकुटबद्धक, प्रा मउड गु माड)। मुकुट को धारण करने वाले। 'मुड्मा शब्द इससे आया हुआ मालूम होता है।

३०९ सेणाहिव-(स सेनाधिप)।

३१० वेयभ्रूणि-(स ध्वनि, प्रा झूणि) वेद का घोष।

३१२ उपान्त्य प क्ति को सुधार के पढिये -'आगइ कामुकीय कामिनी अनइ वस तनिसि ऊजली।'

३१४ रलीयाइति-('रली आनन्द के अर्थ मे) आनन्दित।

३१८ खेवि-(स क्षेप) वेग मे जो चडते है। सालिहु त (स शालि होत्र) अश्वशास्त्री। लक्षणा से सब शुभ लक्षणोपेत अश्व का बोध होता हैं।

३१९ पात्र नत की। इस शब्द अपभ्र श के रूपमे पातर अर्थात सामा-न्य गणिका का अर्थ मे होजाता है। नृत्य शास्त्र का स पूर्ण अभ्यास के बाद नर्तकी को पात्र' पद प्राप्त होता है। देखिये समस्ताभ्यास-स युक्ता, नर्तकी पात्र मुच्यते'। सुधाकलशविर-चित 'स गीत सारोद्धार' मे।

३२५ अहिणवउ (स अभिनव) नवीन।
डेपि भरन्ती कुमार के दोनो हाथो मे सम्बन्धी जन मांगलिक पदार्थ भरते है

३३३ पहु जाउ (प्रभुवत्स–जात) प्रभुवत्स का पुत्र।

३३६ कईवार– (स) कवित्व उच्चार।

३४० बोलाविउ बहुनेवो (स भगिनीपति, प्रा वहिणी+वइ) बहनोई।

३४० छ दरशन-जीव जगत और ईश्वर सम्बन्धी चिंतनका छ प्रमुख भाग को 'दर्शन' कहते हैं।
सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय पूर्वमीमांसा अथवा धर्ममीमांसा, और उत्तरमीमांसा अथवा ब्रह्ममीमांसा याने वेदान्त। दूसरी गिनती मे बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन को भी शामिल किया है और लोग चार्वाकमत को भी शामिल करते हैं।

३५४ देसाउर (स अपर देश) परदेश।

३५९ सुपुरुष और नृसिंह (नरसिंह) नामसे सयर (स्वैरे) स्वतंत्र है।

३६३ धसाहस धसाधस पढिये।

३६५ साविज (स श्वापद, हिंसक पशु पक्षी के अर्थ मे)। इसका प्रयोग देशी भाषाओ मे उपलब्ध होता है। स स+बाज (पाज ?) से व्युत्पन्न होना सम्भव है। देखिये, भालणकृत 'कादम्बरी, पूर्व भाग 'शुक सारिका साविज माँहि, बोलि पटु प्रकाश।

३७३ पडमाँहि (स द्यूतपट) चौपट की बाजी।

३८७ धावलहर 'धवलहर' पढिये। (स धवलगृह, प्रा धवल हर) सुधाधवलित गृह।

३९१ लच्छि (स लक्ष्मी), देखिये गुजराती गोरीगत मे लक्ष्मीवत के पुत्र का उल्लेख 'ओ लाछाबु वर'। देखिये कडी ४०२।

३९७ आवजन अनुकूल करने के लिए उपचार।

४०२ दोसी (स दौशिक) कापड के व्यापारी।
४०३ माम ममत्व (प्रतिष्ठा) का अभिमान।
४०४ नातरू (स नातकम ? नातेय ?) स्नेह सम्बंध ।
४१२ दव-'देव पढ़िये।
४१३ फलास कैलास पढ़िये ।
४१८ ढोणा ढोईइ (स ढौकनानि) 'भेटणां -उपहार अर्पण कीजिये'
४२० मुडधा (स, मुकुटधारी प्रा मउडधा मुडुधा) देखिये 'कान्हडदे प्रबंध मे खंड २ कडी ६९ ।
४२६ मुन पकखेसि 'मु न पक्खेसि' पढ़िये । मुझे नहि देखेगा ।
४३२ सपराणी (स प्राण) प्राणवान सत्य तका अर्थ म 'सविहु सपराणी' वाक्य खंड मे 'श्रेष्ठ' ऐसा अर्थ ध्व नित होता है ।
४३६ पढम-(स प्रथमम अपभ्रंश, पढम) पहिला ।
सरड,-(स सरट) काकीडा ।
४३७ असुउणि-(स अशकुन,अपशकुन) अपशकुनकी वेला मे ।
४३३ ऊहडोनइ (स उदधत्य)।
४४६ रढिल अति आग्रही । डोह दोहन ।
४४७-४८ छोह-क्षोभ । वाउ वात ।
४५२ आरीसउ (स आदर्श, प्रा आयरिसउ) दर्पण ।
एकदंती एक दंत अवशिष्ट रहा है ऐसी परमवृद्धा गणिकाकी माता ।
४६० संपरदाउ-सम्प्रदाय ।
मत्तवारणउ झरूखा मे । मूधा मुग्धा । दीति देदिप्यमान ।
४६१ सधुडिउगीत ध्रुवा सहित गीतम् ।
४६५ पात्र-देखिये कडी ३१९ ।
४६९ गुर्जरधरा का उल्लेख कवि-परिचयका सूचक हो सकता है।
४७४ हलूई-(स लघुक, प्रा लहुआ) हलकी, मानभंग ।
देखिये 'सुदामासार' काव्य मे । "याचता जे निमुख जाइ,

पृग-न्त है हूद्र ब॰ ।'

४७१ गथात विवान का अनुशन्धन के लि ए लिए 'मध्यकाल काम क हया प्रबध , भ ९, पृ २४ १०४।

४८१ गुरहुँ (स गुरुभिः सह प्रा गुर्रि आ) गुरु की गुरु गरूम ।

४८६ घरोध (स अन्य, प्रा अवन्ध) ।

४९१ धरा निश म लिए देखिए मायर.११ कायकल्पना प्रब ध' भाग ७, पृ २४३ ३८९ ।

४९५ साद (स मया) आलिङ्गन शब्द की लालच ।

५०० घावणु (स श्लाघीन, आग्नत आना।

५०१ घावरलइ " लिए-कही १०७ । अनुकूल बन गी है ।
जूमई (प्रा जुप अय) भिन्न, पृथक ।

५०२ घायस (स आदश) आज्ञा ।

५०३ मघूर (स उन्नयन सूय को अवगमन होने के बा । विमव न करा

५०७ सघरात्रा " लिए कही ४३२ ।

५१४ घापि-(स अथ) अप ग, इस ग हार कर उठ गया ।

५१९ घापणी-(प्रा अणणीमम्) स्वय ,ग ही ।

५२४ मलविह (स असेन आमासग) सदृश ।

५२९ महिलाग (स अभिमान, प्रा अहिमाण) निगाली लगाली परिचय ।
साम्र (स गम् धातुसे शब्द बनता है) ।
दिवार म सूने स प्रवेश होकर बोध गम्य होता है ।

५३५ सम्हेरइ-(स स हरण) माल का स कलन करता है ।

५३६ हडताल (स हट्ट+ताल) हाट पर ताला लगाकर ब द कर देना ।

५४० न दलोफनइ-चणिका को 'न द' शर्म दिया जाता है । इससे न द शब्द से मश्र का बोध होता है । गुजराती में मुहावरा है

'नंदना फद गोविंद जाणे'।

५४३ लाभा-अनिष्ठ।

५४७ पूछम- ?। विनडी विडम्बित की। सात-मुख।

५५० कमिणी 'कामिणी' पढ़िये। अर्थ स्पष्ट नहीं है।

५५४ सातो-साचो। सच्चा पक्का, चोर।

५५६ केत-(स केतु) केतु प्रतिकूल ग्रहका नाम प्रसिद्ध है।

५६१ तलार (स तलारक्ष) नगर तलकी रक्षा करने वाला। भाषा म तलाटी शब्द में बोला जाता है।

मोलगु-सेवक

५६८ मोकलि जे 'मोकलिज पढ़िये'।

५६९ फेडेसिइ-त्याग करायेगा।

५७९ अर्थांतर न्यास। सुभाषित रूप म।

५८१-५८३-वणिक श्लाघा।

ऊडइ-(स उद्वहनि)।

५८५ कदल-कलह।

५८७ परीछयउ (स पृष्ठम्) पूछताछ की।

५९४-९५ परसनउ-परकीय परका। पीहर का वास पर घर का वास कैसे कहा जा सकता है?।

५९९ तरणि-सूय। त्रिक्रम-(स त्रिक्रम) तीन डग में स्वर्ग मृत्यु पाताल म व्याप्त होनेवाला विष्णु।

६०१ वाहण-वहाण यान-पात्र। नीजामा (स निर्यामक,प्रा निज्जामय) कर्णधार, खेवटिया।

६०६ उचापला व्याकुलता।

६०७ अणोसरा (स अनाश्रया) आश्रय रहित की।

६१० मापणि-न्यास। मोस-मृषा, मिथ्या।

६१३ मांटी-पुरुष, शूर पराक्रमशील मनुष्य।

उसरामण कीधउ (स उत्सर्जन) मुक्त किया।

तृण-ग्इ ते हलूउ थाइ।'

४७९ समान विचार का अनुसंधान के लिए देखिये 'माधवानल काम कंदला प्रबंध।' अंग ६, दूहा ५४-१०४।

४८१ सुरहां (सं सुरभिवानि प्रा सुरहिआ) सुगंधी सुवासयुक्त।

४८६ अनोंय (सं अन्यत्र, प्रा अन्नत्थ)।

४९१ वेश्या निंदा के लिए देखिए माधवानल कामकंदला प्रबंध' अङ्ग ७, दूहा २४३ २४६।

४९५ लाच (सं लचा) अनधिकृत द्रव्य की लालच।

५०० आपणपू (सं आत्मीय, आत्मान अपना।

५०१ आधरजइ देखिए-कडी ३९७। अनुकूल बनाती है।
जूजई (प्रा जुअ जुय) भिन्न, पृथक।

५०२ आयस (सं आदेश) आज्ञा।

५०३ अमूर (सं उत्सूय मृ' सूय को अस्तमान होने के बाद। विलंब न करा।

५०७ सवराणी देखिए कडी ४३२।

५१४ आथि-(सं अर्थ) अर्थ से, द्रव्य से हार कर उठ गया।

५१९ आफणी-(प्रा अप्पणीयम) स्वयं, खुद ही।

५२४ अलविइ (सं अल्पेन आयासेन) सहज।

५२९ अहिनाण (सं अभिज्ञान, प्रा अहिनाण) निशानी एधाणी परिचय।
खात्र (सं खन धातुसे शब्द बनता है)।
दिवार में खुदने से प्रवेश होकर चोरी कार्य होता है।

५३५ सभेरइ-(सं संहरण) माल का संकलन करता है।

५३६ हडताल-(सं हट्ट+ताल) हाट पर ताला लगाकर बन्द कर देना।

५४० नंदलोकनइ-वणिका को 'नंद' शब्द दिया जाता है। इससे नंद शब्द से वैश्य का बोध होता है। गुजराती में मुहावरा है

'नन्दना फद गोविंद जाणे'।

५४३ लाभा-वनिष्ठ।

५४७ पूछम- ?। विनडो विडम्बित की। सात-सुख।

५५० कमिणी 'कामिणी' पढ़िये। अर्थ स्पष्ट नहीं है।

५५४ सातो-साचो। सच्चा, पक्का, चोर।

५५६ फेल-(स धेनु) धेनु प्रतिकूल ग्रहका नाम प्रसिद्ध है।

५६१ तलार (स तलारक्ष) नगर तलकी रक्षा करने वाला। भाषा में तलाटी शब्द में बोला जाता है।
ओलगु-सेवक

५६८ मोकलि जे मोकल्जिं पढ़िये।

५६९ फेडेसिइ-त्याग करायेगा।

५७९ अर्थांतर न्यास। सुभाषित रूप में।

५८१-५८३-वणिक श्लाघा।
ऊडइ-(स उद्वहति)।

५८५ कवल-कलह।

५८७ परीछयउ (स पृष्ठम्) पूछताछ की।

५९४-९५ परतनउ-परकीय परका। पीहर का वास पर घर का वास कैसे कहा जा सकता है?।

५९९ तरणि-सूर्य। त्रिक्रम-(स त्रिक्रम) तीन डग में स्वर्ग मृत्यु पाताल में व्याप्त होनेवाला विष्णु।

६०१ वाहण-वहाण यान-पात्र। नोजामा (स निर्यामक,प्रा निज्जामय) कर्णधार, केवटिया।

६०६ उर्पापला व्याकुलता।

६०७ अणोसरा (स अनाश्रया) आश्रय रहित की।

६१० थापणि-न्यास। मोस-मृषा, मिथ्या।

६१३ मांटी-पुरुष, शूर पराक्रमशील मनुष्य।
उसरावण कीयउ (स उत्सर्गन) मुक्त किया।

६१४ पण महत्त पण, प्रतिज्ञा का महत्त्व।
६१६ कसो-(स कष धातु) कष, कसौटी करके।
६१८ तलवार की उपर नाम मुद्रा अ कित करने की रूढ़ि प्रतीत होती ह।
६१९-प्रायोवइ -स्वयमेव।
६२१ अर्थांतर याय। सुभाषित।
६२३ सु डाहलि (स सु डाफल्क)।
६२६ सह हथि (स्वय हस्तेन) खुद अपने हाथ से।
६२८ सौज य-सूचक सुभाषित।
६३२ भडिवाउ-(स भटवाद) अपने को शू र मानने का अभिमा।
६३४ सेलहत-(स शेल्ल हस्त यस्य,प्रा सलहत्थ) गुजरातके वेडावाल ब्राह्मणों मे 'शेलत' की अवट क प्रसिद्ध हैं।
६३५ कीधारेवणी (स रेव् धातु) पलायन कर दिया।
६४० साध स धि पढिये।
६५४ उलवण (स उल्लपन) आलाप स लाप।
६६७ आण -(स आनयनम)।
परिग्रह (स परिग्रह, प्रा परिग्गह) परिवार।
६८३ उदाहरण दृष्टांत। पुरावा। गवाहि।
६८५ सोधइ-'सोचइ' पढिये।
आदीसर-(आदीश्वर) जैनो के प्रथम तीर्थङ्कर आदिनाथ ऋषभदेव।
७०४ पुरिसत्तण (स पुरुषत्व) पौरुष, पराक्रम।
७०६ प्रास-भूमि का जो खड दान म दिया जाता है। 'प्रास पाने वाला 'प्रासिया' कहलाता है।
७१० साय समाहरण-साधन सामग्री।
७११ वन्न अठार-चार प्रमुख वण ब्राह्मण, क्षत्रीय, वश्य, और शूद्र। नव नारु', और 'प च कारु' कारीगर वग, समेत अठ्ठारह वर्ण कहलाती है।

७२० बजा वार तउ भोजन कह–इस प्रकार का प्रतिज्ञा ग्रहण
'कान्हडदे प्रबन्ध' मे पाया जाता है। देखिये खंड १, कडी १८०

७२३ पीयाणे (स प्रयाण)।
७२६ करह–(स करभ) ऊट।

पृष्ठ १०४ पंक्ति ४। 'प्रमेमोऽ्य 'प्रमोदाय' पढिये।
१०५ कडी ७। चग 'वग' पढिये।
१०६ कडी १३। मयाल (स मृदु प्रा मउ) मायालु।
कडी १६। पुष्पद स 'पुष्पदंत' पढिये।
११० कडी ४७। शत्रुकार-(स सत्रागार) सत्रकार पढिये।
१११ कडी ५६। घाडा 'घोडा' पढिये।
११८ कडी ७२। तेणि प्रवस 'तेणि अवसरि' पढिये।
खेडी देवति-'क्षेत्र देवता।'
१३५ कडी ६। धार 'धरि' पढिये।
१३७ कडी २३। सुना 'सुता' पढिये।
१८५ कडी सख्या ४५५, ४५८, ४५९, को अक सुधार के पढिये।

पूर्ति-प्रस्तावना पृष्ठ 'औ'

'पद्मावत' में सदयवत्स कथा का उल्लेख

अब जौ सूर गगन चढ़ि धावहु ।
राहु होहु तौ ससि कह पावहु ॥
विक्रम धसा पेम के बारा ।
सपनावती कह गएउ पतारा ॥
सदयवच्छ मुगुधावति लागी ।
कंचनपुर होइगा बैरागी ॥
राजकुंवर कंचनपुर गएऊ ।
मिरगावति कह जोगी भएऊ
साधाकुंवर मनोहर जोगू ।
मधुमालति कह कीन्ह वियोगू ॥
प्रभावति कह सरसुर साधा ।
उखा लागि अनिरुधबर बांधा ॥
हौ रानी पदुमावति, सात सरग पर बास ।
हाथ चढ़ौ सो तेहिके, प्रथम जो आपुहि नास ॥

—पदमावती, दो० २३३ १७

समाप्त